Table of Contents

प्रस्तावना
प्रस्तावना
अध्याय 1
अध्याय दो
अध्याय 3
अध्याय 4
अध्याय 5
अध्याय 6
अध्याय 7
अध्याय 8
अध्याय 9
अध्याय 10
अध्याय 11
एंडनोट्स
कॉपीराइट

GUJARAT FILES

ANATOMY OF A COVER UP

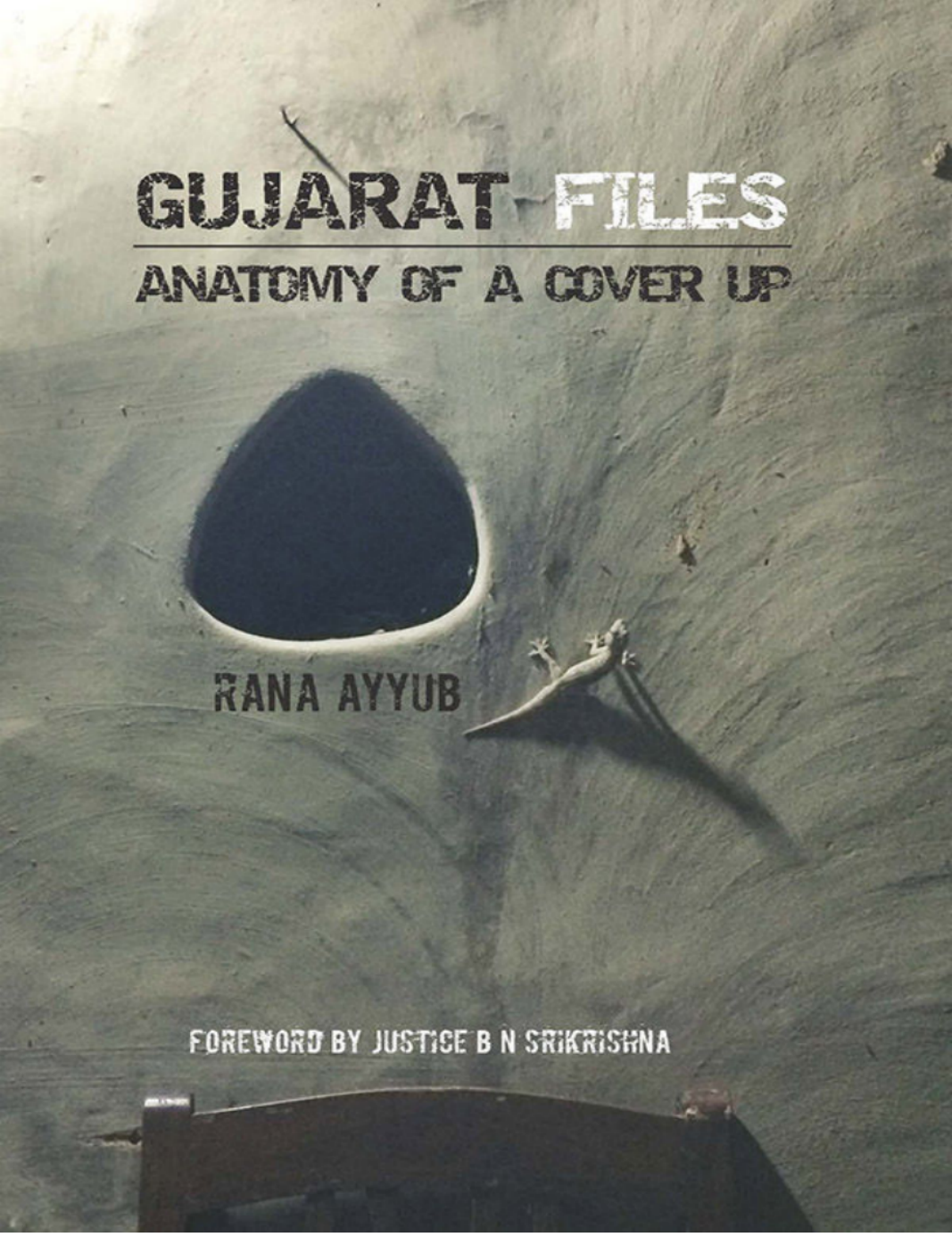

RANA AYYUB

FOREWORD BY JUSTICE B N SRIKRISHNA

Table of Contents

शीर्षक पेज
समर्पण
प्रस्तावना
प्रस्तावना
अध्याय 1
अध्याय दो
अध्याय 3
अध्याय 4
अध्याय 5
अध्याय 6
अध्याय 7
अध्याय 8
अध्याय 9
अध्याय 10
अध्याय 11
एंडनोट्स
कॉपीराइट

GUJARAT FILES

ANATOMY OF A COVER UP

RANA AYYUB

मुकुल सिन्हा और शाहिद आज़मी को समर्पित, जिन्होंने मुझे लड़ने का मकसद दिया। अब्बा और अम्मी के लिए।

अंतर्वस्तु

शीर्षक पेज
समर्पण
प्रस्तावना
प्रस्तावना
अध्याय 1
अध्याय दो
अध्याय 3
अध्याय 4
अध्याय 5
अध्याय 6
अध्याय 7
अध्याय 8
अध्याय 9
अध्याय 10
अध्याय 11
एंडनोट्स
कॉपीराइट

उनका चेहरा एक सुनहरे पात्र में सत्य से ढका हुआ था। सत्य का पोषण करते हुए, सत्य और धर्म के लिए इसे प्रकट करो।

(सत्य का चेहरा स्वर्णपात्र से ढका हुआ है; हे पूषन, सत्य धर्म के दर्शन के लिए इसे हटा दो) - ईशावास्योपनिषद

मार्क ट्वेन ने बड़ी चतुराई से कहा था, 'सत्य कल्पना से भी विचित्र होता है, क्योंकि कल्पना संभावनाओं तक ही सीमित रहती है; सत्य ऐसा नहीं है।' लेकिन सत्य का स्वरूप सदियों से दुनिया भर के दार्शनिकों को उलझन में डालता रहा है। पवित्र ग्रेल की तरह, इसे अलग-अलग समय और ग्रंथों में अलग-अलग व्यक्तियों द्वारा अलग-अलग रूप में देखा जाता है। सत्य की खोज में एकाग्रचित्त होकर चलने वाले लोगों को अनिवार्य रूप से कठिनाइयों और मुसीबतों से भरे अकेले रास्ते पर चलना पड़ता है, जहाँ उन्हें अपने अंतरात्मा के अलावा किसी और से मदद की उम्मीद नहीं होती।

2002 में गुजरात में घटी भयावह घटनाओं और फर्जी मुठभेड़ों की गाथा का यह संस्करण बेहद दिलचस्प है। लेखक के अनुसार, यह पुस्तक पाठक को जासूसी कैमरे और जासूसी माइक्रोफोन के लेंस से प्राप्त जानकारी प्रदान करती है, जिनका उपयोग एक लंबे समय तक चलने वाले गुप्त ऑपरेशन में किया गया था। इस पुस्तक में प्रस्तुत सामग्री तथ्यों को दर्शाती है या घटनाओं का मात्र एक परिप्रेक्ष्य है, इसका निर्णय पाठक को करना है।

उद्धृत संवादों से युक्त यह वृत्तांत रोचक है। विधि के शासन को लागू करने वाले राज्य तंत्र और इसके प्रहरी के रूप में कार्य करने वाली संवैधानिक व्यवस्था का यह कर्तव्य है कि वे यहां वर्णित तथ्यों की सत्यता का निष्पक्ष मूल्यांकन करें और इस देश के नागरिकों का विधि के शासन में विश्वास बहाल करने के लिए आवश्यक कार्रवाई करें।

दिसंबर 1992-जनवरी 1993 के दौरान मुंबई में हुए दंगों और हिंसक घटनाओं की जांच के लिए गठित जांच आयोग से प्राप्त दर्दनाक अनुभव और ऐसे दंगों के पीड़ितों के प्रति स्पष्ट रूप से दिखाई देने वाली उदासीनता को देखते हुए, यह महसूस होता है कि अब समय आ गया है कि राज्य तंत्र और संवैधानिक पदाधिकारी ऐसे दंगों के कारणों की जांच में अधिक गंभीरता दिखाएं और उनकी पुनरावृत्ति को रोकने के लिए उचित कदम उठाएं।

भले ही इस पुस्तक में वर्णित हर बात की पुष्टि करना संभव न हो, लेकिन सत्य को उजागर करने के उनके प्रयासों में लेखिका द्वारा प्रदर्शित साहस और जुनून की सराहना किए बिना नहीं रहा जा सकता। खोजी पत्रकारिता के इस साहसिक प्रयास के लिए उन्हें हार्दिक बधाई, जिसकी आवश्यकता बढ़ती बेईमानी, छल-कपट और राजनीतिक षड्यंत्रों के साथ बढ़ती जा रही है।

मुंबई, 11 अप्रैल 2016

बी.एन.श्रीकृष्ण

सत्ता के विरुद्ध मनुष्य का संघर्ष, विस्मृति के विरुद्ध स्मृति का संघर्ष है।

— मिलान कुंडेरा

एक दर्दनाक याद जो मेरे जीवन का अभिन्न अंग बनी हुई है, वह 2007 में एक समाचार चैनल के लिए रिपोर्टिंग करने से संबंधित है। यह घटना एक नगर निगम अस्पताल में भर्ती तीन साल की बच्ची के साथ हुए बलात्कार से जुड़ी है। उसके माता-पिता, जो एक ट्रैफिक सिग्नल पर नकली किताबें बेचते थे, नशे में लग रहे थे और इसलिए अपनी पांच बेटियों में से एक की पीड़ा और दुख से अनजान थे। बच्ची का चेहरा और शरीर बुरी तरह से चोटिल था, उस नन्ही, मासूम काया पर क्रूरता के निशान साफ दिख रहे थे। दिल्ली स्टूडियो को खबर की टेप भेजने के बाद मैं रात के दो बजे घर पहुंची। मुझे याद है कि मैंने आधी रात को जांच अधिकारी को लगातार संदेश भेजकर पूछा कि क्या अपराधी पकड़ा गया है। अगले दिन मैं बच्ची के ठीक होने की जांच करने अस्पताल पहुंची। उसे कई संक्रमण हो गए थे, मक्खियां उसके घावों पर मंडरा रही थीं और सुइयां उसकी नन्ही कलाइयों में चुभी हुई थीं। उसके माता-पिता अभी भी नजर नहीं आ रहे थे। जब मैं अपने कार्यालय पहुंची तो मैंने अपने बॉस से आग्रह किया कि वे इस मामले को गंभीरता से लें ताकि अपराधी पकड़ा जाए और उसे न्याय के कटघरे में लाया जाए। वह बस मुस्कुराए और अपने लैपटॉप को देखते रहे। बहुत तेज बारिश हो रही थी और मेरे बॉस ने मुझसे कहा कि मैं मिलान सबवे और बारिश पर ध्यान केंद्रित करूं और बाढ़ की कुछ अच्छी तस्वीरें लूं।

मुंबई में मानसून के मौसम में कैमरामैनों के बीच लोकप्रिय मिलान सबवे जाते समय मैंने अपनी माँ को फोन किया और चिल्लाकर कहा, 'मैं यह नहीं कर सकती।' मेरा दिल ज़ोर से धड़क रहा था, मैंने पूरे दिन कुछ खाया नहीं था। घटना के तीसरे दिन मेरे पारिवारिक डॉक्टर को मुझे बेहोश करने की दवा देनी पड़ी। मैंने अपने संपादक को फोन करके एक हफ्ते की छुट्टी लेने का सुझाव दिया। उस छोटी बच्ची की कहानी से ठीक पहले मैं स्टूडेंट्स इस्लामिक मूवमेंट ऑफ इंडिया (SIMI) की जांच पर काम कर रही थी और पत्रकारिता में नैतिकता और सदाचार को लेकर उनसे मेरी काफी बहस हुई थी। उन्होंने मेरी बात ध्यान से सुनी और फिर कुछ ऐसा कहा जो मेरे मन में हमेशा के लिए बस गया।

एक अच्छे पत्रकार को किसी भी खबर से खुद को अलग रखने की कला सीखनी चाहिए और व्यावहारिक होना चाहिए। आज तक मुझे इस कला में महारत हासिल न कर पाने का अफसोस है। खासकर इसलिए क्योंकि अक्सर कॉरपोरेट और राजनीतिक शक्तियों के इशारे पर किसी खबर को दबाने के लिए इसका बहाना बनाया जाता है।

2010 की गर्मियों ने मेरे लिए पत्रकारिता की परिभाषा ही बदल दी। मैं खुद को एक मेहनती, औसत दर्जे का पत्रकार मानता था, जिसके पिता एक पुराने ख्यालों के पत्रकार थे और उन्होंने मुझे कुछ आदर्श सिखाए थे। लेकिन उस समय मैं एक ऐसे मोड़ पर खड़ा था, जहाँ मैं दुआ करता हूँ कि कोई भी पत्रकार कभी न पहुँचे।

2010 में किसी समय लंबी चिकित्सा छुट्टी के बाद मैंने तहलका में काम फिर से शुरू किया था। शहर भर के डॉक्टर मेरी बीमारी का निदान नहीं कर पाए थे। मैं हाल ही में नक्सल प्रभावित गढ़चिरोली में एक असाइनमेंट से लौटा था। यह कहानी मेरे जीवन की सबसे भयावह घटनाओं में से एक से पहले की है। मेरे एक प्रिय मित्र शाहिद आज़मी की हत्या। आपराधिक कानून के क्षेत्र में उत्कृष्ट विद्वानों में से एक, आज़मी ने मेरे जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। उनकी मृत्यु की शाम, मुझे उनसे उन आदिवासियों और बुद्धिजीवियों के मामले पर चर्चा करने के लिए मिलना था, जिन्हें सत्ता प्रतिष्ठान द्वारा नक्सली करार दिया गया था और झूठे आरोपों में जेल की सलाखों के पीछे सड़ रहे थे।

लेकिन किस्मत को कुछ और ही मंजूर था। मेरी भतीजी के कहने पर मैं घर पर ही रुक गई। उसका सातवां जन्मदिन था। मेरे फोन पर दर्जनों मिस्ड कॉल थे, मैसेज थे जिनमें पूछा गया था कि 'शाहिद के बारे में ताज़ा खबर क्या है', जो मैंने बाद में देखी। बाकी जानकारी मुझे दोस्तों के लगातार फोन कॉल और न्यूज़ चैनलों पर चल रही ब्रेकिंग न्यूज़ से मिली। शाहिद को उनके दफ्तर में अज्ञात हमलावरों ने गोली मारकर हत्या कर दी थी क्योंकि वह 'राष्ट्र-विरोधी' लोगों के केस लड़ रहे थे। शाहिद की दलीलों की वजह से हाल ही में मुंबई के 7/11 ट्रेन धमाकों में निर्दोष लोगों को बरी किया गया था। उनकी मृत्यु के बाद, मुंबई की अदालतों ने 26/11 मुंबई हमलों में दो सह-आरोपियों को बरी कर दिया। शाहिद की हत्या के पीछे का मास्टरमाइंड आज भी एक रहस्य बना हुआ है, कम से कम आम जनता की नज़र में।

किसी अपने को खोने के गम से उबरने के कई तरीके होते हैं। या तो आप शोक मनाकर आगे बढ़ जाते हैं, या फिर उससे भागकर अपने काम में सुकून ढूंढने की कोशिश करते हैं। मैंने दूसरा तरीका चुना। उनकी मृत्यु के तीसरे दिन मैं नागपुर जा रहा था, जहाँ मुझे अपने पत्रकारिता करियर की सबसे महत्वपूर्ण खबरों में से एक को कवर करना था। यह मामला पिछड़े वर्गों के कुछ छात्रों की नक्सलवादी होने के आरोप में गिरफ्तारी से जुड़ा था। उनके खिलाफ सबूत हास्यास्पद थे। उनके पास भगत सिंह और चंद्रशेखर आजाद से संबंधित साहित्य था। यह मेरे लिए एक तरह से प्रायश्चित जैसा था, क्योंकि मेरे मित्र शाहिद की मृत्यु भी इसी तरह के मामलों का प्रतिनिधित्व करते हुए हुई थी। मेरे मन में, यह उनकी स्मृति को मेरी श्रद्धांजलि थी। लेकिन किस्मत को कुछ और ही मंजूर था। कुछ समय बाद ही मैं एक अजीब बीमारी से पीड़ित होकर घर लौट आया, जिसका बाद में अवसाद के रूप में निदान हुआ।

मेरे माता-पिता के अत्यधिक चिंतित होने और हर तरह के परीक्षण करवाने के बाद ही मुझे यह बीमारी पता चली। ब्रोंकोस्कोपी से लेकर एमआरआई तक। एक अन्य डॉक्टर ने मेरे माता-पिता को मुझे टीबी की दवा शुरू करने की सलाह दी। लेकिन किस्मत से, दक्षिण मुंबई के एक

अस्पताल में मेरी मुलाकात मुंबई के सबसे प्रसिद्ध चिकित्सकों में से एक से हो गई। डॉ. चिटनिस ने मेरी रिपोर्ट देखी और मुझसे कुछ सवाल पूछे। फिर उन्होंने गहरी सांस ली और पूछा, 'क्या बात है?' ऐसा लगा जैसे उनके शब्दों ने मुझे गहरी नींद से जगा दिया हो। 'कुछ नहीं डॉक्टर साहब, मैं बहुत थका हुआ और कमजोर महसूस कर रहा हूँ, समझ नहीं आ रहा कि क्या हो रहा है?'

चेहरे पर हल्की सी मुस्कान लिए उसने कहा, 'खुद पर तरस खाना छोड़ो, इन रक्त परीक्षणों से अपनी तकलीफों को महिमामंडित करना बंद करो, तुम बिल्कुल ठीक हो। काम पर वापस जाओ, यही तुम्हारी समस्या का समाधान है। ये सब तुम्हारे दिमाग की उपज है।'

'क्या यह हाइपोकॉन्ड्रिया है?' मैंने पूछा। अपनी स्थिति का स्वयं निदान करने की कोशिश करते समय मुझे यह शब्द हाल ही में सुनने को मिला था। 'नहीं, तुम बस आलसी हो और अपनी जिम्मेदारियों से भाग रहे हो,' डॉ. चिटनिस ने बेपरवाही से कहा।

अगले कुछ दिनों तक मैंने डॉ. चिटनिस की सलाह को समझने की कोशिश की। उन्हीं आलसी दिनों में से एक दिन मेरी माँ ने बीच में दखल देने का फैसला किया। अम्मा, जैसा कि मैं उन्हें बुलाती हूँ, मेरी सबसे वफादार सहेलियों में से एक रही हैं। उन्होंने आधुनिक शिक्षा कभी नहीं देखी, अब्बा ही उनके शिक्षक थे। उन्होंने कहा कि वह मेरे ज़रिए अपने सपने पूरे करना चाहती हैं। मैं विद्रोह करती, वह मेरे लिए लड़तीं, हर संभव कोशिश करतीं और आखिरकार घर के सभी लोग मान जाते। उस दिन जब वह मुझे कॉफ़ी दे रही थीं, उन्होंने पूछा, 'तो क्या तुम अपनी नौकरी छोड़ रही हो?'

मैंने कंधे उचका दिए, मुझे बस उस कॉफी के कप में दिलचस्पी थी जो वह मेरे लिए लाई थी। फिर, अपने स्वभाव के अनुसार, वह मेरे बगल में बिस्तर पर बैठ गई और इंकलाब (एक प्रमुख उर्दू दैनिक) पढ़ने लगी। अखबार पढ़ते-पढ़ते दस मिनट बीतने पर उसने मुझसे कुछ पूछना शुरू ही किया था कि मैंने उसे बीच में ही रोक दिया, 'अम्मा, अगर आज आपके अखबार में कोई उपदेश है, तो कृपया परेशान न हों, मुझे इसके बिना ही बेहतर लगेगा।'

'अरे नहीं, क्या तुमने सोहराबुद्दीन के बारे में पढ़ा है?' उसने पूछा। न जाने क्यों उस नाम ने मेरी दिलचस्पी जगा दी। मैंने मन ही मन सोचा, मैं सोहराबुद्दीन के बारे में तो जानता ही था। आखिर उन्हीं की वजह से मेरी मुलाकात हमारे समय के सबसे विवादित व्यक्तियों में से एक, नरेंद्र मोदी से पहली बार हुई थी।

2007 में, गुजरात के तीन शीर्ष पुलिस अधिकारी उस समय सुर्खियों में आए जब उनके सबसे करीबी सहयोगियों में से एक रजनीश राय ने उन्हें एक फर्जी मुठभेड़ में सोहराबुद्दीन नामक एक छोटे-मोटे अपराधी को मारने के आरोप में गिरफ्तार कर लिया था।

डी.जी. वंजारा और राजकुमार पांडियन जेल में थे। वे मोदी सरकार के सबसे भरोसेमंद अधिकारी थे और तब तक शान से जी रहे थे, अखबारों में उनकी तस्वीरें हर दिन प्रेस कॉन्फ्रेंस में छपती थीं। ये वही अधिकारी थे जिन्होंने 2004 में हिंदू हृदय सम्राट नरेंद्र मोदी की हत्या के रास्ते में आए जिहादियों का सफलतापूर्वक पीछा किया और उन्हें मार गिराया था। उनकी गिरफ्तारी ने स्वाभाविक रूप से पूरे देश का ध्यान आकर्षित किया।

2007 में एक टेलीविजन समाचार चैनल में राजनीतिक पत्रकार के रूप में नौकरी मिलने के बाद,

मेरा पहला काम 2007 के गुजरात चुनावों को कवर करना था। गुजरात के मुख्यमंत्री नरेंद्र मोदी एक बार फिर भारी जीत की ओर अग्रसर थे, जैसा कि अधिकांश विश्लेषकों ने भविष्यवाणी की थी। 2002 में गुजरात में हुए दंगों ने समाज को दो ध्रुवों में बांट दिया था और उन्हें बहुसंख्यक हिंदू आबादी के बीच नायक बना दिया था। 2007 में भारी जीत उनके लिए बहुत मुश्किल नहीं लग रही थी।

एक कैमरामैन के साथ मैं उनकी पहली चुनावी रैली में पहुँच गया। मुझे ठीक से याद नहीं है, लेकिन मुझे लगता है कि इसका आयोजन गुजरात चैंबर ऑफ कॉमर्स ने किया था। नरेंद्र मोदी अपने खास सलाहकार अमित शाह के साथ मंच पर थे, उनके अलावा अन्य मंत्री भी मौजूद थे।

मैंने पहले भी कई राजनीतिक रैलियों को कवर किया था और यह रैली भी पहली नज़र में उनसे अलग नहीं लगी। लेकिन दिल्ली में मेरे निर्माताओं ने मुझे बताया था कि मोदी भड़काऊ भाषण देने में माहिर हैं। और उस दिन उन्होंने निराश नहीं किया। 'सोहराबुद्दीन, लोग मुझसे पूछते हैं कि मैं सोहराबुद्दीन जैसे आतंकवादी के साथ क्या करूँ।' भीड़ ने तालियाँ बजाईं। आगे की पंक्ति में बैठी महिलाओं ने भी ताली बजाई; वह पंक्ति हमेशा उन्हीं के लिए आरक्षित रहती थी क्योंकि माना जाता था कि गुजरात में मोदी महिलाओं के बीच लोकप्रिय हैं। स्तंभकार आकार पटेल ने तो एक लेख में यह भी लिखा था कि गुजराती महिलाओं के लिए मोदी एक सेक्स सिंबल हैं।

भीड़ की प्रतिक्रिया उम्मीद के मुताबिक ही थी: 'उसे मार डालो, उसे मार डालो'। मुझे तो वह किसी रोमन एम्फीथिएटर जैसा लग रहा था। भाषण में 'मिया मुशर्रफ' और 'दिल्ली की सल्तनत' के घृणित संदर्भों का सिलसिला जारी रहा। भाषण समाप्त होने पर मोदी मंच से नीचे उतरे और गुजरात चैंबर ऑफ कॉमर्स के सदस्यों ने उन्हें माला पहनाई। भीड़ उनके चारों ओर जमा हो गई। मैं उनके सुरक्षा घेरे को पार करते हुए अंदर घुस गया और अपने कैमरामैन पर चिल्लाने लगा, जो मेरे पीछे आने के लिए संघर्ष कर रहा था।

'मोदीजी, मोदीजी, एक सवाल'। संयोगवश, अपने समर्थकों और दल-बल से घिरे उस व्यक्ति ने मेरी ओर मुड़कर देखा, मानो किसी राजनीतिक प्रश्न की उम्मीद कर रहा हो। 'मोदीजी, गुजरात में तीन अधिकारियों को गिरफ्तार किया गया है और उन पर सोहराबुद्दीन के फर्जी मुठभेड़ का आरोप लगाया गया है। क्या आप अब भी अपने भाषण में कही गई बात का समर्थन करेंगे?' जवाब की उम्मीद में मैंने अपना माइक उनकी ओर कर दिया। लेकिन यही कैमरामैन का पल साबित हुआ। नरेंद्र मोदी ने करीब दस सेकंड तक मुझे घूरा और फिर चले गए। उनके मंत्री ने मुझे तिरस्कार भरी नजरों से देखा। देश के सर्वोच्च पद, प्रधानमंत्री के पद पर आसीन उस व्यक्ति से यह मेरी पहली मुलाकात थी।

सोहराबुद्दीन की कहानी सुनाना बेहद ज़रूरी था। और यह मौका मुझे मेरी माँ के इंकलाब की किताब पढ़ने से मिला। सहज प्रवृत्ति से प्रेरित होकर मैं पास की ऑनलाइन दुकान पर गया।

सोहराबुद्दीन से जुड़े सभी सूत्रों ने मामले की सीबीआई जांच और गुजरात के शीर्ष आईपीएस अधिकारियों में से एक अभय चुडासमा की गिरफ्तारी का जिक्र किया। मैं चुडासमा को जानता था; लगभग एक साल पहले ही उन्होंने मुझे फोन पर धमकी दी थी, जब मैंने गुजरात बम धमाकों के मामले में उनके एक प्रमुख गवाह का कबूलनामा प्रकाशित किया था। चुडासमा गुजरात बम

धमाकों की जांच के प्रभारी अधिकारी थे, जिसका संबंध अंततः इंडियन मुजाहिदीन नामक संगठन से जुड़ा था। राज्य के सबसे वाक्पटु और मीडिया-प्रेमी अधिकारियों में से एक, चुडासमा के बारे में अफवाह थी कि वे गुजरात के गृह राज्य मंत्री अमित शाह के करीबी थे। लेकिन चुडासमा उन अन्य लोगों से अलग थे जो रातोंरात मशहूर हो गए थे। जैसा कि बाद में पता चला, वे एक ऐसे व्यक्ति थे जो बदमाशों और हवाला खातों से निपटने में ज्यादा सहज थे। और सोहराबुद्दीन उन्हीं के खास गुर्गों में से एक निकला।

प्रिंटआउट और अपने नोट्स तैयार करके, मैंने दिल्ली में अपने संपादकों शोमा चौधरी और तरुण तेजपाल को इस मामले और इसकी रिपोर्टिंग की आवश्यकता के बारे में एक पत्र लिखा। मन ही मन मुझे पता था कि शायद यही मेरे आत्म-निर्भर अलगाव और अवसाद से बाहर निकलने का रास्ता हो सकता है। मेरे दोनों संपादकों ने मुझे बहुत प्रोत्साहित किया और मैं फिर से अहमदाबाद के लिए रवाना हो गया। यह यात्रा मेरे लिए जीवन बदल देने वाली साबित हुई।

मेरी यात्रा के एक महीने के भीतर ही मैंने कुछ ऐसे अधिकारियों की मदद से कॉल रिकॉर्ड और आंतरिक नोट्स खंगालकर दो महत्वपूर्ण खुलासे किए, जिनके नाम मैं गुप्त रखूंगा। मैंने उनसे सावधानीपूर्वक संपर्क किया, क्योंकि मैं भली-भांति जानता था कि वे ही मेरी एकमात्र उम्मीद थे। लेकिन गुजरात जैसे राज्य में विश्वास करना आसान नहीं होता, जहां कर्तव्य का पालन करने वाले अधिकारियों को सरकार के प्रकोप का सामना करना पड़ता है। उनमें से अधिकांश मुझसे पहली बार मिल रहे थे। स्थिति को और भी जटिल बनाने वाली बात यह थी कि मैं तहलका का पत्रकार था, जिसका सीधा सा मतलब यह था कि किसी भी समय मेरे पास एक स्टिंग कैमरा हो सकता था।

गुजरात में मैंने जो देखा, वह केवल गुजरात तक सीमित मुद्दा नहीं था। ईमानदार पुलिस अधिकारियों पर मुकदमा चलाना उत्तर प्रदेश और मणिपुर में भी आम बात थी, जिन दो राज्यों से मैंने बड़े पैमाने पर रिपोर्टिंग की थी। मुझे यह भी एहसास हुआ कि यही मुकदमा चलाने वाला पहलू मेरे लिए मददगार साबित होगा। जैसा कि हुआ, जिस अधिकारी ने मुझे कुछ सबसे आपत्तिजनक नोट दिए, वह उस अधिकारी का सहपाठी निकला जिसके बारे में मैंने रिपोर्ट की थी। इससे बात आगे बढ़ी। मानवाधिकार कार्यकर्ताओं और सबूत मुहैया कराने वाले अधिकारियों की मदद से, मैंने उस साल के सबसे सनसनीखेज खुलासों में से एक को अंजाम दिया। ये मुठभेड़ों के दौरान तत्कालीन गृह राज्य मंत्री अमित शाह और शीर्ष अधिकारियों के कॉल रिकॉर्ड थे। कॉल रिकॉर्ड के साथ एक बेहद गंभीर आंतरिक सरकारी गोपनीयता अधिनियम का नोट भी था। मंत्री की गतिविधियों पर राज्य सीआईडी द्वारा नज़र रखी जा रही थी और नोट में आरोप लगाया गया था कि मुठभेड़ निर्दोषों को मारने और उन्हें आतंकवादी करार देने की एक नापाक साजिश थी।

इस खुलासे ने राजनीतिक जगत में हलचल मचा दी। सीबीआई के फोन आने लगे और तहलका से वे रिकॉर्ड सौंपने को कहा गया जिन्हें बाद में सुप्रीम कोर्ट के सामने पेश किया गया। मैं अहमदाबाद के होटल एम्बेसडर में ठहरती रही, जो अब तक मेरा दूसरा घर बन चुका था। खानपुर के मुस्लिम बहुल इलाके में स्थित यह जगह मेरे लिए काफी साधारण थी। बाद में मुझे पता चला

कि राज्य भाजपा कार्यालय कुछ ही ब्लॉक दूर था। मैं अचानक सबकी नजरों में आ गई। भाजपा नेता अय्यूब नाम के एक नौजवान की बात कर रहे थे जिसने यह खुलासा किया था। पता नहीं क्यों, उनके दिमाग में एक महिला खोजी पत्रकार का ख्याल ही नहीं आया था। मुझे कोई शिकायत नहीं थी, इससे मुझे चुपचाप अपना काम करने की आजादी मिली। लेकिन यह ज्यादा दिन नहीं चला। खुलासे के कुछ ही दिनों बाद, मेरे फोन पर एक अनजान नंबर से मैसेज आया, जिसमें लिखा था, 'हमें पता है तुम कहां हो।'

जीवन सचमुच बदल गया था; उस दिन से मैं हर तीसरे दिन अपना ठिकाना बदलता रहा, अहमदाबाद के आईआईएम कैंपस से गेस्ट हाउस, हॉस्टल और जिमखाना में रहने लगा। मैं एक भगोड़े की तरह रहने लगा था। इस समय तक, मेरे लिए मोबाइल फोन की जगह लैंडलाइन फोन ने ले ली थी। अंततः सीबीआई को अपने सारे सबूत सौंपने और अपनी अनुवर्ती रिपोर्ट लिखने के बाद, मैं मुंबई पहुँचा और कुछ हद तक नियमित दिनचर्या में लौटने का फैसला किया।

लेकिन किस्मत को कुछ और ही मंजूर था। खुलासे के कुछ ही हफ्तों बाद सीबीआई ने अमित शाह को गिरफ्तार कर लिया। स्वतंत्र भारत के इतिहास में गिरफ्तार होने वाले वे पहले सेवारत गृह मंत्री थे। यह खबर रातोंरात सनसनी बन गई। अधिकांश राष्ट्रीय मीडिया गांधीनगर स्थित सीबीआई मुख्यालय के बाहर जमा हो गया। जैसा कि अपेक्षित था, मुझे गुजरात लौटना पड़ा और इस सनसनीखेज गिरफ्तारी के बाद के घटनाक्रमों पर रिपोर्टिंग करनी पड़ी।

शाह की गिरफ्तारी ने उन पुलिस अधिकारियों को नई उम्मीद दी, जिनके साथ उनके शासनकाल में भेदभाव किया गया था। इस दौरान अधिकारियों ने मुझसे संपर्क करके बताया कि वे बात करना चाहते हैं। कई ऐसे अधिकारी जो पहले पत्रकारों से बचते थे, अब बोलने की हिम्मत जुटा पाए। हालांकि ज्यादातर बातचीत रिकॉर्ड पर नहीं हुई, लेकिन यह स्पष्ट था कि मुठभेड़ें तो बस हिमबर्ग का एक छोटा सा हिस्सा थीं। गुजरात के विभिन्न मामलों की फाइलों में कुछ और भी भयावह छिपा हुआ था। हममें से कोई भी सच्चाई के करीब नहीं था। संकेत मिल रहे थे कि पिछले एक दशक में न्यायिक प्रक्रिया को विकृत किया गया था। जिन लोगों को जनता की जान की रक्षा करनी थी, उन्हें खरीद लिया गया था। दंगों से लेकर मुठभेड़ों और राजनीतिक हत्याओं तक, कई अप्रिय सच सामने आने का इंतजार कर रहे थे। लेकिन इनमें से किसी को भी कैसे साबित किया जा सकता था?

पत्रकारिता का मूल नियम सबूत था और मेरे पास कोई सबूत नहीं था। सिर्फ बातचीत, किस्से-कहानियां और अनौपचारिक बयान थे। मैं यह सब कैसे साबित करती? तभी मैंने वह फैसला लिया जिसने मेरी पेशेवर और निजी जिंदगी बदल दी। राणा अय्यूब को मैथिली त्यागी के लिए जगह छोड़नी पड़ी, जो कानपुर की एक कायस्थ लड़की थी, अमेरिकन फिल्म इंस्टीट्यूट कंजर्वेटरी की छात्रा थी और गुजरात के विकास मॉडल और दुनिया भर में रहने वाले अनिवासियों के बीच नरेंद्र मोदी की बढ़ती लोकप्रियता पर फिल्म बनाने के लिए लौटी थी।

अपने वरिष्ठों को लिखे एक विस्तृत पत्र और उनकी ओर से गहन जांच करने के लिए मिले उत्साहवर्धक जवाब ने मुझे सोचने पर मजबूर कर दिया। गुजरात में लगभग तीन महीने बिताने और जिन परिस्थितियों में मेरी मुलाकात उन लोगों से हुई जिन्होंने मुझे जानकारी देने में मदद की, उससे मुझे यह स्पष्ट हो गया कि आगे का रास्ता कठिन था। सत्ता में बैठे और सच्चाई को अपने भीतर दबाए रखने वाले व्यक्तियों से सच्चाई निकलवाना आसान नहीं था। मेरे सहकर्मी आशीष खेतान ने अपने खुलासे में कई चौंकाने वाले खुलासे किए थे, जिसमें उन्होंने बाबू बजरंग और अन्य स्थानीय भाजपा और विश्व हिंदू परिषद के नेताओं को करारा जवाब दिया था, जिन्होंने 2002 के दंगों का निर्मम वर्णन किया था। लेकिन मेरा सामना उन दंगाइयों से नहीं था जो जरा सी भी आत्मसंतुष्टि मिलने पर अपनी बहादुरी का बखान करते थे। मेरा सामना अनुभवी, वरिष्ठ आईपीएस अधिकारियों से था, जिनमें से कई रॉ और सूचना एवं प्रसारण एजेंसियों में सफल कार्यकाल बिता चुके थे।

ये लोग बेहद सख्त मिजाज के राजनयिक थे; उनसे बात निकलवाने के लिए एक सक्षम और चतुर जांचकर्ता की जरूरत थी, जिसके पास शक्ति और अधिकार हो। मैं इन दोनों ही मामलों में काबिल नहीं था। योजना बनाने के अलावा, क्रियान्वयन की पूरी जिम्मेदारी भी मुझ पर ही थी। मुझे पता था कि मैं अपने कार्यालय से किसी कनिष्ठ को नहीं ले जा सकता, क्योंकि इससे जोखिम और बढ़ जाता। मुझे स्पष्ट कर दिया गया था कि मेरे संपादक मेरे काम पर नजर रखेंगे, लेकिन बाकी सब कुछ मेरी ही जिम्मेदारी होगी। हर बार जब मैं प्रतिलिपि भेजता, तो शोमा और तरुण दोनों से मुझे 'उत्कृष्ट, लगे रहो' या 'चौंकाने वाला खुलासा' जैसे उत्साहवर्धक जवाब मिलते थे। इससे मुझे और गहराई से जांच करने की प्रेरणा तो मिली, लेकिन सच्चाई यह थी कि मैं मैदान में अकेला था। मुझे अपनी सुरक्षा का ध्यान रखना था और यह सुनिश्चित करना था कि जांच से ईमानदार और तथ्यों पर आधारित परिणाम मिलें।

कुछ लोग ऐसे थे जो सच्चाई जानते थे और उन्होंने इसे स्वीकार कर लिया था, वे अपना जीवन ऐसे जी रहे थे मानो 2002 में घटी यह निर्मम राजनीतिक हिंसा उनके करियर का हिस्सा ही न हो। तहलका जैसी खोजी संस्था में एक पत्रकार के तौर पर, मैं जानती थी कि मदद की हर उम्मीद मेरे लिए खत्म हो चुकी थी। मेरे सामने एकमात्र रास्ता वही था जो सच्चाई की खोज में हर पत्रकार आखिरी उपाय के तौर पर अपनाता है। गुप्त रूप से काम करना। मैं मात्र 26 साल की थी, एक लड़की, और वो भी मुस्लिम लड़की। मैंने कभी अपनी पहचान को लेकर सचेत नहीं रही, लेकिन जब बात धार्मिक आधार पर बंटे हुए देश की हो, तो इन बातों पर सोच-समझकर विचार करना जरूरी था। मुझे अपने परिवार को इसके बारे में बताना था, मैं कौन होती? क्या मैं बिना किसी मदद के यह सब कर पाती?

मैंने एक जाने-माने मास कम्युनिकेशन कोर्स में पढ़ाई की थी, जो उस समय मेरे बहुत काम आया। मेरे सहपाठियों में उभरते हुए अभिनेता भी थे जिन्होंने फिल्म इंडस्ट्री में अपनी एक अलग पहचान बनाई थी। मेरी सहपाठी और अब बेहतरीन अभिनेत्रियों में से एक अभिनेत्री ऋचा चड्ढा ने हाल ही में एक इंटरव्यू में बताया कि उन्होंने एक फिल्म की तैयारी के लिए मेरे करियर ग्राफ और

पत्रकार के रूप में मेरे अनुभवों को ध्यान में रखा, जिसमें उन्हें एक रिपोर्टर की भूमिका निभानी थी। मैंने अपने एक और करीबी अभिनेता दोस्त को फोन किया, जिससे मैं बहुत दिनों बाद मिली थी। दोस्त की मदद से मैंने उसके मेकअप आर्टिस्ट से अपॉइंटमेंट लिया। अगले दिन मैं मुंबई के एक उपनगरीय स्टूडियो में चाय की चुस्की लेते हुए सही विग चुनने की बारीकियां सीख रही थी। मेकअप आर्टिस्ट, जो अनुभवी निकले, ने मुझे अपने पास मौजूद कुछ विग्स में से कुछ चुनने में मदद की। विग्स से मेरा लुक अलग तो लग रहा था, लेकिन कुछ बनावटी और बेमेल सा लग रहा था। विग से बदलाव की कोशिश नाकाम रही।

मुझे लगा कि अपनी पहचान को पूरी तरह से बदलना ही बेहतर होगा। संयोग से, मुझे अपने पुराने सहपाठियों के साथ एक ग्रुप आईडी पर एक सहकर्मी का ईमेल मिला, जिसने लॉस एंजिल्स के प्रतिष्ठित अमेरिकन फिल्म इंस्टीट्यूट कंजर्वेटरी में दाखिला लिया था। यह मेरे लिए किसी चमत्कार से कम नहीं था। यही मेरी पहचान बनने वाली थी। गुजरात में रहने वाला एक अमेरिकी फिल्मकार, जो किसी तरह की फिल्म बनाएगा। यह विचार महत्वाकांक्षी था, लेकिन इसके सफल होने की पूरी संभावना थी।

अगले कुछ दिन मैंने संगीत विद्यालय के कार्यों, उसके पूर्व छात्रों, उसके द्वारा निर्मित फिल्मों का अध्ययन करने और गुजरात पर बनी फिल्मों के प्रकार और उनमें मुख्य रूप से किस विषय पर ध्यान केंद्रित किया गया था, इस पर शोध करने में बिताए। अंततः, मैंने फिल्म के विषय को खुला रखने का निर्णय लिया, जो कि कहानी में आने वाले पात्रों की प्रतिक्रिया पर निर्भर करेगा, क्योंकि कहानी की कोई पूर्व-लिखित पटकथा नहीं थी। मुझे एक नाम चुनना था। एक ऐसा नाम जो स्नेहपूर्ण, पारंपरिक और फिर भी अपने संदेश में सशक्त हो।

मुझे यह स्वीकार करना होगा कि फिल्म प्रेमी होने से मुझे बहुत मदद मिली। मुझे हिंदी फिल्में देखना बहुत पसंद है और उस समय मुझे राजकुमार संतोषी की फिल्म 'लज्जा' याद आ रही थी। मैंने इसे दिल्ली से मुंबई की फ्लाइट में देखा था। फिल्म की सबसे बड़ी खासियत इसके सशक्त महिला किरदार थे, जिन्हें माधुरी दीक्षित और मनीषा कोइराला सहित मुख्य कलाकारों के दमदार अभिनय का पूरा समर्थन मिला था। फिल्म में कोइराला ने 'मैथिली' नाम का किरदार निभाया था, जो भारतीय महिलाओं के जीवन और जाति एवं लिंग आधारित उत्पीड़न को दर्शाती है। मैथिली भगवान राम की पत्नी सीता का भी नाम था। यह नाम मेरे मन में बस गया था। जब मैं एक ऐसे दूसरे नाम की तलाश कर रही थी जो आम हो और कुछ उपनामों की तरह दिखावटी न हो, और न ही ब्राह्मण या दलित होने का संकेत दे, तब 'मैथिली त्यागी' नाम मेरे मन में आया। मेरे विजिटिंग कार्ड पर लिखा था, मैथिली त्यागी, स्वतंत्र फिल्म निर्माता, अमेरिकन फिल्म इंस्टीट्यूट कंजर्वेटरी। लेकिन गुजरात वापस जाने से पहले, मुझे एक सक्षम सहायक की ज़रूरत थी जो जल्द ही मेरे साथ आ सके और जिसकी उपस्थिति मेरे जीवन पर गहरा प्रभाव डाल सके। माइक (नाम बदला हुआ) फ्रांस में विज्ञान का छात्र था जो छात्र विनिमय कार्यक्रम के तहत भारत में था। माइक भारतीय पत्रकारों के साथ भारत में काम करना चाहता था। मैंने उसे अपने शोध के सटीक विवरण दिए बिना, यथासंभव ईमानदारी से पत्र लिखा।

मैंने उसे बताया कि मुझे एक गैर-भारतीय सहकर्मी की ज़रूरत है जो मेरे साथ फिल्म पर काम

करने का दिखावा कर सके। मैंने उसे यह भी बताया कि यह एक बड़ी और संवेदनशील जांच का हिस्सा होगा। मैंने उसे आगाह किया कि माइक को इस मामले की पेचीदा जानकारियों का पता नहीं चलेगा। वह सिर्फ मेरी पहचान प्रमाणित करने के लिए एक विदेशी-गोरा चेहरा होगा।

अपने विजिटिंग कार्ड, राख जैसे भूरे रंग के लेंस, हेयर स्ट्रेटनर, रंगीन बंदना और कुछ रिकॉर्डिंग उपकरणों के साथ मैं अहमदाबाद पहुँच गई। माइक को कुछ दिनों बाद आना था। मैंने तुरंत मैथिली त्यागी के नाम से एक सिम कार्ड ले लिया। मुझे आश्चर्य हुआ कि अहमदाबाद में मेरे कथित 'संरक्षक परिवार' द्वारा व्यवस्थित दस्तावेजों की मदद से मुझे यह सिम कार्ड कितनी आसानी से मिल गया। जांच में लंबा समय लगने वाला था। न तो मैं और न ही मेरा संगठन मुझे किसी आलीशान होटल में ठहराने का खर्च उठा सकते थे। साथ ही, मैं एक संघर्षरत फिल्म निर्माता की भूमिका निभा रही थी, जिसके पास सीमित वित्तीय सहायता थी। ऐसे व्यक्ति के लिए आवास की व्यवस्था केवल कोई स्थानीय व्यक्ति ही कर सकता था। इस बार मदद मुझे एक कलाकार मित्र से मिली, जो अहमदाबाद के साहित्यिक और सांस्कृतिक हलकों में अच्छी तरह से जुड़ा हुआ था। वह इतना दयालु था कि उसने ज्यादा सवाल नहीं पूछे। मैं एक पत्रकार थी जिसने अपनी जांच के कारण गुजरात की गृह मंत्री को जेल भिजवाया था, यही कारण था कि उसने अपने प्रभाव का इस्तेमाल करके मुझे नेहरू फाउंडेशन नामक एक शैक्षणिक संस्थान में आवास दिलवाने में मदद की।

फाउंडेशन के हॉस्टल के वार्डन से मेरा परिचय एक फिल्म निर्माता के रूप में कराया गया। वार्डन ने मेरी तरफ मुश्किल से ही देखा और मेरे सहायक मित्र से मजे से बातें करने लगा। मुझे 250 वर्ग फुट का एक कमरा, जिसमें एक संलग्न शौचालय भी था, 250 रुपये प्रतिदिन के हिसाब से मिल गया। संयोगवश, हॉस्टल में रहने वाले अन्य छात्रों ने मेरी जांच में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वे यूरोप के विभिन्न हिस्सों - जर्मनी, ग्रीनलैंड और लंदन - के छात्र थे।

मानिक भाई (नाम बदला हुआ), जो छात्रावास के डीन या प्रबंधक थे, मेरी पहली मुलाकात थी। मेरे एक दोस्त ने उनसे मेरा परिचय कराते हुए कहा, 'मैडम गुजरात पर फिल्म बनाने आई हैं।' मानिक भाई ने कहा, 'वाह, बढ़िया!' उन्होंने आगे कहा, 'कृपया मेरे शहर और हमारे मुख्यमंत्री के बारे में अच्छी बातें कहिएगा। यह अहमदाबाद कितना खूबसूरत शहर है!' और साथ ही उन्होंने मुझे शहर घुमाने का प्रस्ताव भी दिया। मेरे कमरे में एक सिंगल बेड, एक राइटिंग टेबल और एक बुक स्टैंड रखने के लिए पर्याप्त जगह थी। लेकिन छात्रावास की लोकेशन ने जगह की कमी को पूरा कर दिया। गुजरात के सबसे आलीशान और केंद्रीय इलाकों में स्थित यह जगह अगले छह महीनों तक मेरे लिए घर जैसा बन गई।

अगली सुबह माइक आया, एक लंबा-चौड़ा, हंसमुख फ्रांसीसी लड़का, लगभग 19 साल का, जिसके बाल बिखरे हुए थे। मैं उससे अपने दोस्त के घर पर मिला, जहाँ मैंने उसे उसकी भूमिका के बारे में संक्षेप में बताया, जिसके बाद वह मेरे साथ हॉस्टल चला गया।

मानिक भाई ने मेहरबानी करके माइक को अगले एक महीने के लिए मेरे कमरे के बगल वाला कमरा दे दिया। जाहिर है, माइक ने अपने 'केमछो' से उन्हें प्रभावित किया था, जिसका इसमें अहम योगदान था। माइक सीखने का शौकीन था और उसे अलग-अलग संस्कृतियों के बारे में

जानना और सीखना बहुत पसंद था, लेकिन खाने के मामले में वह सबसे ज्यादा रुचि रखता था। उस शाम हमने अहमदाबाद के मशहूर थाली रेस्टोरेंट पकवान में अपना पहला डिनर किया। माइक और मुझे आज भी याद है कि उस रात उसने कम से कम दो दर्जन पूरियां और छह कटोरी हलवा खा लिया था, जिसे देखकर मैं थोड़ा हैरान और खुश हुआ।

रात के खाने के बाद जब हम हॉस्टल की सीढ़ियों से ऊपर जा रहे थे, तो उसने पूछा, 'तो क्या मैं तुम्हें राणा कहकर बुला सकता हूँ, जब हम अकेले हों?'

'नहीं, जब तक तुम इस देश से नहीं चले जाते, मैं तुम्हारे लिए मैथिली ही रहूंगी।' माइक ने अपना वादा निभाया। पेरिस जाने से एक दिन पहले उसने मेरे लिए जो विदाई कार्ड छोड़ा था, उस पर हिंदी में लिखा था, 'प्यारी मैथिली, अपना ख्याल रखना—माइक'।

नेहरू फाउंडेशन में शुरुआती कुछ दिन हमने अपनी नई ज़िंदगी से तालमेल बिठाने में बिताए। माइक अपने कमरे में फ्रेंच-हिंदी अनुवाद की किताब लेकर बैठा रहता, मुझसे सवाल पूछता और साथ ही मार्क टली की किताब पढ़ता रहता। अपनी उम्र के हिसाब से मार्क काफी पढ़ा-लिखा, बेबाक राय रखने वाला और तेज़ दिमाग वाला था। वह छोटी-छोटी बातों को भी जल्दी समझ लेता था। फाउंडेशन में एक कैंटीन थी जहाँ 25 रुपये में दोपहर का खाना मिलता था। वहाँ से नक्काशीदार सीढ़ियाँ और संस्थान की छत दिखती थी, जिसके आगे एक खूबसूरत जंगल फैला हुआ था। हर दोपहर माइक और मैं अपने लैपटॉप लेकर छत पर जाते, दोपहर का खाना खाते और साथ ही काम करते। वह मुझसे पूछता, 'मैथिली, क्या प्लान है, हम किससे मिलने वाले हैं?' और मैं वही बात दोहराती, 'सही समय आने पर बता दूँगी।'

शाम को माइक और मैं अपने कैमरे लेकर पुराने शहर में तस्वीरें खींचने जाते थे। हम दोनों को फोटोग्राफी में रुचि थी और हमारे पास एक जैसे एसएलआर कैमरे थे। हालांकि, इसका फोटोग्राफी के प्रति हमारे प्रेम से कोई लेना-देना नहीं था। यह हमारे लिए और हमें देखने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए हमारी भूमिकाओं की प्रामाणिकता को मजबूत करने का एक अभ्यास था। अगर हमें उच्च अधिकारियों से संपर्क करना होता, तो निश्चित रूप से हमारी पृष्ठभूमि की जांच होती, खासकर उस जगह पर जहां हम ठहरे हुए थे। हमें अहमदाबाद में एक ऐसा सामाजिक दायरा चाहिए था जो हमारी नकली पहचान की पुष्टि कर सके।

प्रसिद्ध कलाकार एम.एफ. हुसैन द्वारा स्थापित ऐतिहासिक कला संग्रहालय, अमदावाद नी गुफा, हमारे लिए बहुत मददगार साबित हुआ। विशाल पार्क और कैफे से घिरे इस संग्रहालय में युवा, जिनमें ज्यादातर कलाकार और फोटोग्राफर थे, आराम करते नजर आते थे। कुछ गिटार बजाते थे, कुछ अपने काम का प्रचार करते थे। अन्य लोगों में उभरते फिल्मकार, फोटोग्राफर और थिएटर कलाकार शामिल थे। इस जगह पर बिताई गई शामों में, मैं और माइक दोनों ही मैथिली बनकर अपने जीवन का भरपूर आनंद लेते थे।

माइक को लाल दरवाजा बहुत पसंद था, जो पुराने गुजरात का एक प्रमुख हिस्सा था। हर गुरुवार को वहां खुला बाजार लगता था। वहां पतंग बनाने वाले और कुम्हार भी होते थे। शाम को वह कुछ शानदार तस्वीरें लेकर लौटता और फिर अपना पसंदीदा सवाल पूछता, 'आज रात हम कहां खाना खाएंगे?' वह खाने का शौकीन था और गुजरात उसके लिए एकदम सही जगह थी।

इसी बीच एक कार्यकर्ता मित्र के ईमेल से मदद मिली। मुझे अधिकारियों से किसी तरह संपर्क स्थापित करना था, और मेरी सूची में सबसे पहले जी.एल. सिंघल का नाम था, जो उस समय गुजरात में एटीएस के कार्यवाहक प्रमुख के रूप में तैनात थे। सिंघल पर इशरत जहां के 'फर्जी' मुठभेड़ में उनकी भूमिका के लिए जांच चल रही थी। अपने अधिकारी मित्रों और पत्रकारों से मिली जानकारी के अनुसार, उन्होंने खुद को अलग-थलग कर लिया था, उनके बहुत कम मित्र थे, और वे मीडिया से बिल्कुल भी बातचीत नहीं करते थे। मुझे बताया गया था कि उन्हें लगभग हर किसी पर शक था। ऐसे में उनसे संपर्क कैसे किया जा सकता था?

ईमेल में नरेश और हितु कनोडिया का विवरण था, दोनों ही गुजराती फिल्म उद्योग के लोकप्रिय अभिनेता थे। दरअसल, नरेश कनोडिया को गुजराती फिल्म उद्योग का अमिताभ बच्चन कहा जाता था। हितु उनके दक्षिण मुंबई में पढ़े-लिखे बेटे थे, जिन्होंने हिंदी फिल्म उद्योग में मौका मिलने का इंतजार करने के बजाय अपने पिता के नक्शेकदम पर चलना बेहतर समझा था।

मुझे मेल में सूचना मिली कि कनोड़िया परिवार पिछड़े वर्ग से है और सिंघल समेत कई अधिकारियों से उनके अच्छे संबंध हैं, सिंघल खुद दलित थे। मैं उत्साहित होकर नरेश कनोड़िया को फोन किया, जिन्होंने मुझे अगली सुबह अहमदाबाद के जिमखाना में मिलने के लिए बुलाया। जब मैं उनसे मिला, तो उन्होंने कुछ भी नहीं बताया। जब मैंने उनसे अपनी अच्छी तरह से अभ्यास की हुई अंग्रेज़ी में बात की, तो वे बिल्कुल भावहीन थे। उन्होंने पीछे मुड़कर आईने में देखा, कंघी से अपने बालों को संवारा और फिर बेपरवाही से कहा, 'बेन, हिंदी में बोलो ना और थोड़ा आहिस्ता बोलो, बहुत फास्ट हो तुम।'

मैंने शायद ठीक से तैयारी नहीं की थी। मैंने अगला एक घंटा उन्हें अपनी फिल्म का विषय समझाने में बिताया—मैंने उन्हें बताया कि मैं गुजरात के उन अनसुने पहलुओं पर फिल्म बनाना चाहता हूँ, जिन पर फिल्म की चर्चा हो रही है; उदाहरण के लिए, गुजराती फिल्म उद्योग और गुजरात में पिछड़े वर्ग के लोगों की प्रगति। अब मुझे उनकी आँखों में थोड़ी दिलचस्पी नज़र आने लगी। एक ऐसे व्यक्ति के लिए, जो खुद को 'स्टार' समझता था, लेकिन जिसकी सफलता उसके गृह राज्य में हिंदी फिल्मों की लोकप्रियता के साथ फीकी पड़ गई थी, एक 'विलायती' फिल्म निर्माता द्वारा उसके काम की सराहना मिलना आखिरकार उसके लिए फायदेमंद साबित हुआ।

अगले दिन मुझे 100 किलोमीटर दूर एक गाँव जाना था जहाँ कनोडिया मुझसे इंटरव्यू लेना चाहते थे और फिल्म सेट पर उनके स्टंट देखना चाहते थे। उनसे मिलने के बाद जब मैं अपने कमरे में लौटा, तो बिस्तर पर बैठकर इस बात पर सोचने लगा कि यह सब व्यर्थ है। जोखिम भरा काम था, लेकिन यही एकमात्र रास्ता था। अगली सुबह मैं अपने एसएलआर कैमरे और नोट्स के साथ कमरे से बाहर निकला, तभी माइक ने मुझे रोक लिया। 'आपके लेंस गायब हैं।' मैं अभी भी अपने नए रूप में ढलने की कोशिश कर रहा था।

फिल्म का सेट शहर के बाहरी इलाके में एक गांव में बनाया गया था, जहां हजारों लोग इस नजारे को देखने के लिए जमा हुए थे। कनोडिया के बेटे हितु, जो दक्षिण मुंबई के एक बेहद सजे-धजे स्नातक हैं, को कैदी के रूप में तैयार किया गया था, जबकि उनके पिता ने एक पुलिसवाले की भूमिका निभाई थी।

मुझे बैठने और शूटिंग देखने के लिए एक कुर्सी दी गई। मैं लगन से अपना काम करता रहा, नोट्स लेता रहा और सीक्वेंस की तस्वीरें खींचता रहा। मैंने देखा कि मैं वहाँ अकेला नहीं था। तीस साल की उम्र का एक युवक, ट्राइपॉड और लेंस के साथ, सीक्वेंस की कुछ शानदार तस्वीरें ले रहा था। वह स्पष्ट रूप से टीम का हिस्सा नहीं था। जब कनोडिया ने उसे डॉक्यूमेंट्री फोटोग्राफर के रूप में हमसे मिलवाया, तो उसने माइक और मुझे एक उदासीन नज़र से देखा और अपने फ्रेम पर काम करने लगा। वह फोटोग्राफर अजय पंजवानी (नाम बदला हुआ) था, जिसके साथ आने वाले महीनों में मेरी एक अजीब सी दोस्ती विकसित हुई; एक ऐसी दोस्ती जो मैं अपनी असली पहचान के साथ कभी नहीं बना सकता था, एक ऐसी दोस्ती जिसकी नींव धोखे पर टिकी थी, लेकिन मैथिली को उस सहारे की ज़रूरत थी।

अगले कुछ दिन कनोडिया परिवार के सेट पर जाकर, उनसे बातचीत करते हुए, फिल्म की बारीकियों पर चर्चा करते हुए और 'यूनिट की चाय' की चुस्कियां लेते हुए बीत गए।

अजय, जो गुजराती फिल्मों पर अपनी डॉक्यूमेंट्री की शूटिंग के दौरान नियमित रूप से आते-जाते थे, अंततः विनम्र बने रहे और जरूरत पड़ने पर मदद की पेशकश की। फिल्म सेट पर ऐसी ही एक मुलाकात के दौरान मैंने गुजरात के कुछ जाने-माने पुलिस अधिकारियों, विशेषकर पिछड़ी जाति के अधिकारियों से मिलने का विषय उठाया। मैंने कनोडिया से कहा कि अगर संबंधित अधिकारी किसी संवेदनशील पद पर हों, जैसे कि साहस दिखाने वाला पद और गुजरात में आतंकवाद के संबंध में सुरक्षा से जुड़ा कोई मामला, तो यह मददगार होगा।

आखिरी पंक्ति से मनचाहा परिणाम मिल गया। 'आपको श्री सिंघल से मिलना चाहिए, जो हमारे सर्वश्रेष्ठ अधिकारियों में से एक हैं, जिन्होंने कई आतंकवादियों को मार गिराया है।' मैंने अपनी उत्तेजना को छिपाने की कोशिश की और उनका नाम ऐसे लिखने लगा जैसे मैंने इसे पहली बार सुना हो।

'तो सर, ऑफिसर सिंघल क्या करते हैं? वो कहाँ तैनात हैं?' मैंने भोलेपन का दिखावा करते हुए पूछा। मुझे अपने फिल्मी दोस्तों से बस यही चाहिए था, एक शुरुआती सुराग, एक ऐसा संदर्भ जिससे अधिकारियों को शक न हो। सिंघल को शक करने की कोई गुंजाइश नहीं थी, खासकर उस फिल्म निर्माता पर जिसकी सिफारिश क्षेत्रीय स्तर के किसी बड़े फिल्म निर्माता ने की हो।

लगभग उसी समय, अहमदाबाद में मेरे उस सूत्र ने, जिसे मैंने अपनी ज़रूरत की मदद के बारे में जानकारी दी थी, मुझे एक और ईमेल भेजा। इसमें शहर के सबसे लोकप्रिय स्त्री रोग विशेषज्ञों में से एक के संपर्क विवरण थे, जिनका नाम गुप्त रखा जाएगा।

जब भी मैं अपने कमरे में बैठकर मोबाइल इस्तेमाल करती थी, मेरा नेटवर्क ठीक से काम नहीं करता था। इसलिए ज़्यादातर समय मुझे छत पर जाना पड़ता था, जहाँ हॉस्टल के लोग चाय पीने या सिगरेट जलाने के लिए इकट्ठा होते थे। माइक भी उनमें से एक था। उसी दिन बाद में मैंने छत से स्त्री रोग विशेषज्ञ को फोन किया और अपना परिचय देते हुए बताया कि मैं एक फिल्म निर्माता हूँ और गुजरात पर फिल्म बनाना चाहती हूँ, साथ ही स्वास्थ्य क्षेत्र को भी अपनी फिल्म में शामिल करना चाहती हूँ। डॉक्टर काफी मिलनसार लग रहे थे और उन्होंने मुझसे पूछा कि क्या मैं उसी शाम उनके अस्पताल आ सकती हूँ। मैं तुरंत तैयार हो गई। जैसे ही मैं जाने लगी, माइक दौड़ता

हुआ आया और बोला, 'मैथिली, क्या मैं आपसे कुछ पूछ सकता हूँ?' उसने कहा, 'मैथिली, मैं इस तरह काम नहीं कर सकता। तुम हर किसी को बताती हो कि तुम फिल्म बना रही हो, लेकिन मैं तुम्हारे साथ काम कर रहा हूँ, तुम्हें मुझे सच बताना चाहिए।' मैंने माइक की जिज्ञासा को टालने की कोशिश की, लेकिन अब वह ज़िद पर अड़ा हुआ था, मानो उसे बुरा लग रहा हो। 'मैं कोई बच्चा नहीं हूँ, मैं बहुत पढ़ता हूँ।' मैं एक्सचेंज प्रोग्राम पर हूँ क्योंकि मैंने जीवन में कुछ हासिल किया है। आपको मुझे बताना चाहिए। क्या आप मुझ पर भरोसा करते हैं? या आपके लिए मैं महज़ एक अनजान चेहरा हूँ जिसे आप दिखाना चाहते हैं, एक दिखावे की तरह?' मुझे लगा कि यह एक बहुत ही सोची-समझी बात है, लेकिन उसके अचानक गुस्से में कही गई बातों ने मुझे अपनी असली जाँच के बारे में उससे बात करने के लिए प्रेरित किया। अपनी मीटिंग के लिए निकलने से पहले, मैंने उसे अपनी पिछली कहानियों के कुछ लिंक भेजे। मैंने उससे उन्हें पढ़ने के लिए कहा ताकि जब मैं उस शाम वापस आऊँ तो उसे मौजूदा जाँच की पूरी पृष्ठभूमि पता चल जाए।

डॉक्टर से मेरी मुलाकात बेहद फलदायी साबित हुई। वे मदद करने के लिए बहुत उत्सुक थे। मैंने उनसे पूछा कि क्या मैं किसी महिला डॉक्टर से मिल सकता हूँ, जो गुजरात में काफी लोकप्रिय हों, और जिनकी तस्वीर मैं फिल्म के लिए ले सकूँ। मुझे इस प्रतिक्रिया का अंदाज़ा था; आखिर मैंने एक स्त्री रोग विशेषज्ञ से मिलने की कोशिश की थी, इसका एक कारण था। 2002 के गुजरात दंगों ने देश के धर्मनिरपेक्ष ताने-बाने पर कलंक लगा दिया था और उनमें कई उकसाने वाले लोग शामिल थे, जिनमें से एक माया कोडनानी थीं, जो अहमदाबाद की विधायक थीं और प्रत्यक्षदर्शियों के बयानों में उन्हें अपने निर्वाचन क्षेत्र में दंगों के प्रमुख उकसाने वालों में से एक बताया गया था। मेरे लिए कोडनानी एक महत्वपूर्ण किरदार थीं, क्योंकि मुझे पूरा विश्वास था कि वे मुझे कहानी की गहराई में जाने में मदद कर सकती हैं।

उस शाम डॉक्टर ने मेरी मौजूदगी में माया कोडनानी को फोन किया और बताया कि अमेरिका के एक नामी फिल्म निर्माता उनका इंटरव्यू लेना चाहते हैं और वे मेरी योग्यता की पुष्टि खुद कर सकते हैं। अपनी इस चाल को जारी रखने और किसी भी तरह के संदेह से बचने के लिए, मैंने उसके बाद डॉक्टर से हफ्ते में एक बार मिलना जारी रखा, जिसे मैं अपना शोध कार्य कहता था।

उस शाम जब मैं हॉस्टल लौटा, तो माइक ने एक कागज़ पर मेरे लिए कई सवाल लिख रखे थे, जिनमें उन लोगों के नाम भी शामिल थे जिन्हें वह 'अपराधी' समझता था। माइक सही था, उसे एक्सचेंज प्रोग्राम के लिए चुने जाने का एक कारण था। उस शाम उसने मेरी बात बड़े ध्यान से सुनी, सही सवाल पूछे और बारीकियों को समझा। मैंने उसे कार्ययोजना के बारे में बताया और यह भी बताया कि अगर चीजें योजना के अनुसार नहीं हुईं तो मुझे उसमें तुरंत बदलाव करना पड़ेगा। उसने पूछा, हम इसे कैसे करेंगे? मैंने उसे बताया, 'कल हमें अपनी पहली परीक्षा देनी है।'

अगले दिन हमारी मुलाकात माया कोडनानी से होनी थी। एक खोजी पत्रकार होने के नाते मैं जानता था कि शुरुआत में जानकारी आसानी से नहीं मिलती और अगर मिलती भी है तो ज्यादा उत्सुकता नहीं दिखानी चाहिए। मैंने माइक को यही बताया। 'आज हमें फिल्म निर्माता बनना है, बस फिल्म निर्माता।' मायाबेन का क्लिनिक नरोदा की मुख्य सड़क पर स्थित था। नरोदा पाटिया

हत्याकांड इस तीन बार की विधायक के क्लिनिक से कुछ ही दूरी पर हुआ था, जिसमें सौ से अधिक लोगों को बेरहमी से पीट-पीटकर मार डाला गया था। उन पर आरोप था कि उन्होंने ही भड़काऊ नारे लगाते हुए मुसलमानों पर हमला करने वाली भीड़ का नेतृत्व किया था।

माइक और मैं कोडनानी के क्लिनिक में दाखिल हुए, जहाँ उनकी केबिन के बाहर संकरी मेजों पर स्थानीय महिलाएँ बैठी थीं। प्रवेश द्वार पर दो हट्टे-कट्टे, मजबूत कद-काठी वाले आदमी खड़े थे, जिनमें से एक के पास बंदूक थी। मुझे और माइक को देखकर उसने हमें रोका, फोन पर अपने बॉस से बात की और फिर हमें अंदर जाने दिया। वह कोडनानी का अंगरक्षक था, जो एसआईटी द्वारा पकड़े जाने के बाद से ही उनके क्लिनिक की सुरक्षा कर रहा था। यह दो मंजिला इमारत थी जिसमें कई अन्य डॉक्टरों के क्लिनिक भी थे। क्लिनिक के बगल में एक ऑपरेशन थिएटर था।

गुरुवार को क्लिनिक में आने वाले मरीजों की संख्या, जिनमें ज्यादातर निम्न आय वर्ग के लोग थे, दोगुनी हो जाती थी। एक बोर्ड पर लिखा था, 'गुरुवार को केवल 50 रुपये शुल्क लिया जाएगा'। हमें संदेह भरी नजरों से देख रही कंपाउंडर ने बताया कि यह क्लिनिक केवल स्थानीय लोगों के लिए है। मैंने उसे बताया कि मैं एक फिल्म निर्माता हूं और मैडम से मिलने आया हूं।

जब माइक टीवी पर संस्कार चैनल देख रहा था, तब मैंने नोटबुक में कुछ लिखने की कोशिश की। अपनी बहू के साथ बैठी एक बुजुर्ग महिला ने टीवी पर दिख रहे 'बाबा' के सामने झुककर उन्हें प्रणाम किया। माइक ने हैरानी से मेरी तरफ देखा। मैंने उसे देखकर मुस्कुराया और अपनी नोटबुक में वापस लग गई।

उसी क्षण, कोडनानी की सहायक ने अपने केबिन से बाहर निकलते हुए पूछा, 'मैथिली कौन है?' उन्होंने मुझे और माइक को अंदर आने का इशारा किया। मैंने अपने लहजे में अपना और माइक का परिचय दिया। फिर गर्मजोशी से हाथ मिलाया गया।

'आपका नाम कितना सुंदर है, सीताजी का नाम है,' कोडनानी ने प्रभावित होकर कहा। 'जी जी मैम, मेरे पिताजी संस्कृत शिक्षक हैं, इसलिए घर में हम सबके नाम सुंदर हैं।' यह बात कोडनानी को तसल्ली देने वाली साबित हुई, जिन्होंने माइक की झुंझलाहट के बावजूद उनकी तरफ देखा तक नहीं। कोडनानी की मेज पर चिकित्सा और स्त्री रोग विज्ञान की किताबें, भाजपा के कुछ पर्चे और गुजरात के सिंधी समुदाय पर कुछ पर्चे रखे थे। इनके बगल में उनके बेटे और बहू की तस्वीर थी, जो अमेरिका में बसे हुए हैं। अगले एक घंटे तक हमने उनके करियर पर चर्चा की और ठंडे पेय आने तक उन्होंने अपने परिवार के बारे में बातें कीं।

मायाबेन बाल कल्याण एवं स्वास्थ्य मंत्री थीं, इस बात का जिक्र करते हुए मैंने उनके राज्य में महिलाओं के कल्याण के प्रति उनकी प्रतिबद्धता की प्रशंसा की। अंत में उन्होंने पूछा, 'तो आप मुझसे क्या चाहते हैं?' मैंने जवाब दिया, 'मैं बस आपके बारे में और जानना चाहता हूँ, महोदया। हम अपनी फिल्म के लिए गुजरात की एक सफल महिला के रूप में आपका प्रोफाइल बनाना चाहते हैं।' कोई भी समझदार व्यक्ति, खासकर अगर वह राजनीतिक खेमे से हो, तो ऐसे मीठे और प्रशंसा भरे शब्दों को सुनना और खुद को गौरवान्वित करने वाली किसी चीज का हिस्सा बनना पसंद नहीं करता। हमें उनकी ओर से तुरंत सहमति मिल गई और अगले रविवार को उनके अपार्टमेंट में दोपहर के भोजन का निमंत्रण भी मिल गया। मैंने अपने रु. को गुनगुनाते हुए उनसे

कहा, 'यह बहुत अच्छा रहेगा।'

अपने केबिन से निकलने से पहले, मैंने सुश्री कोडनानी की साड़ी और गहनों की तारीफ करना नहीं भूला। जैसे ही हम आगे बढ़े, सुरक्षाकर्मी कुछ खास प्रभावित नहीं दिखे। हमने एक ऑटो रोका और सीधे पकवान की ओर चल दिए। 'आपने देखा ही होगा कि उन्हें मुझसे बात करने में भी कोई दिलचस्पी नहीं थी,' माइक ने नाराज़गी भरे लहजे में कहा। इससे पहले कि मैं कुछ कह पाता, हलवा और रबड़ी आ गई। गुजरात में थाली परोसते समय, मिठाई पहले परोसी जाती है। माइक का ध्यान भटक गया, कोडनानी को भूल गया, क्योंकि महाराज उसे हर व्यंजन का नाम बताने में मदद करने की कोशिश कर रहे थे। यह एक राहत की बात थी।

हम रात करीब दस बजे हॉस्टल के कमरे में लौटे। कमरे में कदम रखते ही मुझे एक अजीब सा एहसास हुआ, कुछ तो गड़बड़ थी। निकलने से पहले मैंने बिस्तर बड़े ध्यान से लगाया था, लेकिन अब चादर सिकुड़ी हुई थी और मेरा लैपटॉप चालू था। सूटकेस और दराजें तो बिल्कुल वैसी ही लग रही थीं, लेकिन मुझे लगा कि उस रात मेरे कमरे में कोई और भी आया था। मुझे हैरानी नहीं हुई। दरअसल, मुझे ऐसी ही किसी बात का अंदाज़ा था, इसीलिए गुजरात आने से पहले मैंने अपने लैपटॉप को फॉर्मेट कर दिया था और एडमिन का नाम मैथिली त्यागी रखा था। डेस्कटॉप पर फिल्म निर्माण और गुजरात के संग्रहालयों, फिल्म उद्योग और जंगलों पर शोध से जुड़ी फाइलें थीं। स्क्रीन पर भगवान कृष्ण का वॉलपेपर लगा था। मेरे बिस्तर के बगल वाली शेल्फ पर फिल्म निर्माण और फोटोग्राफी की किताबें थीं। यह साफ था कि किसी ने मेरे कमरे की तलाशी ली थी और मुझे पूरा यकीन था कि उन्हें कुछ भी ऐसा नहीं मिला जो उन्हें नहीं मिलना चाहिए था। खेल तो अभी शुरू ही हुआ था।

अगली सुबह जी.एल. सिंघल के साथ टेलीकॉन्फ्रेंस होनी थी। मेरे फोन पर फोटोग्राफर दोस्त अजय का मैसेज आया, जिसमें उसने पूछा था कि क्या मुझे अहमदाबाद की गुफा में फोटोग्राफी प्रदर्शनी में दिलचस्पी होगी। मैंने फोन एक तरफ रख दिया। तभी माइक ने मेरे दरवाजे पर दस्तक दी। वह फाउंडेशन के सामने टहलने जा रहा था और पूछ रहा था कि क्या मैं भी साथ चलना चाहूँगी। गुजरात में दिसंबर की शामें बहुत खूबसूरत और ठंडी हो सकती हैं। हालांकि, 2010 की सर्दी तो और भी ज्यादा कठोर थी। हमारी परेशानी को और बढ़ाने के लिए, हॉस्टल एक खुले, अविकसित जंगल वाले इलाके में स्थित था।

हॉस्टल में हमारे पास सिर्फ एक कंबल था। रात होते ही हममें से ज्यादातर लोगों ने रात में अपने सूटकेस का सारा सामान निकाल लिया और जो कुछ भी मिला, उसे पहनने की कोशिश की—टी-शर्ट, शर्ट, स्वेटर, जींस, हर वो चीज जिससे हमें गर्मी मिल सके।

उस शाम माइक और मैंने एक अतिरिक्त जैकेट पहनी और फाउंडेशन भवन के पास जंगल के किनारे टहलने का फैसला किया। मैंने माइक की ओर मुड़कर देखा, जो हमेशा की तरह विचारशील था। उसने पूछा, 'क्या मैं ठीक हूँ मैथिली?' मैंने उसे आश्वस्त करते हुए जवाब दिया, 'बिल्कुल, तुम बहुत आत्मविश्वासी थे और श्रीमती कोडनानी की चिंता मत करो, वह तो बातचीत और प्रशंसा के शब्दों में कुछ ज्यादा ही मग्न थीं।'

उस रात सोने से पहले मैंने अजय को एक संदेश भेजा, 'कल प्रदर्शनी में मिलते हैं।'

अगली सुबह जब मैं कैंटीन से उपमा खा रहा था, तभी मैंने आखिरकार जी.एल. सिंघल को फोन किया। उन दिनों वो विवादों के घेरे में थे। इशरत जहां मुठभेड़ की जांच के लिए उच्च न्यायालय द्वारा नियुक्त विशेष जांच दल (एसआईटी) जांच में प्रगति कर रहा था और सबकी निगाहें सिंघल पर टिकी थीं। वही वो व्यक्ति थे जिन्होंने दो अन्य अधिकारियों के साथ मिलकर इशरत जहां को 'मुठभेड़' में गोली मारी थी। मुठभेड़ के एक दिन बाद गुजरात के शीर्ष पुलिस अधिकारी और एटीएस प्रमुख डी.जी. वंजारा ने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस बुलाई थी। यह एक सनसनीखेज घटना थी, इशरत का खून से लथपथ शव, तीन अन्य लोगों के शवों के साथ, सड़क पर पड़ा था। उन्हें महिला फिदायीन के रूप में नामित किया गया था, भारत में अपनी तरह की पहली, लश्कर-ए-तैबा की एक ऑपरेटिव जो गुजरात के मुख्यमंत्री नरेंद्र मोदी की हत्या की साजिश रच रही थी।
इशरत चर्चा का विषय बन चुकी थी, जिहादी कट्टरपंथ और 2002 के दंगों का बदला लेने के लिए उग्र मुस्लिम संगठनों के प्रयासों पर कहानियां लिखी जा रही थीं। डी.जी. वंजारा को नायक का दर्जा दिया गया, वे रातोंरात मशहूर हो गए थे। उनके साथ इस प्रसिद्धि में अन्य अधिकारी भी शामिल थे, जैसे एन.के. अमीन, तरुण बरोट और वह व्यक्ति जिसमें मेरी विशेष रुचि थी, गिरीश सिंघल।
इसी बीच इशरत के परिवार ने अपनी बेटी इशरत जहां की 'हत्या' की जांच के लिए सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर की। गुजरात उच्च न्यायालय द्वारा एक न्यायिक समिति नियुक्त की गई और 2008 में फैसला सुनाया गया। गुजरात उच्च न्यायालय के पूर्व मजिस्ट्रेट की अध्यक्षता वाली न्यायमूर्ति तमांग समिति ने ऐसा फैसला सुनाया जिसने पूरे देश को स्तब्ध कर दिया, 'इशरत जहां की मुठभेड़ फर्जी थी - मामले की आगे जांच की जरूरत है।'
फैसले के बाद मानवाधिकार कार्यकर्ता और वकील सड़कों पर उतर आए और अधिकारियों द्वारा निर्दोषों की हत्या करने के घोर दुरुपयोग का विरोध किया। मामला तब तक रुका रहा जब तक परिवार ने आगे की जांच के लिए गुजरात उच्च न्यायालय में याचिका नहीं दायर की। इसके बाद मुठभेड़ की जांच के लिए तीन सदस्यीय पीठ का गठन किया गया। बाद में 2013 में, गुजरात उच्च न्यायालय द्वारा मुठभेड़ की जांच के लिए नियुक्त सीबीआई टीम ने इसे फर्जी करार दिया और गुजरात पुलिस के शीर्ष अधिकारियों को आरोपी अधिकारियों की सूची में शामिल किया।
यह 2010 की बात है, जब सुप्रीम कोर्ट के आदेश पर गठित एसआईटी इस मामले की जांच कर रही थी, तब मैंने पहली बार सिंघल से मिलने का समय मांगा। फोन की घंटी बजी, मैंने अपनी टूटी-फूटी अंग्रेजी में अपना परिचय दिया। जवाब कुछ खास नहीं था। सिंघल ने मुझे बाद में फोन करने को कहा। मेरी सारी उम्मीदें इसी आदमी पर टिकी थीं। मुझे अपनी जांच की शुरुआत इन्हीं से करनी थी। मैं सोच रहा था कि अब आगे कैसे बढ़ूं? उस सुबह अखबारों में एसआईटी द्वारा सिंघल की जल्द गिरफ्तारी की खबर छपी थी। ऐसे तनावपूर्ण हालात में यह स्वाभाविक ही था कि सिंघल किसी विदेश से लौटे फिल्म निर्माता से बात करने के बजाय कानूनी उपायों पर ध्यान देते। मैंने माइक को बताया कि आज उसकी जरूरत नहीं है। माइक हॉस्टल के साथी कैदियों से दोस्ती कर चुका था; उनमें से एक प्यारी सी लड़की थी जिसका नाम पारनंगुआक लिंगे था, जो ग्रीनलैंड की रहने वाली थी और हम सब उसे पानी कहते थे। मुझे शक था कि माइक को पानी से

लगाव बढ़ता जा रहा है। यह जानकर कि उस दिन उसे काम पर नहीं बुलाया जाएगा, उसने पानी को एक फोटोग्राफी ट्रिप का प्रस्ताव दिया और वह तुरंत मान गई।

मुझे याद आया कि उस शाम मेरा अपना एक फोटोग्राफी ट्रिप था। चूंकि करने को कुछ खास नहीं था, इसलिए मैं अपने कमरे में वापस गया और पिछले कुछ दिनों की घटनाओं को लिखना शुरू कर दिया।

जब मैं उस दिन बाद में वहाँ पहुँचा, तो अजय अपने दोस्त की प्रदर्शनी में मेज़बानी करने में व्यस्त थे। मुझे सबसे एक अमेरिकी फिल्म निर्माता के रूप में मिलवाया गया। इतना ही काफी था कि सब मुझसे तकनीकी सवाल पूछने लगे। 'आपका कैमरा कौन चला रहा है, आप कौन सा कैमरा इस्तेमाल कर रहे हैं, आप शूटिंग कब शुरू करेंगे?' मैंने इन सवालों के जवाब पहले से ही तैयार कर रखे थे और शांति से उनका जवाब दिया। अजय मुझसे काफ़ी प्रभावित हुए। उन्होंने मुझे अहमदाबाद की गुफा घुमाई और कॉफी और समोसे के लिए बैठने से पहले मुझे उस जगह के इतिहास के बारे में संक्षिप्त जानकारी दी।

हमारे बगल में कॉलेज के कुछ छात्र बैठे थे, उनमें से कोई गिटार बजा रहा था। एक कोने में दूर एक और व्यक्ति अपनी प्रेमिका के साथ बैठा था। एक पल के लिए ऐसा लगा जैसे सब कुछ भुला दिया जाए, पुलिस को, कि मैं गुप्तचर था, और इस काम को लेकर मेरी घबराहट को। मैं बस एक और छात्र था। मुझे घर पर अपने परिवार की याद आई, माता-पिता जिनसे मैंने कई दिनों से बात नहीं की थी, जो मेरे अचानक बदले हुए व्यवहार को लेकर चिंतित थे। मैंने अपना मोबाइल फोन बंद कर दिया था। मैं पास के एक साइबर कैफे से ईमेल भेजकर उनसे संपर्क करता था, लेकिन बहुत कम। अमित शाह का पर्दाफाश प्रकाशित करने के बाद से वे हर समय मेरी सुरक्षा को लेकर चिंतित रहते थे।

इन्हीं विचारों के साथ मैंने अजय से पूछा कि क्या वह मुझे मेरे हॉस्टल के पास वाले एक स्थानीय बाज़ार तक छोड़ सकता है। मैंने उसे बताया कि मुझे कुछ काम निपटाने हैं। उसने मुझे सैटेलाइट रोड के शॉपिंग एरिया में छोड़ दिया, जो कि एक पॉश इलाका है। काम को असली दिखाने के लिए मैं एक सुपरमार्केट में गई, कुछ ज़रूरी सामान खरीदा और सुपरमार्केट के ठीक बगल में एक छोटे से क्लिनिक में घुस गई। यही सबसे सुरक्षित तरीका था बात करने का। मैंने अपने लैंडलाइन नंबर पर डायल किया। मेरी माँ ने फोन उठाया, जो हमेशा से मेरी ताकत का स्रोत रही हैं और मज़बूत होने का दिखावा करती रही हैं। वह चाहती थीं कि मैं वापस आ जाऊँ। यह कोई पत्रकारिता नहीं थी, जब मुझे अपने ही परिवार से संपर्क नहीं करना था। मैंने उन्हें जितना हो सका उतना दिलासा दिया और अंदर ही अंदर उदास महसूस करते हुए फोन रख दिया।

अगली सुबह मैंने फिर से सिंघल को फोन किया, और इस बार उसने मुझसे मिलने की बात कही। मेरी जांच का वह भयावह सफर आखिरकार शुरू हो चुका था।

जी.एल.सिंघल

गिरीश सिंघल के सबसे बड़े बेटे हार्दिक ने 2012 में आत्महत्या कर ली थी। उनके करीबी लोगों का कहना है कि इससे उनके पिता टूट गए थे।

2010 में टेलीफोन पर हुई बातचीत के बाद उस सुबह मेरी मुलाकात सिंघल से हुई। स्थिति की संवेदनशीलता के बारे में पूरी जानकारी दिए जाने के बाद माइक मेरे साथ आया। सिंघल कोई साधारण व्यक्ति नहीं थे, वे गुजरात एटीएस के प्रभारी थे।

इस समय, एसआईटी की जांच के चलते सिंघल की गतिविधियों पर कड़ी नजर रखी जा रही थी और वह अपने मिलने-जुलने के तरीकों को लेकर सतर्क था। उसकी गिरफ्तारी तय थी। एसआईटी अपनी जांच में तेजी ला रही थी। दो कनिष्ठ अधिकारियों को पहले ही गिरफ्तार किया जा चुका था। सिंघल अगला हो सकता था। उस पर और अन्य अधिकारियों पर लगे आरोपों में अन्य बातों के अलावा, आतंकवाद के नाम पर एक निर्दोष लड़की की हत्या की साजिश रचना, उसे अंजाम देना और हत्या करना शामिल था।

गुजरात के लिए यह घटना कोई नई बात नहीं थी। दंगों के बाद शत्रुता का माहौल छा गया था। यह स्पष्ट था कि दोनों समुदायों के बीच पहले से ही असंतोषजनक संबंध और भी बिगड़ गए थे। नरेंद्र मोदी को उस हिंदू नेता के रूप में देखा जा रहा था जिसने गुजराती अस्मिता को आक्रमण से बचाया था। गोधरा ट्रेन कांड और उसके तुरंत बाद गुजरात में हुए नरसंहार ने दोनों समुदायों को भारी पीड़ा पहुंचाई थी। गोलीबारी की चपेट में आने वाले लोग नौकरशाह और अधिकारी थे, लेकिन उनके खिलाफ कुछ भी साबित नहीं हो सका। वर्षों से गठित जांच आयोगों ने अधिकारियों और उनकी तत्कालीन कार्रवाई या निष्क्रियता की कड़ी आलोचना की है, लेकिन कुछ को छोड़कर अधिकांश लोग सत्ता में बने रहे। शायद इसी से उत्साहित होकर गुजरात में कई मुठभेड़ें हुईं, जिनमें से अधिकांश को बाद में भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने फर्जी करार दिया। ये मुठभेड़ें गुजराती अस्मिता के लिए आने वाले खतरे को दर्शाने के प्रयास का हिस्सा थीं।

गुजरात में फर्जी मुठभेड़ों का सिलसिला घिनौना है। समीर खान पठान, सादिक जमाल, इशरत जहां, जावेद उर्फ प्रणेश पिल्लई, सोहराबुद्दीन, तुलसी राम प्रजीपति। ये गुजरात के कुछ मुठभेड़ मामले हैं जिनकी निगरानी देश की सर्वोच्च न्यायिक संस्थाएं कर रही हैं। इन मामलों पर एक संक्षिप्त नजर डालने से ही सुनियोजित और अंजाम दी गई हत्याओं की गाथा का पर्दाफाश हो जाता है। दिसंबर 2011 में तहलका में प्रकाशित अपने एक विस्तृत लेख में मैंने लिखा था,

हालांकि, गुजरात में हुए फर्जी मुठभेड़ों को और भी ज्यादा परेशान करने वाली बात यह है कि इनके इर्द-गिर्द जो घिनौना और झूठा दुष्प्रचार फैलाया गया था। इन फर्जी मुठभेड़ों में मारे गए सभी लोगों को सार्वजनिक रूप से लश्कर-ए-तैबा (LeT) के आतंकवादी बताया गया, जो मुख्यमंत्री मोदी, तत्कालीन उप प्रधानमंत्री एलके आडवाणी और प्रवीण तोगड़िया और जयदीप पटेल जैसे कट्टर हिंदुत्ववादी नेताओं की हत्या करने निकले थे। गुजरात 2002 की घटना के बाद सांप्रदायिक रूप से ध्रुवीकृत माहौल में, इस तरह का झूठा दुष्प्रचार आग में घी डालने जैसा था। यह कोई नहीं कह सकता कि देश में हुए आतंकी हमलों में किसी भी मुस्लिम लड़के का हाथ नहीं

था, लेकिन जानबूझकर खतरे पैदा करना और छोटे-मोटे अपराधियों को 'आतंकवादी' करार देना, पूरे मुस्लिम समुदाय को राष्ट्रविरोधी के रूप में बदनाम करने का काम करता था और मोदी को 'हिंदू हृदय सम्राट' के रूप में स्थापित करने में मदद करता था - एक ऐसा व्यक्ति जो न केवल 'हिंदू दुश्मनों' को सबक सिखाने में सक्षम है, बल्कि जिहादी समूहों से लगातार खतरे में है।

इससे पहले तहलका में छपी एक खबर में यह दिखाया गया था कि सोहराबुद्दीन, जो एक छोटा-मोटा अपराधी और जबरन वसूली करने वाला था, अपनी हत्या से पहले शाह के परिचितों से अच्छी तरह परिचित था। इस खबर ने यह सवाल भी खड़ा किया था कि सोहराबुद्दीन को क्यों मारा गया और उसे आतंकवादी क्यों बताया गया। यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि शाह न केवल उस समय गृह मंत्री थे और राज्य पुलिस के कामकाज के लिए सीधे तौर पर जिम्मेदार थे, बल्कि मोदी के इतने करीबी थे कि उन्होंने एक दर्जन से अधिक मंत्री पद संभाले थे। वहीं, बदनाम पुलिस अधिकारी वंजारा शाह के बेहद करीबी थे।

हालांकि, 19 वर्षीय इशरत जहां की निर्मम हत्या ने सिंघल को निशाने पर ले लिया। अन्य फर्जी मुठभेड़ों में उसकी भूमिका संबंधित निकाय द्वारा की गई जांच में केवल भ्रम पैदा करने के समान थी।

उस सुबह मेरी पहली मुलाकात गिरीश सिंघल से हुई, जब मैं माइक के साथ अहमदाबाद के शाहिबाग इलाके में उनके कड़ी सुरक्षा वाले दफ्तर पहुंचा। सिंघल की पिछली उपलब्धियों में अक्षरधाम हमले को सफलतापूर्वक संभालना शामिल था, जिसके लिए उन्हें राज्य वीरता पुरस्कार मिला था। जी.एल. सिंघल की उम्र के किसी अधिकारी के लिए इस तरह की पहचान हासिल करना बहुत मुश्किल है, लेकिन उनके विभाग के अधिकांश लोग इसकी पुष्टि करेंगे। एटीएस दफ्तर का सुरक्षा गार्ड असमंजस में था। एक स्कर्ट और सिर पर बंदना पहने महिला और एक विदेशी एटीएस प्रमुख से मिलना चाहते हैं? उन्हें एक सूचना भेजी गई।

कुछ ही मिनटों में एक कांस्टेबल गार्ड के पास आया और गुजराती में फुसफुसाकर कहा कि हम कुछ विदेशी फिल्म निर्माता साहब से मिलने आए हैं। गार्ड के चेहरे पर विस्मय का भाव था जब माइक और मुझे अंदर ले जाया गया। माइक हमेशा की तरह आकर्षक था। कोई और 19 वर्षीय युवक ऐसी स्थिति में घबरा जाता, लेकिन वह नहीं। हालांकि, मुझे उसके बारे में थोड़ी चिंता थी; क्या वह स्थिति की गंभीरता और इससे जुड़े जोखिम को पूरी तरह समझता है, मैंने सोचा। प्रतीक्षा कक्ष में प्रवेश करते ही मेरे सारे संदेह दूर हो गए। हम सादे कपड़ों में कांस्टेबलों और वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों के एक समूह के साथ इंतजार कर रहे थे; उनके सफेद, मजबूत स्पोर्ट्स जूते उन्हें आम नागरिकों से अलग कर रहे थे। एक टेलीविजन पर बॉलीवुड फिल्म चल रही थी जिसने माइक का ध्यान आकर्षित किया। यह गोविंदा की फिल्म थी जिसने कुछ अधिकारियों को मंत्रमुग्ध कर दिया जबकि बाकी अपने नियमित काम में लगे रहे। उनमें से एक जिज्ञासु व्यक्ति आकर माइक के बगल में बैठ गया, जिसने विनम्रतापूर्वक 'नमस्ते' कहकर उसका अभिवादन किया। टूटी-फूटी अंग्रेज़ी में बातचीत शुरू हुई, जिसमें उनके खाने के प्रति प्रेम से लेकर उनके विदेशी देश के बारे में विस्तार से चर्चा हुई। माइक ने स्थिति को पूरी तरह से नियंत्रित किया हुआ था, उसमें घबराहट या अति-उत्साह का कोई संकेत नहीं था।

'Maithili Tyagi, aapko sahib bulaate hain,' said the orderly. Act One had begun.

गिरीश सिंघल, जिनकी उम्र 40 के आसपास थी, शालीन, सलीके से कपड़े पहने और अच्छे व्यवहार वाले थे। उन्होंने उंगलियों के बीच आधी जली सिगरेट दबा रखी थी और हमें अंदर आने के लिए कहा। वे अपने लैपटॉप पर एक वीडियो देख रहे थे। उनकी मेज पर ओशो की कुछ किताबें रखी थीं। मैंने बैठते हुए पूछा, 'क्या आप ओशो के अनुयायी हैं?' मैंने अपनी डायरी को मेज पर सावधानी से रखा; मेरा वीडियो रिकॉर्डर उससे जुड़ा हुआ था। मैंने पहले ही तय कर लिया था कि मैं अपने विषय से पहले उनके बारे में जान लूंगा और फिर चुपके से उनकी बातचीत रिकॉर्ड करूंगा। लेकिन सिंघल अपने गुस्सैल स्वभाव के लिए जाने जाते थे। क्या होता अगर वे कोई महत्वपूर्ण बात कह देते और मेरे पास रिकॉर्डर न होता? और क्या होता अगर वे बाद में मुझे मिलने का समय देने से मना कर देते?

मैंने माइक का परिचय सिंघल से कराया। उन्होंने संक्षिप्त अभिवादन किया और मैंने अपने बनावटी लहजे में उन्हें हमारी मुलाकात का कारण समझाना शुरू किया। सिंघल ने मेरी बात ध्यान से सुनी, मेरे हर शब्द को समझा और बीच-बीच में सिर हिलाते रहे। जब मुझे लगा कि उनका ध्यान मेरी ओर है, तो मैंने कुछ परिचित नामों का जिक्र करने की कोशिश की। 'दरअसल, मायाबेन आपसे बहुत प्रभावित थीं और उन्हें लगता था कि आप राज्य के सबसे प्रतिभाशाली अधिकारियों में से एक हैं। हम अपनी फिल्म के लिए उनका प्रोफाइल भी बना रहे हैं।' इसका अपेक्षित प्रभाव पड़ा। उनके चेहरे पर जो गंभीर भाव थे, वे थोड़े नरम पड़ गए, उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा, 'वह बहुत अच्छी महिला हैं, बहुत आध्यात्मिक हैं।'

मैंने सोचा कि उनके आसपास के विवादों से जुड़ी किसी भी बात पर ध्यान न देना ही बेहतर होगा। भोलापन और सम्मान का प्रदर्शन करना ही बातचीत शुरू करने का आसान तरीका लगा। उन्होंने अपने बचपन की कहानियां सुनाईं, उच्च वर्ग से लड़ने की अपनी इच्छा, अपने दलित परिवार के प्रति पड़ोसियों के ब्राह्मणवादी रवैये और अपने परिवार के भरण-पोषण के लिए खुद जिम्मेदार होने के बारे में बताया। क्या पुलिस बल में शामिल होना उनके लिए मुक्ति का स्रोत था? उन्होंने जवाब दिया, 'असमानता हर जगह पनपती है, यहां तक कि इस व्यवस्था में भी जिसका मैं हिस्सा हूं।'

जो मुलाकात 15 मिनट के लिए शुरू हुई थी, वह एक घंटे तक खिंच गई। जब भी मैंने माइक से कहा, वह लगन से हर बात का नोट बनाते रहे, वहीं गिरीश सिंघल ने अपने व्यक्तित्व के बारे में कहानियां सुनाईं।

दुकान मालिक ने उसे बेंत से पीटा था जब उसने उसकी दुकान में किसी चीज को छूने की कोशिश की थी (उसकी नीची जाति के कारण), और उसने अक्षरधाम मंदिर में घुस आए आतंकवादियों का बहादुरी से सामना किया था। बात करते समय उसके चेहरे पर गर्व साफ झलक रहा था; जब मैंने उसकी उपलब्धियों की तारीफ की तो वह शरमा गया। ऐसे समय में जब उसके आसपास हर चीज तनाव का कारण थी, जब उसका करियर ही खतरे में लग रहा था, शायद किसी बाहरी व्यक्ति की इस सराहना ने उसे राहत दी। मॉक ड्रिल की बारीकियों को ध्यान

से सुनते हुए हमें अदरक वाली चाय पिलाई गई।

उस मुलाकात से हमारे लिए नए रास्ते खुल गए। हमें अगले हफ्ते फिर मिलने का समय मिल गया। लेकिन बातचीत में एक और बात सामने आई जो उम्मीद जगाने वाली थी; जब हम जाति व्यवस्था और खासकर पिछड़े वर्ग से होने के बावजूद शीर्ष पदों तक पहुंचने वाले लोगों के बारे में बात कर रहे थे, तब सिंघल ने एक ऐसे व्यक्ति का जिक्र किया जिन्हें वे अपना गुरु मानते थे, राजन प्रियदर्शी, जो गुजरात एटीएस के पूर्व प्रमुख थे और जिनका वे बहुत सम्मान करते थे। उन्होंने हमें बताया कि प्रियदर्शी भी ओबीसी वर्ग से थे और हमारी डॉक्यूमेंट्री को आकार देने और उसे एक नया दृष्टिकोण देने में हमारी मदद करेंगे। वे एक साल पहले सेवानिवृत्त हो चुके थे और अपने परिवार के साथ अहमदाबाद में रहते थे। शायद हमारे इरादों से आश्वस्त होकर, उन्होंने हमें 'सर' से मिलवाने की भी पेशकश की ताकि हम उनसे आसानी से मिल सकें।

सिंघल से एक घंटे बात करने के बाद, माइक और मैं भारी सुरक्षा घेरे वाले एटीएस मुख्यालय से बाहर निकले। हम दोनों चुप थे और बाहर निकलते समय हमने सुरक्षा गार्ड को सिर हिलाकर अभिवादन किया, जिसने हमें मुस्कुराकर अभिवादन किया और हमारे लिए एक ऑटो भी बुला दिया। एक किलोमीटर का सफर तय करने के बाद, हमने एक-दूसरे को देखा और मुस्कुराए। 'यह सही दिशा में जा रहा है, है ना?' माइक ने पूछा। मैंने सिर हिलाकर सहमति जताई।

अगले कुछ दिनों तक हमने सिंघल को आराम देने का फैसला किया; उन्हें बार-बार फोन करना केवल हताशा भरा लगता और संदेह पैदा करता। इस बीच मैंने उन्हें कुछ संदेश भेजे, जिनमें मैंने उनके बारे में की गई सारी जानकारी दी और बताया कि राज्य के प्रति उनकी लगन और समर्पण से हम कितने प्रभावित हुए हैं। हमारी अगली मुलाकात का दिन जल्द ही आ गया।

इस बार मैंने माइक को पीछे छोड़ने का फैसला किया। राजनेताओं का साक्षात्कार लेते समय या अधिकारियों के साथ अनौपचारिक बातचीत करते समय मैंने यह सबक सीख लिया था। वे हमेशा कम लोगों के आसपास और किसी के द्वारा नोट्स लिखने में सहज महसूस करते थे। बातचीत के रिकॉर्ड की बात करें तो, उस दिन मैं पहले से भी बेहतर तैयार था। पिछली मुलाकात में सिंघल के हमारे प्रति रवैये ने मुझे यह विश्वास दिलाया था कि अगली मुलाकात कुछ महत्वपूर्ण खुलासे वाली हो सकती है। और मैं निराश नहीं हुआ।

उस दोपहर, मैंने अपने हरे रंग के कस्टम-मेड कुर्ते को चार्जिंग पॉइंट से सावधानीपूर्वक अनप्लग किया। कुर्ते के ऊपरी हिस्से पर गहरे कश्मीरी कढ़ाई की गई थी, जिसके नीचे एक छोटा सा छेद था जो कैमरे के लिए बना था। एक पतला तार नीचे की ओर जा रहा था, जिस पर एक छोटा सा बटन लगा था; मुझे हर बार कुछ रिकॉर्ड करने के लिए इस बटन को ऑन और ऑफ करना पड़ता था। यह थोड़ा पेचीदा काम था, क्योंकि कैमरा बटन ऑन करते ही एक लाल बत्ती जल जाती थी। हालांकि मैंने इसका काफी अभ्यास कर लिया था, फिर भी हमेशा यह आशंका बनी रहती थी कि कहीं बत्ती जली ही न हो। यह सुनिश्चित करने के लिए मैं अपनी कलम को डेस्क से नीचे लुढ़कने देती थी। उसे उठाने के लिए झुकते समय, मैं जल्दी से कुर्ते के अंदर झाँककर देखती थी कि लाल बत्ती जली है या नहीं।

उस दिन जब मैंने मुख्यालय में कदम रखा, तो सुरक्षा गार्ड ने मुझे एक परिचित अंदाज़ में सिर

हिलाकर अभिवादन किया। गार्ड ने मुझे किसी तरह का एनआरआई फिल्म निर्माता समझा—अधिकांश अधिकारियों के सामने मेरे बारे में यही धारणा थी—और उसने हंसमुख अंदाज़ में पूछा, 'मैडम, शूटिंग नहीं करोगे क्या?' मैंने सिर हिलाकर इशारा किया कि मैं जल्द ही काम शुरू कर दूंगी।

उस दोपहर मैं सिंघल के केबिन में दाखिल हुआ, पूरी ईमानदारी से यही उम्मीद कर रहा था कि मेरा स्वागत एक सुखद नमस्कार से होगा। लेकिन उनके चेहरे के भाव से साफ था कि कुछ गड़बड़ है। वह कुछ फुटेज देख रहे थे जो उन्हें दी गई थी, यह उनके रिहायशी इलाके के कुछ बदमाशों की स्टिंग ऑपरेशन की फुटेज थी। एटीएस प्रभारी जैसे अधिकारी के लिए यह कोई मामूली बात नहीं थी। लेकिन बात कुछ और ही थी, पुलिस बल के कुछ अधिकारी उनके लिए मुसीबत खड़ी कर रहे थे।

लेकिन फिर उन्होंने बात अधूरी छोड़ दी। वे अपने हमेशा की तरह हंसमुख स्वभाव में लौट आए। उन्हें इस बात की जिज्ञासा थी कि मैंने उनके बारे में क्या शोध किया है। वे जानना चाहते थे कि क्या मैंने उनके बारे में दूसरों से पूछताछ की है, और क्या मुझे उनके बारे में सकारात्मक रिपोर्ट मिली हैं। अब मेरे लिए लॉस एंजिल्स की उस भोली-भाली लड़की का रूप धारण करने का समय था, जिसे अपने देश की स्थिति का जरा भी अंदाजा नहीं था, जो अपने सामने बैठे उस व्यक्ति से प्रभावित थी जिसने देश पर हुए सबसे चर्चित आतंकी हमलों में से एक में आतंकवादियों को मार गिराया था। 'आप बहुत बहादुर हैं। मैंने दरअसल अक्षरधाम हमलों के बारे में गूगल पर खोजबीन की और वाह, यह तो चौंकाने वाला था।' उन्होंने सिगरेट जलाई और मुझे अपने सवाल जारी रखने के लिए कहा। जैसे-जैसे बातें खुलती गईं, मुझे उनके कुछ हद तक परेशान जीवन की झलक मिली। जवाब ज्यादातर रहस्यमय थे। लेकिन लंबी चुप्पी, गहन निगाहें, परेशान चेहरे के साथ मेज पर उंगलियों का थपथपाना बहुत कुछ कह रहा था। मुझे उम्मीद थी कि सिंघल अपने विचारों और प्रतिक्रियाओं को लेकर सतर्क रहेंगे, लेकिन ऐसा लग रहा था कि अपने सामने एक अपेक्षाकृत हानिरहित साक्षात्कारकर्ता की कल्पना ने उन्हें उस दिन बोलने के लिए प्रेरित किया।

मैंने स्वेच्छा से उनके घर जाकर उनसे मिलने की पेशकश की, साथ में उनके परिवार, उनके बच्चे और उनकी पत्नी भी थीं। उन्होंने कहा, “अरे, ऐसा मत कीजिए। वे पहले से ही परेशान हैं। उन्हें मेरा काम पसंद नहीं है। वे मेरी नौकरी से नफरत करने लगे हैं। जब पुलिस वैन घर आती है, तो मैं उनसे कहता हूं कि वे दूर पार्क करें और मेरे दरवाजे के पास न आएं।” इसके तुरंत बाद उन्होंने मुठभेड़ों का जिक्र किया, जिससे मेरे लिए उनसे इस बारे में पूछताछ करना आसान हो गया। जब मैं यह किताब लिख रहा हूं, उनकी गिरफ्तारी के बाद, सिंघल सीबीआई के सामने अपनी भूमिका स्वीकार कर चुके हैं। इतना ही नहीं, उन्होंने अपने बयानों और एक रिकॉर्ड की गई बातचीत की ऑडियो रिकॉर्डिंग में इशरत जहां की फर्जी मुठभेड़ में कई राज्य सरकारी अधिकारियों की संलिप्तता भी साबित कर दी है। गुजरात उच्च न्यायालय द्वारा नियुक्त सीबीआई जांच ने अपने आरोपपत्र में निष्कर्ष निकाला है कि इशरत लश्कर-ए-तैबा की सदस्य नहीं थी और मुठभेड़ फर्जी थी।

अदालत में पेश की गई चार्जशीट में सिंघल द्वारा सीबीआई को दिए गए सबूतों को ध्यान में रखा

गया है। यह उल्लेखनीय है कि उनके द्वारा कबूलनामा और उनकी गिरफ्तारी उनके बड़े बेटे हार्दिक की असामयिक मृत्यु के तुरंत बाद हुई, जिनके बारे में सिंघल ने मुझसे पहली मुलाकात में स्नेहपूर्वक बात की थी। अपने पिता को लगातार मिल रही नकारात्मक खबरों से परेशान होकर उनके बेटे ने 2013 में आत्महत्या कर ली थी और सिंघल के करीबी लोगों का मानना है कि इससे उनके हृदय में परिवर्तन आया। उनकी ओर से ताजा खबर यह है कि उन्होंने पुलिस बल से इस्तीफा दे दिया है और सरकार द्वारा बार-बार दबाव डालने के बावजूद उन्होंने अपना इस्तीफा वापस लेने से इनकार कर दिया है।

यह दिलचस्प है कि सिंघल ने सीबीआई को यह भी बताया कि वह सरकारी गवाह बनना या दया की गुहार लगाना नहीं चाहता, बल्कि सह-आरोपियों की तरह मुकदमे का सामना करना चाहता है। किसी के मन की बात जानना कठिन है, और कोई केवल दूसरे व्यक्ति के बारे में जो जानता है उसके आधार पर ही अनुमान लगा सकता है, लेकिन सिंघल का सीबीआई से किया गया यह अजीब अनुरोध मुझे दिसंबर 2010 में हमारे बीच हुई बातचीत की याद दिलाता है।

जी.एल. सिंघल के साथ हुई रिकॉर्डेड बातचीत के कुछ अंश:

सवाल) गुजरात में आप पुलिसकर्मियों को कितना कुछ सहना पड़ता है? खासकर विवादों के चलते?

ए) यह एक अजीब स्थिति है। अगर कोई हमारे पास शिकायत लेकर आता है और हम शिकायतकर्ता को संतुष्ट कर देते हैं, तो हम सरकार को नाराज कर देते हैं और अगर हम सरकार को खुश कर देते हैं, तो हम शिकायतकर्ता को नाराज कर देते हैं, तो हम क्या करें, पुलिस फंस जाती है।

मुठभेड़ों में शामिल अधिकांश अधिकारी निचली जाति के हैं। क्या उनमें से अधिकांश का राजनीतिक व्यवस्था द्वारा इस्तेमाल किया गया और फिर उन्हें छोड़ दिया गया?

ए) जी हां, पुलिस विभाग में सभी लोग, यह एक शक्तिशाली विभाग है।

प्रश्न) दंगों ने राज्य को कैसे प्रभावित किया है? पुलिस को कैसे प्रभावित किया है?

ए) देखिए, मैंने दंगों के दौरान गुजरात में सेवा की है और मैं 1991 से यहीं हूँ। इसलिए मैंने कई दंगे देखे हैं। हमने 82, 83, 85, 87 और 92 में अयोध्या कांड के बाद दंगे देखे हैं।

मुसलमान अधिक प्रभावशाली थे। 2002 में अधिक मुसलमानों की हत्या हुई। देखिए, मुसलमानों के साथ ऐसा ही होता है। खासकर 2002 में, मुसलमान इतने सालों से हिंदुओं को मार रहे थे, इसलिए 2002 में जो कुछ भी हुआ, वह इतने सालों से मुसलमानों द्वारा की जा रही मार का बदला था। और पूरी दुनिया में हंगामा मच गया। उन्होंने उस स्थिति को नहीं देखा जिसमें हिंदुओं की हत्या हुई थी।

प्रश्न) मैंने राजन प्रियदर्शी से मुलाकात की, जिनसे आपने मुझे दलित होने के नाते बात करने के लिए कहा था।

ए) ओह, आपको पता है, मैंने राज्य में विभिन्न पदों पर और लगभग सभी अधिकारियों के साथ काम किया है। मैं पदानुक्रम में मध्य स्तर पर हूँ, इसलिए मुझे लगता है कि मैंने लगभग सभी के साथ काम किया है, लेकिन मुझे नहीं लगता कि मैंने कभी उनके जैसा कोई देखा है। वह सबसे

ईमानदार अधिकारी हैं। वह एक ऐसे अधिकारी हैं जिन्हें पुलिसिंग के बारे में सब कुछ पता है।
प्रश्न) और उन्होंने कहा कि सरकार चाहती थी कि वह समझौता करें लेकिन उन्होंने कभी नहीं किया?
ए) हाँ, उसने ऐसा कभी नहीं किया, मैं उसे जानता हूँ।
प्रश्न) क्या समझौता न करना और फिर भी व्यवस्था का हिस्सा बने रहना वाकई मुश्किल है?
ए) एक बार समझौता कर लेने के बाद आपको हर चीज से समझौता करना पड़ता है, खुद से, अपने विचारों से, अपनी अंतरात्मा से।
प्रश्न) क्या गुजरात में किसी अधिकारी के लिए अपने अंतरात्मा के साथ जीना मुश्किल है?
ए) जी हाँ, जी हाँ।
और जब कानून की समझ रखने वाला कोई वरिष्ठ अधिकारी समझौता कर लेता है, तो स्थिति मुश्किल हो जाती है।
प्र) आपके साथ भी यही हुआ था? आपको कितना संघर्ष करना पड़ा?
ए) कुछ लोग ऐसे होते हैं जो संघर्ष करने की कोशिश करेंगे। कुछ लोग ऐसे होते हैं जो मरते दम तक लड़ते रहेंगे। प्रियदर्शी उन्हीं में से एक है।
प्रश्न) आपका क्या कहना है?
ए) मैंने भी किया है।
प्रश्न) लेकिन क्या यह प्रणाली आपका समर्थन करती है?
ए) नहीं, बिलकुल नहीं। मैं दलित हूँ, लेकिन मैं ब्राह्मणों की तरह सब कुछ कर सकता हूँ। मैं अपने धर्म को उनसे कहीं अधिक जानता हूँ, लेकिन लोग इस बात को नहीं समझते। अगर मैं दलित परिवार में पैदा हुआ हूँ, तो क्या इसमें मेरी कोई गलती है?
प्र) क्या कभी ऐसा हुआ है कि उनकी सेवा करने के बावजूद, जब आपकी पदोन्नति की बात आती है, तो आपको आपकी जाति के कारण पदोन्नति नहीं दी जाती है?
ए) हां, कई बार।
देखिए, यह कई राज्यों में व्यापक रूप से प्रचलित है और गुजरात में भी व्यापक रूप से प्रचलित है। ये ब्राह्मण या क्षत्रिय किसी दलित या ओबीसी को अपने से छोटा नहीं मानेंगे।
प्रश्न) क्या आपके वरिष्ठ भी दलित हैं?
ए) नहीं, लेकिन मैं काम संभाल रहा हूँ, मैं उनके लिए अपरिहार्य हूँ, मैंने उनके लिए आतंकवाद के मामलों का सामना किया है। हाँ, वे भी अपना काम करते हैं, कभी-कभी वे मुझे ऐसे काम करने के लिए भेज देते हैं जो कांस्टेबल भी कर सकते हैं।
प्र) उषा [रादा, जिनके बारे में अध्याय 5 में और अधिक जानकारी है] मुझे बता रही थीं कि आप भी किसी विवाद में फंसी हुई थीं?
ए) 2004 में, हमारी मुलाकात चार लोगों से हुई थी। दो पाकिस्तानी थे और दो मुंबई के। उनमें से एक लड़की थी, उसका नाम इशरत था। यह एक बहुत चर्चित मामला है। उच्च न्यायालय ने इस बात की जांच करने का निर्देश दिया है कि यह मुठभेड़ फर्जी थी या असली।
सवाल) तो क्या यह नकली है? और आप इसमें क्यों शामिल हैं?

ए) क्योंकि मैं उस घटना में मौजूद था।
प्र) लेकिन आप इसमें क्यों शामिल हैं?
ए) देखिए, ये सभी मानवाधिकार आयोग यही तो करते हैं।
आप जानते हैं कि कुछ मामले कठिन होते हैं और उनसे अलग तरीके से निपटना पड़ता है। देखिए अमेरिका ने 9/11 के बाद क्या किया। ग्वांतानामो नाम की एक जगह थी। लोगों को वहाँ रखा गया, हिरासत में लिया गया, यातनाएँ दी गईं। मगर ठीक है ना। हर किसी को यातना नहीं दी जाती। 10 प्रतिशत लोग यातना झेल चुके हैं और भले ही उन्होंने कुछ न किया हो, 1 प्रतिशत गलत हो सकते हैं। इसलिए देश को बचाने के लिए यह करना जरूरी है।
सवाल) तो ये लोग कौन थे, लश्कर के आतंकवादी?
मुर्गा।
प्रश्न) क्या वो लड़की भी, इशरत?
ए) देखिए, वह पहले नहीं थी, लेकिन उसी घटना में उसकी हत्या कर दी गई। मेरा मतलब है, वह हो भी सकती थी और नहीं भी। या हो सकता है उसे एक बहाने के तौर पर इस्तेमाल किया गया हो।
प्र) मेरा मतलब है कि आप सभी, वंजारा, पांडियन, अमीन, परमार और बाकी सभी लोग निचली जाति के हैं। आप सभी ने राज्य के इशारे पर काम किया, चाहे जो भी काम आपने किया हो। तो क्या यह एक तरह से इस्तेमाल करो और छोड़ दो वाली बात है?
ए) जी हाँ, हम सब। सरकार ऐसा नहीं सोचती। उन्हें लगता है कि हम उनके वचन के गुलाम हैं और उनकी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए हमेशा तैयार रहते हैं। हर सरकारी कर्मचारी, चाहे वह कुछ भी करे, सरकार के लिए ही करता है। और फिर न तो समाज और न ही सरकार आपको पहचानती है। वंजारा ने जो किया, उसके बावजूद किसी ने उसका साथ नहीं दिया।
प्र) लेकिन महोदय, आप लोगों ने जो कुछ भी किया, वह सरकार, राजनीतिक शक्तियों के इशारे पर किया था, तो वे ऐसा क्यों नहीं करते...?
A) System ke saath rehna hai to logon ko compromise karna padta hai.
प्रश्न) लेकिन प्रियदर्शी [उनके वरिष्ठ] सरकार के करीबी नहीं थे?
ए) वह सरकार के करीबी थे, लेकिन जब भी सरकार उनसे कुछ गलत काम करने को कहती, तो वे ऐसा करने से इनकार कर देते थे।
प्र) जी हाँ, उन्होंने मुझे बताया कि श्री पांडियन समेत कई लोगों ने उनसे एक मुठभेड़ करने के लिए कहा था। लेकिन उन्होंने इनकार कर दिया?
ए) पांडियन भी जेल में है, हालांकि मुझे उसके बारे में ज्यादा जानकारी नहीं है।
प्र) वह महारानी के इतने करीब कैसे पहुंच गया?
ए) जी हां, एटीएस में शामिल होने से पहले वह खुफिया विभाग में थे।
प्र) देखिए, मुझे पता है कि मुख्यमंत्री और गृह मंत्री दोनों अपने-अपने फायदे के लिए काम कर रहे हैं? तो क्या अब आपके लिए चीजें आसान हो गई हैं?

ए) कुछ चीजें हमारे हाथ में नहीं हैं। हमने व्यवस्था के लिए काम किए हैं।
प्र) क्या आप पुलिस की निगरानी में हैं या आपका मामला समाप्त हो चुका है?
ए) मामला अभी भी चल रहा है। बहुत ज़ोरों से।
प्र) तो क्या राज्य आपकी मदद कर रहा है या नहीं?
ए) देखिए, चाहे कांग्रेस हो या भाजपा, राजनीतिक दल तो राजनीतिक दल ही होते हैं। वे सबसे पहले अपना लाभ देखते हैं, कि किन परिस्थितियों में वे कुछ हासिल कर सकते हैं। हमारे मामले में वे मदद तो कर रहे हैं, लेकिन साथ ही यह भी देख रहे हैं कि उन्हें क्या मिलेगा और क्या नहीं, अगर यह उल्टा पड़ जाए तो उन्हें क्या लाभ होगा।
ए) हमारे एनकाउंटर की जांच कर रहे लोगों को देखिए। करनैल सिंह, जो दिल्ली में स्पेशल सेल के संयुक्त पुलिस आयुक्त थे और जिनका तबादला मिजोरम कर दिया गया है। उनके कार्यकाल में 44 एनकाउंटर हुए। और अब वे हमारी एसआईटी के अध्यक्ष हैं। फिर सतीश वर्मा नाम का एक अधिकारी है, जो मानवाधिकारों का समर्थक होने का दावा करता है, लेकिन उसने करीब 10 एनकाउंटर किए हैं। वह खुद को बेदाग साबित करने की कोशिश करता है।
प्रश्न) इसका तार्किक अंत क्या होगा?
ए) देखते हैं, कुछ भी नहीं निकलेगा।
सवाल) लेकिन आप और कई अन्य अधिकारी भी सोहराबुद्दीन मामले में शामिल थे, है ना?
ए) हाँ।
प्रश्न) मैं गीता जौहरी से मिला।
ए) जी हाँ, उन्होंने बहुत अच्छी जाँच की और बाद में रजनीश राय ने भी। उन्होंने अच्छा काम किया। उन्होंने अकेले ही लगभग 13 लोगों को गिरफ्तार किया।
सवाल) लेकिन अमित शाह वाली बात क्या है? मैंने आपके अधिकारियों के बारे में भी सुना है... मतलब, मुठभेड़ों को लेकर अधिकारियों और राजनीति का कोई गुट है। मुझे ऐसा इसलिए लगा क्योंकि मुझे कई अन्य मंत्रियों से मिलने का मौका मिला।
ए) देखिए, मुख्यमंत्री भी। सभी मंत्रालय और मंत्रीगण, सब बस नाममात्र के फैसले लेते हैं। सभी निर्णय मुख्यमंत्री द्वारा लिए जाते हैं। मंत्रीगण जो भी निर्णय लेते हैं, उन्हें मुख्यमंत्री की अनुमति लेनी पड़ती है।
प्र) फिर वह आपके मामले समेत, बिना किसी नुकसान के कैसे बचा रहा, उसी मामले में उस पर अभियोग क्यों नहीं चलाया गया?
ए) क्योंकि वह सीधे तौर पर तस्वीर में नहीं आता। वह नौकरशाहों को आदेश देता है।
सवाल) उसी मापदंड के आधार पर, अगर आपके मामले में अमित शाह को गिरफ्तार किया गया था, तो मुख्यमंत्री को भी गिरफ्तार किया जाना चाहिए था?
ए) हाँ।
2007 में, सोहराबुद्दीन मुठभेड़ों के सिलसिले में अधिकारियों की गिरफ्तारी के ठीक बाद, सोनिया गांधी यहाँ थीं और उन्होंने अधिकारियों को 'मौत के सौदागर' कहा था। उसके बाद मोदी हर सभा में चिल्लाते हुए निकले, 'मौत के सौदागर? सोहराबुद्दीन कौन था, उसे मारा तो अच्छा

हुआ या नहीं हुआ?' और उसके बाद उन्हें भारी बहुमत मिला। देखिए, उन्हें वही मिला जो वे चाहते थे।

सवाल) और जिन अधिकारियों के माध्यम से उसने यह काम करवाया, क्या वह अब उनकी मदद नहीं कर रहा है?

ए) नहीं, वे सब जेल में हैं।

प्र) क्या उसने कभी आपसे आपकी मुलाकातों के बारे में पूछताछ की?

A) No, he never [did], dekho inko sabka benefit lena hota hai, riots hue muslims ko maara, benefit liya, ispar bhi kiya.

प्र) लेकिन क्या आपके शाह साहब अब गृह विभाग में वापस आएंगे?

ए) नहीं, वह ऐसा नहीं कर पाएगा, क्योंकि मुख्यमंत्री को उससे डर लगता है, क्योंकि वह गृह विभाग में बहुत लोकप्रिय हो गया था। वह सरकार की कमजोरियों को जानता है, इसलिए मुख्यमंत्री नहीं चाहेगा कि कोई गृह मंत्री सब कुछ जाने और वहां मौजूद रहे।

प्रश्न) तो क्या अब मुख्यमंत्री और गृह मंत्री के बीच मतभेद हैं?

A) No, this CM, Modi jaise abhi aap bol rahe the, woh opportunist hai. Apna kaam nikaal liya, sab got his work done.

प्रश्न) उसका घिनौना काम।

मुर्गा।

प्र) तो इस एक मुठभेड़ के अलावा आपने कितनी मुठभेड़ें की हैं?

ए) हम्म...लगभग 10 शायद...

प्रश्न) क्या मैं सभी प्रमुख व्यक्तियों के नाम जान सकता हूँ?

ए) नहीं नहीं।

फर्जी मुठभेड़ों की जांच की खबरें गुजरात के सभी दैनिक समाचार पत्रों की सुर्खियों में छाई रहीं, जिससे मुझे सिंघल से बिना शक पैदा किए तीखे सवाल पूछने का बहाना मिल गया। जैसे-जैसे दिन बीतते गए और मैं सिंघल से मिलता गया, मेरे मन में अपराधबोध और सहानुभूति की भावना जाग उठी। क्या वह सचमुच एक निर्दोष व्यक्ति थे, जिनके साथ व्यवस्था ने अन्याय किया था, जैसा कि वह मुझे विश्वास दिलाना चाहते थे? वह मुझे उदाहरण देते या फिल्मों के विभिन्न किरदारों का जिक्र करते हुए अपनी स्थिति की तुलना करते, बातचीत भगवद गीता के श्लोकों और धर्म पर उनकी निर्भरता की ओर मुड़ जाती। हम ओशो और यहां तक कि मेरी धूम्रपान की आदत के बारे में भी बात करते। उन्होंने सुझाव दिया, 'अगर हो सके तो इसे छोड़ दो, यह अच्छा नहीं है।' उनके साथ मेरी गहरी दोस्ती हो रही थी। मैं एक बाहरी व्यक्ति था, जो वहां उन्हें अंदरूनी नजरिए से आंकने के लिए मौजूद नहीं था।

मुझे समझ नहीं आ रहा था कि यह आदमी आखिर है क्या, और एक दिन जब मैं हॉस्टल लौटा, तो सीधे पीसीओ के पास चला गया। मैं बहुत उलझन में था और मैंने तय किया कि मुझे अम्मा से पूछना ही होगा। मुझे सिंघल के प्रति सहानुभूति हो रही थी। लेकिन मैं ऐसा नहीं कर सकता था। उसका रवैया उन अधिकारियों जैसा नहीं था जिनसे मैं पहले मिला था, जो निर्मम हत्याओं और

मुठभेड़ों पर गर्व करते थे। लेकिन निर्मम हत्याओं का कोई औचित्य नहीं हो सकता, अगर कोई व्यक्ति इसमें शामिल हो, या कोई अधिकारी सच्चाई को नज़रअंदाज़ कर दे। जैसा कि मेरी माँ ने उस दिन मुझसे कहा था, ऐसे लोग होते हैं जो अपने व्यवहार और कार्यों के लिए कई कारण बता सकते हैं। आपको बस वापस जाकर देखना होगा कि उन्होंने वास्तव में क्या किया था, और आपको पता चल जाएगा कि उनके स्पष्टीकरण में कोई सच्चाई है या नहीं।

मुझे स्पष्ट था कि वर्षों तक चुप रहकर सिंघल भी इस अपराध में उतना ही भागीदार था जितना कि अन्य, लेकिन राज्य प्रशासन द्वारा ऐसे कमजोर पुलिसकर्मियों का बेशर्मी से इस्तेमाल करना अनसुना नहीं किया जा सकता था। जिस 'इस्तेमाल करो और छोड़ दो' नीति के बारे में सिंघल ने उस गुप्त कैमरे पर बात की थी जिसे मैं अपने साथ ले गया था, वह वर्षों बाद तब सामने आई जब एक अन्य शीर्ष अधिकारी डी.जी. वंजारा ने इसकी शिकायत की। वंजारा, जो मोदी सरकार के शीर्ष अधिकारियों में से एक हैं और चार फर्जी मुठभेड़ों में अपनी भूमिका के लिए जेल में हैं, ने गुजरात राज्य सरकार को लिखे एक पत्र में सिंघल द्वारा कही गई हर बात को दोहराया। उन्होंने कहा कि उनके जैसे अधिकारियों का इस्तेमाल अमित शाह जैसे मंत्रियों की महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने के लिए किया जा रहा था, और जिस व्यक्ति को वे अपना भगवान मानते थे, मुख्यमंत्री नरेंद्र मोदी ने उन्हें धोखा दिया था। वंजारा (जिन्होंने बाद में राज्य आईपीएस से इस्तीफा दे दिया) के बयान के पीछे कोई राजनीतिक मकसद है या नहीं, यह एक अस्पष्ट सवाल बना रहेगा। लेकिन सच्चाई यह है कि उनके और सिंघल जैसे कई अधिकारियों को उस राज्य की वेदी पर इस्तेमाल किया गया था जिसे अब आतंकवाद मुक्त राज्य होने का दावा किया जाता है।

सिंघल कोई अपवाद नहीं थे, बल्कि वे एक आदर्श थे। यह बात मुझे आने वाले दिनों में उनके वरिष्ठ अधिकारी राजन प्रियदर्शी, राज्य के पूर्व पुलिस आयुक्त और अन्य अधिकारियों से पता चली। सच्चाई की खोज अभी शुरू ही हुई थी।

Rajan Priyadarshi

कॉर्पोरेट जगत में एक शब्द है 'टेकअवे'—इसका मतलब है किसी सम्मेलन, बैठक या बातचीत के बाद मिलने वाली कोई लाभदायक चीज़। राजन प्रियदर्शी मेरे लिए एक आकस्मिक 'टेकअवे' थे। इसे ईश्वरीय हस्तक्षेप ही कहा जा सकता है, क्योंकि इस सेवानिवृत्त पुलिस अधिकारी ने मेरी जांच में बहुत बड़ा योगदान दिया। मुझे यह स्वीकार करना होगा कि जब तक उनके जूनियर गिरीश सिंघल ने हमारी बातचीत के दौरान उनके बारे में बात नहीं की, तब तक मैंने राजन प्रियदर्शी नाम के किसी पुलिस अधिकारी को नहीं देखा था। मैंने गुजरात से काफी रिपोर्टिंग की थी और वहां के अधिकांश पुलिस अधिकारियों को जानता था, या कम से कम मुझे ऐसा ही लगता था। मैं कई लोगों से मिला नहीं था, लेकिन समाचार रिपोर्टों और पुलिस बिरादरी के साथ साक्षात्कारों ने यह सुनिश्चित किया कि मेरे पास प्रासंगिक लोगों के बारे में पर्याप्त जानकारी थी।

इसलिए यह आश्चर्यजनक था जब सिंघल ने उस नाम का जिक्र किया जिससे मैं बिल्कुल अपरिचित था। उनसे मिलने जाने से पहले मैंने उनके बारे में कोई जानकारी नहीं जुटाई थी। मैंने ऐसा सिर्फ इसलिए किया ताकि सिंघल के मन में कोई संदेह न पैदा हो और उनकी सलाह के अनुसार पूरी लगन से काम करने के बारे में उन्हें आश्वस्त कर सकूं। इससे सिंघल को मुझ पर भरोसा करने में मदद मिली कि मैं अन्य पुलिस अधिकारियों से भी मिल रहा था, खासकर उन लोगों से जो विवादों से दूर थे, जो खबरों में नहीं थे। राजन प्रियदर्शी के बारे में एक और दिलचस्प बात थी। जून 2004 में टाइम्स ऑफ इंडिया को दिए एक साक्षात्कार में, 1980 बैच के आईपीएस अधिकारी प्रियदर्शी ने कहा था कि राज्य के उच्च पदस्थ अधिकारियों में से एक होने के बावजूद, उनके गांव में उनके साथ अछूत जैसा व्यवहार किया जाता था। टीओआई की समाचार रिपोर्ट में कहा गया था,

जीवन के विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े लोग अक्सर अनेक समस्याओं के साथ हाथ जोड़कर उनके पास आते हैं। लेकिन, जब वही प्रियदर्शी अपने पैतृक गांव देहगाम तालुका के कडागरा जाने का फैसला करते हैं, तो स्थिति पूरी तरह बदल जाती है।

यह वरिष्ठ पुलिस अधिकारी अभी भी गांव के उच्च जाति वर्ग के इलाके में घर नहीं खरीद पा रहा है। उसका घर अब भी कडागरा के दलित बस्ती में है। हालांकि प्रियदर्शी इस विषय पर कुछ भी बोलने से कतराते हैं, सूत्रों का कहना है कि पिछले साल तक गांव का नाई भी दलित ग्राहकों को सेवा नहीं देता था।

तकनीकी दृष्टि से देखा जाए तो फिल्म के लिहाज से इससे मेरा काम काफी आसान हो गया। इसके अलावा, जांच के अंत तक पर्याप्त सबूत मिल गए थे जिनसे पता चलता था कि प्रशासन द्वारा हेरफेर और दुर्व्यवहार का शिकार हुए अधिकांश अधिकारी पिछड़े वर्गों से थे। लेकिन मुझसे एक बहुत महत्वपूर्ण बात छूट गई थी। राजन प्रियदर्शी 2007 में गुजरात एटीएस के महानिदेशक थे जब गुजरात सीआईडी ने फर्जी मुठभेड़ों की जांच शुरू की थी। इतना ही नहीं, 2002 के दंगों के दौरान वे राजकोट के आईजी के रूप में एक बहुत महत्वपूर्ण पद पर भी थे।

और इस तरह माइक और मैं राजन प्रियदर्शी से मिले। मुझे नहीं लगता कि हम इस 60 वर्षीय

व्यक्ति से अपनी पहली मुलाकात कभी भूल सकते हैं। उनका अहमदाबाद के मध्यमवर्गीय इलाकों में से एक, नरोदा पाटिया में एक मंजिला बंगला था। यह वही निर्वाचन क्षेत्र था जहाँ हमारी एक और सहयोगी मायाबेन कोडनानी विधायक थीं। यह वही इलाका था जहाँ सबसे भयावह सांप्रदायिक दंगे हुए थे और जहाँ सबसे अधिक लोगों की जान गई थी।

प्रियदर्शी का घर ढूंढने में हमें काफी मशक्कत करनी पड़ी; एक पूर्व एटीएस प्रमुख के लिए, जिन्होंने 30 वर्षों से अधिक समय तक गुजरात में कई महत्वपूर्ण पदों पर कार्य किया था, उनका घर काफी साधारण सा था। उनके घर तक पहुंचने के लिए एक सरकारी स्कूल और कई चॉल और नाले पार करने पड़ते थे। उनके बारे में ज्यादा लोग नहीं जानते थे, लेकिन उनके पड़ोसियों ने उन्हें उस पुलिसवाले के रूप में पहचान लिया, जिसकी तस्वीर फ्रेम करवाकर घर के प्रवेश द्वार पर टांगी हुई थी।

प्रियदर्शी बेसब्री से हमारा इंतज़ार कर रहे थे, जैसे ही हमारी टैक्सी उनकी गली में पहुँची, उन्होंने हमें हाथ हिलाकर अभिवादन किया। अपने घर की पहली मंज़िल से उन्होंने खुशी से कहा, 'स्वागत है!' हम दोनों उनके घर में दाखिल हुए और उसकी सादगी भरी बारीकियों को निहारने लगे। प्रवेश द्वार पर ही एक पट्टिका लगी थी जिस पर प्रियदर्शी के करियर में विभिन्न पदों का विवरण था। जैसे ही हम अंदर गए, गाँव के पहलवान जैसी मूंछों और सफ़ेद दाढ़ी वाले एक जोशीले सज्जन ने हमसे हाथ मिलाया। हमें दो सूती शॉल, कलम और नोटबुक दिए गए।

अगले कुछ मिनटों में जो कुछ हुआ वह बेहद मजेदार था। प्रियदर्शी को माइक तुरंत पसंद आ गया। नींबू पानी आ गया। हम अभी इस बात से उबर ही रहे थे कि हमारा इतना गर्मजोशी से स्वागत किया जा रहा था कि तभी 30 साल की उम्र का एक आदमी 10 साल के एक लड़के के साथ कमरे में दाखिल हुआ। वे प्रियदर्शी के बेटे और पोते थे और पोते के हाथ में एक डिजिटल कैमरा था। हमें बताया गया, 'हमारे यहाँ विदेशी फिल्म निर्माता रोज़ नहीं आते, यह हमारे लिए सम्मान की बात है। कृपया एक तस्वीर ले लीजिए।'

जब आप गुप्त रूप से काम कर रहे होते हैं, तो आप कभी नहीं चाहते कि आप सार्वजनिक नज़र में आएं या अपने गुप्त अस्तित्व का कोई निशान छोड़ें। लेकिन तस्वीरें खिंचवाने से मना करना इस स्थिति में मददगार साबित नहीं होता। साथ ही, उनके करियर ग्राफ के कालक्रम वाली पट्टिका पर एक सरसरी नज़र डालने से संकेत मिला कि प्रियदर्शी मददगार साबित हो सकते हैं। माइक और मैंने उनके पोते की इच्छा का पालन किया और बैठक कक्ष में ले जाने से पहले कुछ तस्वीरें खिंचवाई गईं। बैठक कक्ष में प्रियदर्शी की राज्य और कैबिनेट मंत्रियों के साथ-साथ पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी के साथ एक तस्वीर थी।

'तो आप हमारी तस्वीरों को फ्रेम करवाना चाहते हैं, महोदय?' मैंने उत्सुकतावश पूछा, यह जानने के लिए कि जिन तस्वीरों के लिए हमने पोज़ दिया था, उनका उद्देश्य क्या है। हमें बताया गया कि वे एक स्थानीय समाचार पत्र मासिक रूप से प्रकाशित करते हैं और उसे अपने जान-पहचान वालों को मुफ्त में बांटते हैं। यह जानकर हमें राहत मिली। हमने इस आश्वासन के साथ बातचीत समाप्त की कि वे तस्वीरों का उपयोग तभी करेंगे जब हम गुजरात में फिल्म के सभी कलाकारों से अपना परिचय करा लेंगे। 'हम नहीं चाहते कि हमें बेवजह ध्यान मिले, महोदय, हम गुमनाम

रहना चाहते हैं,' मैंने अनुरोध किया और उन्होंने विनम्रतापूर्वक मेरी बात मान ली।
यह बातचीत एकालाप थी।
एक घंटे के भीतर ही हमें एहसास हो गया कि प्रियदर्शी ने हमें अपनी जीवनी का संक्षिप्त विवरण लिखने के लिए पर्याप्त सामग्री दे दी है। वे हर मायने में एक विलक्षण व्यक्तित्व थे। बिल्कुल वैसे ही जैसे किसी फिल्म या उपन्यास में देखने को मिलते हैं। लेकिन इस मुलाकात से मुझे गुजरात में राज्य तंत्र के कामकाज के तरीके के बारे में कुछ बेहद महत्वपूर्ण जानकारी मिली। उन्होंने हमें उस गांव के नाई के बारे में बताकर चौंका दिया, जिसने उनके बाल काटने से इनकार कर दिया था और इसलिए उन्हें गुजरात बॉर्डर रेंज के आईजी पद पर रहते हुए दलित निवास में घर बनाना पड़ा। दलित होने का टैग उनका पीछा नहीं छोड़ रहा था। गुजरात पुलिस बल में अपने कार्यकाल के दौरान कई मौकों पर उन्हें अपने वरिष्ठों के गंदे काम करने के लिए मजबूर किया गया। लेकिन उन्होंने आदेश मानने से इनकार कर दिया। 'यह बहुत अजीब था, आप जानते हैं, ऐसा लगता था कि अगर आप दलित हैं, तो दफ्तर में कोई भी कुछ भी कह सकता है और बच निकल सकता है। कोई सम्मान नहीं था। मेरा मतलब है, एक दलित अधिकारी को निर्मम हत्या करने के लिए कहा जा सकता है क्योंकि (कथित तौर पर) उसमें आत्मसम्मान नहीं है, कोई आदर्श नहीं है।' गुजरात पुलिस में उच्च जाति के लोग ही सबकी नजरों में अच्छे होते हैं।
जैसे-जैसे हमारी मुलाकात आगे बढ़ी, प्रियदर्शी की चिंता बढ़ती गई, लेकिन तब तक वह बहुत कुछ कह चुके थे। हमसे उनकी तीसरी मुलाकात के दौरान, मैं उनसे अकेले मिलने गया। मैंने माइक को उस दिन आराम देने का फैसला किया था ताकि वह हमारी शूटिंग के लिए माया कोडनानी के कार्यालय का जायजा लेने जा सकें। यह सुझाव माइक ने खुद दिया था। 'क्या हमें कुछ ऐसा नहीं करना चाहिए जिससे उन्हें यकीन हो जाए कि हम सचमुच फिल्म निर्माता हैं?' कोडनानी के कर्मचारी उन्हें कार्यालय घुमाने के लिए बहुत उत्सुक थे। शाम को उनका एक संदेश आया: क्या मुझे घर में कोई खास जगह चाहिए और क्या हम उनके द्वारा बनाए गए रविवार के दोपहर के भोजन में रुचि रखेंगे? मैंने तुरंत 'हाँ' में जवाब दिया।
जिस दिन मेरी मुलाकात प्रियदर्शी से हुई, उस दिन उन्होंने अपने प्रकाशित अखबार की प्रतियां छानकर देखीं। 'आप इनमें से जो चाहें ले सकते हैं। मुझे लगता है कि अब आपके पास मेरे बारे में सारी जानकारी है। आप कब से शूटिंग शुरू करेंगे?' वे चिंतित थे, उनकी शारीरिक भाषा से यह स्पष्ट था। उन्होंने अपनी सुरक्षा के लिए कुछ ज्यादा ही जानकारी दे दी थी। राज्य एटीएस प्रमुख के रूप में अपने कार्यकाल के दौरान की बातें, तत्कालीन गृह मंत्री अमित शाह के साथ उनके बंगले पर देर रात हुई गुप्त मुलाकातों की बातें और एक बार किसने उन्हें हिरासत में लिए गए एक आरोपी को मारने का आदेश दिया था, इन सब बातों का जिक्र उन्होंने किया था। राजन प्रियदर्शी से जब भी मेरी मुलाकात हुई, मुझे लगा कि मैं और भी नई जानकारी लेकर लौटा हूं।
प्रश्न) आपके मुख्यमंत्री नरेंद्र मोदी गुजरात में बहुत लोकप्रिय हैं?
ए) हां, वह सबको बेवकूफ बनाता है और लोग उसके झांसे में आ जाते हैं।
प्रश्न) उस स्थिति में, अतिरिक्त महानिदेशक के रूप में, आपको उनके अधीन काम करने में कठिनाई होती?

ए) उनमें मुझे कोई भी गैरकानूनी काम करने के लिए मजबूर करने की हिम्मत कभी नहीं हुई।
प्रश्न) यहाँ अराजकता चरम पर है, है ना? ईमानदार अधिकारी तो शायद ही कोई हैं?
ए) ऐसे लोग बहुत कम हैं। नरेंद्र मोदी नाम का यह व्यक्ति पूरे राज्य में मुसलमानों की हत्याओं के लिए जिम्मेदार है।
सवाल) अच्छा, मैंने सुना है कि पुलिस ने भी सरकार का साथ दिया?
ए) उन सभी के साथ, जैसे कि पी.सी. पांडे के साथ, यह सब उनकी उपस्थिति में हुआ।
प्रश्न) अधिकांश अधिकारियों का कहना है कि उन्हें गलत तरीके से फंसाया गया है?
ए) उन्होंने जो गलत किया है, उसी वजह से अब उन्हें जेल जाना पड़ रहा है। उन्होंने मुठभेड़ में एक युवती की हत्या कर दी।
प्र) सचमुच?
ए) हां, उन्होंने उसे लश्कर की आतंकवादी कहा था। वह मुंब्रा की रहने वाली थी। उनके बारे में यह कहानी गढ़ी गई थी कि वह एक आतंकवादी है, जो मोदी को मारने के लिए गुजरात आई थी।
प्र) और यह गलत है?
ए) जी हाँ, यह गलत है।
सवाल) और जब से मैं यहां आया हूं, हर कोई सोहराबुद्दीन मुठभेड़ की बात कर रहा है?
ए) उस मुठभेड़ की चर्चा पूरे देश में हो रही है। उन्होंने मंत्री के इशारे पर सोहराबुद्दीन और तुलसी प्रजापति को मार डाला।
ये मंत्री अमित शाह, इन्हें तो मानवाधिकारों पर कभी भरोसा ही नहीं था। ये हमसे कहते थे कि मुझे इन मानवाधिकार आयोगों पर विश्वास नहीं है। और अब देखिए, अदालतों ने इन्हें जमानत भी दे दी है।
प्र) तो, आपने कभी उनके अधीन काम नहीं किया?
ए) मैंने किया था, जब मैं एटीएस प्रमुख था। उन्होंने वंजारा का तबादला कर मुझे [लाइब्रेरी] में बुलाया। मैं मानवाधिकारों में विश्वास रखने वाला व्यक्ति हूँ। तो शाह ने मुझे अपने बंगले पर बुलाया। अब तक मैं किसी के बंगले पर नहीं गया था। न ही किसी के घर या दफ्तर पर। तो मैंने उनसे कहा, महोदय, मैंने आपका बंगला नहीं देखा है। वे हैरान रह गए और पूछा, आपने मेरा बंगला क्यों नहीं देखा? फिर उन्होंने कहा, ठीक है, मैं आपको अपनी निजी गाड़ी भेज देता हूँ, आप उसमें आ जाइए। तो मैंने कहा, ठीक है, आप मुझे अपनी गाड़ी भेजिए। तो जब मैं पहुँचा तो उन्होंने कहा, 'अच्छा आपने एक बंदे को गिरफ्तार किया है ना, जो अभी एटीएस में आया है, उसे मार डालने का है।'
I didn't react. And then he said, 'dekho maar daalo, aise aadmi ko jeene ka koi haq nahi hai.'
इसलिए मैं तुरंत अपने कार्यालय आया और अपने कनिष्ठों की बैठक बुलाई। मुझे डर था कि अमित शाह उन्हें सीधे आदेश देकर उसे मरवा देंगे। इसलिए मैंने उनसे कहा, देखो, मुझे उसे मारने का आदेश मिला है, लेकिन कोई उसे हाथ नहीं लगाएगा, बस उससे पूछताछ की जाएगी। मुझे बताया गया है कि मैं यह नहीं कर रहा हूँ, इसलिए तुम्हें भी यह नहीं करना है।

प्र) यह तो वाकई बड़ी बहादुरी थी!

A) This Narendra Modi called me the day I was retiring. And then he said, 'So what are you planning to do now' and all those kind of questions. So I told him how I was stifled. Then he said, 'Achcha ye bataao, sarkaar ke khilaaf kaun kaun log hai, matlab kitne afsar sarkaar ke khilaaf hai.'

फिर मैंने मोदी से पूछा, 'क्या मुझे आपसे कुछ पूछने की अनुमति है?' तो उन्होंने कहा, 'पूछो।' मैंने पूछा, 'पिछले दो दशकों में मैंने विभिन्न पदों पर कार्य किया है, क्या आपने मेरे खिलाफ कुछ सुना है?' उन्होंने जवाब दिया कि मैं बहुत अच्छा काम कर रहा था। तब मैंने उनसे कहा, 'सर, अगर ऐसा है तो पिछले चार वर्षों से मेरे वरिष्ठ अधिकारियों और गृह सचिवों ने मेरी एसीआर (अदालती रिपोर्ट) को उत्कृष्ट और असाधारण बताया है, तो आपने उन्हें क्यों कमतर आंका? आपने मेरे प्रदर्शन को कमतर क्यों आंका?' मैंने उन्हें बताया कि मुझे यह सारी जानकारी आरटीआई के माध्यम से मिली है। वे स्तब्ध रह गए। उन्होंने कहा, 'क्या मैं अपने अधिकारियों और गृह सचिव को फोन नहीं करता?' मैंने कहा, 'सर, आपको गृह सचिव को फोन करने की जरूरत नहीं है, आपको सब कुछ पता था क्योंकि फाइल आपके पास आई थी।'

तो असल में मैं महानिदेशक बन सकता था लेकिन उन्होंने मुझे इसकी अनुमति नहीं दी।

प्र) तो आपके राज्य में कोई डीजी क्यों नहीं है?

ए) क्योंकि मोदी को कुलदीप शर्मा नामक अधिकारी से बदला लेना है।

प्र) और मुझे बताया गया है कि उनके पास अधिकारियों की अपनी एक टीम है।

ए) आपको पता है, जब मैं राजकोट का आईजीपी था, तब जूनागढ़ के पास सांप्रदायिक दंगे हुए थे। मैंने कुछ लोगों के खिलाफ एफआईआर दर्ज कराई। गृह मंत्री ने मुझे फोन किया और पूछा, 'राजन जी, आप कहां हैं?' मैंने कहा, 'सर, मैं जूनागढ़ में हूं।' तो उन्होंने कहा, 'अच्छा, तीन नाम लिखो और इन तीनों को गिरफ्तार करो।' मैंने कहा, 'सर, ये तीनों मेरे साथ बैठे हैं और मैं आपको बता दूं कि ये तीनों मुसलमान हैं और इन्हीं की वजह से शांति बहाल हुई है। इन्हीं लोगों ने अपने प्रयासों से हिंदू और मुसलमानों को एकजुट किया और दंगों को समाप्त कराया।' तो उन्होंने कहा, 'देखो, मुख्यमंत्री साहब ने कहा है' और फिर वही मुख्यमंत्री नरेंद्र मोदी थे, [और उन्होंने मुझे बताया] कि यह मुख्यमंत्री का आदेश था। मैंने कहा, 'सर, मैं ऐसा नहीं कर सकता, भले ही यह मुख्यमंत्री का आदेश हो, क्योंकि ये तीनों निर्दोष हैं।'

प्र) फोन पर आपसे कौन बात कर रहा था?

ए) गृह मंत्री गोर्धन ज़ादाफ़िया।

प्रश्न) यह कब हुआ था?

ए) लगभग जुलाई 2002 के आसपास, ज़ादाफ़िया ने कहा कि वह स्वयं आएगा।

प्रश्न) तो ये लोग कौन थे?

ए) अरे, वे अच्छे लोग थे, मुसलमान थे, ऐसे लोग थे जो वास्तव में दंगों को समाप्त करने में मदद कर रहे थे। मेरी जगह कोई और होता तो उन्हें गिरफ्तार कर लेता।

प्र) और इस सिंघल के बारे में क्या? उसी ने तो मुझे आपसे बात करने के लिए कहा था?
ए) मैं उसका बॉस था, वह अब एटीएस में है। वह मेरा प्रोबेशनर था, डिप्टी स्पेशलिस्ट।
प्र) तो उनके अधीन कौन-कौन काम करते थे?
ए) उदाहरण के लिए, जेल में बंद लोगों में से वंजारा उनके अधीन था। तो उन्होंने क्या किया कि मैं सीमा क्षेत्र का आईजी था, इसलिए उन्होंने मेरा तबादला करवा दिया क्योंकि उन्हें वंजारा को लाना था। इस तरह उन्होंने वंजारा को जगह देने के लिए पद का स्तर कम कर दिया।
प्रश्न) तो क्या यहाँ की पुलिस मुस्लिम विरोधी है?
ए) नहीं, असल में ये राजनेता ही हैं। तो अगर कोई अधिकारी उनकी बात नहीं मानता तो वे उसे किसी और जगह भेज देते हैं, तो फिर वे क्या करें?
सवाल) अमित शाह ने आपको जिस व्यक्ति को मारने के लिए कहा था, क्या वह मुसलमान था?
ए) नहीं, वह चाहता था कि वह जाए क्योंकि व्यापारिक लॉबी की ओर से कुछ दबाव था।
सवाल) दरअसल मुझे बताया गया था कि कुछ अधिकारियों को इशरत जहां मुठभेड़ करने के लिए मजबूर किया गया था?
ए) देखिए, सच बात है, एक समय वंजारा और उसके गिरोह ने पाँच सरदारों को गिरफ्तार किया था, जिनमें से एक कांस्टेबल था। वंजारा ने कहा कि उनका एनकाउंटर किया जाना चाहिए क्योंकि वे आतंकवादी थे। सौभाग्य से उस समय पांडियन एसपी थे और उन्होंने इनकार कर दिया, इसलिए वे पाँचों [निर्दोष] बच गए।
प्रश्न) लेकिन क्या अधिकारी वास्तव में मुस्लिम विरोधी हैं?
ए) नहीं, ऐसा नहीं है, नेता उनसे ऐसा करवाते हैं। अगर आप ईमानदार हैं तो वे आपको कभी कोई पद नहीं देंगे। देखिए उन्होंने रजनीश राय और राहुल शर्मा के साथ क्या किया है।
ए) यह सरकार सांप्रदायिक और भ्रष्ट है। अमित शाह आकर मुझे 1985 में दंगे भड़काने के अपने कारनामों के बारे में शेखी बघारते थे। वे सबको अपने घर बुलाते थे, जैसे एक बैठक में उन्होंने गृह सचिव, मुख्य सचिव और एक सांसद को बुलाया था; मैं उस समय आईजी के पद पर कार्यरत था। तब सांसद ने अमित शाह से कहा कि आप एक कांस्टेबल का तबादला तक नहीं कर सकते। इस पर अमित शाह ने मेरी ओर मुड़कर कहा, 'ऐसा क्यों नहीं किया गया?' मुझे जवाब देना पड़ा कि कांस्टेबल ने कुछ भी गलत नहीं किया था। वह तो सिर्फ भाजपा सांसद के बेटे को रोक रहा था।
प्र) लेकिन मुझे आश्चर्य है कि उसने आपको यह बताया।
ए) वह मुझसे अपनी बातें साझा करता था। दरअसल, इशरत मामले के बारे में मुझे उसी ने बताया था। उसने कहा कि इशरत को उसने उनकी हत्या से पहले हिरासत में रखा था और उन पांचों को मार दिया गया था, कोई मुठभेड़ नहीं हुई थी। वह मुझसे कहता था कि वह कोई आतंकवादी नहीं थी।
प्र) मुझे आश्चर्य है कि उन्होंने आपको एटीएस में रहने दिया, जो इतना महत्वपूर्ण पद था?
ए) हां, उन्हें लगा कि मैं उनका आदमी हूं और उनकी बात मानूंगा। इसलिए शाह ने मुझसे कहा, 'देखो, हमारे पास दो अहम पद खाली हैं, एटीएस और पुलिस कमिश्नर का पद, और हमें इन

दोनों पदों पर अपने आदमियों की जरूरत है। इसलिए हम आशीष भाटिया को पुलिस कमिश्नर और तुम्हें एटीएस प्रमुख बना रहे हैं।' उन्होंने मुझसे कहा कि देखो, हमें तुम पर भरोसा है कि तुम राज्य के आदेशानुसार काम करोगे। तो मैंने कहा कि अगर आपको वाकई भरोसा है, तो मुझे पुलिस कमिश्नर क्यों नहीं बना देते?

पी.सी. पांडे को देखिए, उन्होंने दंगाइयों के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं की। उन पर मुकदमा चलना चाहिए। वे मुख्यमंत्री के चहेते हैं। वे उनके खास आदमी हैं। मुसलमानों की हत्या के लिए वे ही जिम्मेदार हैं। इसीलिए उन्हें सेवानिवृत्ति के बाद भी पद दिया गया है। हालांकि मेरे उनसे अच्छे संबंध हैं, लेकिन मैं जानता हूं कि उन्होंने जो किया है वह गलत है।

मई 2013 के आसपास, इशरत जहां फर्जी मुठभेड़ मामले की मेरी जांच ने गुजरात सरकार को चौंका दिया। मैंने इशरत जहां और सादिक जमाल फर्जी मुठभेड़ मामले के सबसे अहम दस्तावेजों में से एक को हासिल कर लिया था। इस जांच से गृह मंत्रालय में हलचल मच गई। समाचार चैनल पागल हो गए। मैं हर संभव समाचार चैनल पर जांच के विवरण बता रहा था। शायद पहली बार फर्जी मुठभेड़ मामले में खुफिया अधिकारियों से सीधा संबंध स्थापित हुआ था; इस बार मास्टरमाइंड गुजरात में तैनात केंद्रीय सूचना सूचना अधिकारी राजिंदर कुमार प्रतीत हो रहे थे।

इस खुलासे ने सुर्खियों में जगह बनाई, गृह मंत्रालय बैकफुट पर आ गया और सीबीआई को सूचना सूचना अधिकारी, विशेष रूप से राजिंदर कुमार, विशेष सूचना सूचना सूचना निदेशक, जिनकी इशरत मुठभेड़ में भूमिका साबित हो चुकी थी, से पूछताछ करने के लिए मजबूर होना पड़ा। हाल ही में राजिंदर कुमार एक बार फिर खबरों में आए जब पूर्व गृह सचिव जी.के. पिल्लई, जिन्होंने अपने कार्यकाल में कहा था कि इशरत को संदेह का लाभ दिया जाना चाहिए, ने 2016 की शुरुआत में मीडिया को बताया कि उन्होंने सत्ताधारी कांग्रेस सरकार के इशारे पर हलफनामे बदल दिए थे। इसके बाद राजिंदर कुमार ने टीवी पर कई साक्षात्कार दिए और कहा कि उन्हें फंसाया जा रहा है। पिल्लई की कर्तव्यहीनता और उनके कथित 'सच' के समय पर सवाल उठाए गए हैं, जबकि वे अब अदानी समूह के निदेशक मंडल में हैं। इससे भी बुरी बात यह है कि उनमें से किसी को भी इस तथ्य पर कोई पछतावा नहीं है कि किसी व्यक्ति की योग्यता चाहे जो भी हो, मुठभेड़ असंवैधानिक थी। उनमें से किसी ने भी इस बात का जिक्र नहीं किया कि गुजरात गृह विभाग के लगभग सभी अधिकारी सिंघल द्वारा रिकॉर्ड किए गए स्टिंग टेप में इशरत जहां जांच को दबाने की बात करते हुए क्यों पकड़े गए थे।

मेरे खुलासे का सार मेरे लेख के पहले पैराग्राफ में ही स्पष्ट हो गया था, जो इस प्रकार है:

नौ साल पहले गुजरात पुलिस द्वारा चार कथित आतंकवादियों की गैर-न्यायिक हत्या के मामले में केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) एक बड़ा खुलासा करने जा रही है। TEHELKA को पता चला है कि सीबीआई अहमदाबाद में एक ट्रायल जज के सामने गवाही देगी कि आरोपी अधिकारियों में से एक ने शपथ लेकर गवाही दी है कि राजेंद्र कुमार, जो अब इंटेलिजेंस ब्यूरो (आईबी) में विशेष निदेशक हैं, 15 जून 2004 को एक महिला और तीन मुस्लिम पुरुषों के मुठभेड़ में मारे जाने का मुख्य साजिशकर्ता था। सनसनीखेज रूप से, एक अन्य अधिकारी की गवाही में दावा किया गया है कि कुमार ने 19 वर्षीय महिला इशरत जहां से उसकी हत्या से पहले अवैध पुलिस हिरासत में

मुलाकात की थी। एक अन्य पुलिसकर्मी की गवाही में दावा किया गया है कि एके-47 असॉल्ट राइफल, जिसे पुलिस ने मृतकों का बताया था, वास्तव में आईबी की गुजरात इकाई से प्राप्त की गई थी, जिसमें कुमार उस समय कार्यरत थे, और चारों शवों पर रखी गई थी। सीबीआई के पास एक प्रमुख आरोपी जीएल सिंघल द्वारा रिकॉर्ड की गई एक गुप्त ऑडियो रिकॉर्डिंग भी है, जो उस दुर्भाग्यपूर्ण रात को चारों को गोली मारने वाले पुलिस अधिकारियों में से एक था। नवंबर 2011 की वह रिकॉर्डिंग गुजरात के तत्कालीन कनिष्ठ गृह मंत्री प्रफुल पटेल के बीच हुई बातचीत है, जिन्होंने एक साल पहले शाह का स्थान लिया था; अतिरिक्त प्रधान सचिव गिरीश चंद्र मुर्मू, एक आईएएस अधिकारी जो 2008 से मोदी के कार्यालय में कार्यरत हैं और उनके सबसे करीबी सलाहकारों में से एक माने जाते हैं; राज्य सरकार के सबसे वरिष्ठ विधि अधिकारी, एडवोकेट जनरल कमल त्रिवेदी; उनके डिप्टी, अतिरिक्त एडवोकेट जनरल तुषार मेहता; एक अज्ञात वकील; और सिंघल। (पटेल, जिनका नाम उनके हमनाम केंद्रीय मंत्री से मिलता-जुलता है, दिसंबर में विधानसभा चुनाव हार गए थे और मोदी के नए मंत्रिमंडल में उन्हें जगह नहीं मिली।)

ऐसा लग रहा था मानो पहेली के गुम हुए टुकड़े धीरे-धीरे जुड़ रहे हों और पूरी तरह से फिट हो रहे हों। प्रियदर्शी राज्य एटीएस प्रमुख थे और अमित शाह ने उन्हें बताया था कि इशरत जहां को एक बंगले में हिरासत में रखा गया था, जहां उनकी बेरहमी से हत्या कर दी गई थी। लेकिन हर जांच की तरह, मुझे भी इस मामले में कीमत चुकानी पड़ी। मेरे धर्म को मेरी पत्रकारिता से जोड़ने वाली कहानियां सामने आईं। कुछ ही दिनों में मुझे विभिन्न चैनलों के संपादकों और वकीलों के फोन आने लगे कि गृह मंत्रालय के अधिकारी मेरे खिलाफ यह कहकर झूठे आरोप लगा रहे हैं कि सीबीआई अधिकारी के साथ मेरी एक आपत्तिजनक सीडी है।

यह सुनकर मैं दंग रह गई। मुझे पता था कि यह मुझे चुप कराने की कोशिश थी, यह सोचकर कि चरित्र हनन के डर से मैं डर जाऊंगी। मैं अपने पिता के पास गई, जिन्हें अभी तक इस बात की कोई जानकारी नहीं थी। मेरे भाई आरिफ, जो मेरे लिए सहारा थे, और मेरी माँ, जो मेरे दृढ़ संकल्प की रीढ़ थीं, मेरे बुलावे पर हमारे साथ आ गए। मेरे पिता ने महसूस किया कि मैं घबराई हुई हूँ और उन्होंने मेरी माँ की ओर सवालिया निगाहों से देखा। वह भी उतनी ही उलझन में और घबराई हुई लग रही थीं।

I told them all about the phone calls and the rumours which had been circulated. I distinctly remember my father's words, 'Dekho beta, ye sab drama hai, unko kaho cd dikhaayein, hum sab dekhenge.' He laughed; my mom started to breathe easy and carressed my hair. She said, 'Beta, hum sab jab tumko trust karte hain, jab tumhari family ne ek sawaal nahi poocha, toh tumhein kisi aur ki kya fikar.'

मेरे भाई ने भी उतना ही समर्थन दिया और एक वरिष्ठ मीडिया पेशेवर होने के नाते उन्होंने कहा, 'उन्हें एक पत्र लिखो, इन घिनौनी आत्माओं पर जमकर प्रहार करो, क्या वे बस इतना ही कर सकते थे?'

लेकिन मुझे ज्यादा कुछ नहीं करना पड़ा, मेरे सहकर्मी और पत्रकारिता जगत के साथी चट्टान की

तरह मेरे साथ मजबूती से खड़े रहे। उस समय प्रबंध संपादक रहीं शोमा चौधरी ने मेरे खिलाफ चलाए गए दुर्भावनापूर्ण अभियान के जवाब में उस सप्ताह संपादकीय लिखा:

वरिष्ठ संपादक राणा अय्यूब को हाल के हफ्तों में इसका कड़ा अनुभव हुआ है। पिछले तीन वर्षों में, राणा - जो TEHELKA की सबसे उत्कृष्ट और निडर पत्रकारों में से एक हैं - ने गुजरात में फर्जी मुठभेड़ों की कहानी का अथक रूप से पीछा किया है। उनकी पत्रकारिता न्याय और संवैधानिक मूल्यों की गहरी भावना से प्रेरित रही है। फिर भी, जैसे ही इशरत जहां मामले पर उनकी सनसनीखेज खबरें राष्ट्रीय सुर्खियों में आने लगीं, उन्हें एक पेशेवर पत्रकार के बजाय एक 'मुस्लिम पत्रकार' के रूप में आंका जाने के अपमानजनक अनुभव का सामना करना पड़ा। उतना ही निराशाजनक यह है कि उनके खिलाफ एक घृणित बदनामी का अभियान चलाया गया है - सीबीआई अधिकारियों के साथ उनकी एक सीडी के बारे में अस्पष्ट अफवाहें फैलाई जा रही हैं जिनका सत्य से कोई लेना-देना नहीं है।

भारत एक अपूर्ण प्रयोग है। लेकिन अगर हम इसके मूल में निहित काव्यात्मक विचार को त्याग दें, तो हमें यही मिलेगा: 'हिंदू राष्ट्रवादी', 'मुस्लिम पत्रकार', और महिला पेशेवर जिन्हें हम अपमानजनक झूठों से बेअसर करने की कोशिश करते हैं।

प्लांटेड सीडी की कहानी खामोशी से खत्म हो गई।

दूसरी ओर, अमित शाह द्वारा राज्य पुलिस के साथ मिलकर निर्दोष नागरिकों की जासूसी करने के खुलासे हर दिन सामने आ रहे थे, जिनमें से एक युवा वास्तुकार मानसी सोनी भी थीं। यह स्पष्ट था कि इस मामले के केंद्र में प्रमुख व्यक्तियों में से एक जी.एल. सिंघल थे, जो कभी अमित शाह के करीबी थे। ये बातचीत उस महत्वपूर्ण समय पर रिकॉर्ड की गई थीं, जब इशरत जहां मामले की जांच के लिए गठित एसआईटी ने प्रारंभिक जांच शुरू की थी। सिंघल, जो पिछड़े वर्गों के अधिकारियों का इस्तेमाल करने की राज्य की नीति को समझने लगे थे, खुद को सुरक्षित रखना चाहते थे। और इसके लिए सबसे अच्छा तरीका क्या हो सकता था? उस समय गुजरात में प्रचलित अवैध फोन टैपिंग का इस्तेमाल करना।

अहमदाबाद में कार्यकर्ताओं द्वारा आरटीआई के माध्यम से प्राप्त आंकड़ों में कहा गया था कि राज्य में 65,000 से अधिक नंबरों पर अवैध रूप से जासूसी की गई थी - इस सूची में विपक्ष के सदस्य, पार्टी के वे लोग जो व्यवस्था के खिलाफ विद्रोह करने की कोशिश कर रहे थे, पत्रकार और पुलिसकर्मी शामिल थे।

सिंघल उस तंत्र और उन गंदी चालों से भली-भांति परिचित थे जिनके बारे में उन्होंने हमें बताया था। और इस तरह मंत्री के फोन कॉल और उनकी बातचीत को टैप करने का काम शुरू हुआ। टैप की गई सबसे महत्वपूर्ण बातचीत में से एक में शाह ने सिंघल को गुजरात की एक युवा वास्तुकार मानसी की गतिविधियों पर नजर रखने का आदेश दिया था, जिनसे उनकी मुलाकात भुज के विनाशकारी भूकंप के बाद पुनर्वास के दौरान प्रदीप शर्मा नामक एक आईएएस अधिकारी के माध्यम से हुई थी।

मुझे पता चला था कि मानसी उस समय बैंगलोर में रह रही थी। मेरे पास निगरानी से जुड़े सभी तथ्य टेप पर रिकॉर्ड थे। लेकिन मुझे यह भी पता था कि टेप प्रकाशित करने का मतलब होगा

बैंगलोर में मानसी की निजता और शांतिपूर्ण जीवन का अंत।

समय कम होता जा रहा था। मेरी संपादक शोमा मुझे अपने निजी सहायक के मोबाइल फोन से उस पीसीओ नंबर पर कॉल करतीं जो मैंने उन्हें दिया था। वह पूछतीं, 'हमें क्या मिला है? वहां क्या चल रहा है?' मैं उन्हें ट्रांसक्रिप्ट का विवरण देती और वह उत्साह से चिल्ला उठतीं। 'यह बहुत बड़ी खबर है, राणा!' वह कहतीं।

लेकिन मेरे लिए कई अनसुलझे मामले थे जिन्हें पहले सुलझाना ज़रूरी था। मुझे कुछ नौकरशाहों से संपर्क करना था—गृह सचिव, प्रधान सलाहकार, जो विभिन्न आपत्तिजनक दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने के लिए ज़िम्मेदार थे और जिन्होंने मोदी और शाह से सीधे आदेश लिए होंगे। उनमें से अधिकांश से नानावती आयोग ने पूछताछ की थी, जहाँ वे सब कुछ भूल चुके थे। अधिकांश प्रत्यक्ष रूप से दोषी नहीं थे, लेकिन किसी भी गलत काम की जानकारी न होने के कारण वे गुजरात दंगों के पीड़ितों के लिए न्याय की उचित प्रक्रिया में बाधा बन गए थे। मेरे सहयोगी आशीष के लिए स्थानीय गुंडों से गुजरात दंगों के दौरान मुस्लिम महिलाओं की हत्या करने की उनकी बहादुरी के बारे में जानकारी निकलवाना आसान था। लेकिन मैं उन प्रमुख लोगों पर नज़र रख रहा था जो दंगों के लिए ज़िम्मेदार थे—गुजरात के गृह सचिव, पुलिस महानिदेशक, आयुक्त और सूचना सूचना विभाग के प्रमुख। मेरा सिर हर दिन चकरा रहा था।

मानो इतना तनाव काफी नहीं था, मानिक भाई ने हमें अपने कमरे खाली करने को कहा क्योंकि फाउंडेशन में एक आंतरिक सम्मेलन होने वाला था और प्रतिनिधि फाउंडेशन के सभी कमरों में ठहरेंगे। मैं फिर से बेघर हो गया।

बीच में

कहानी के अन्य पात्रों पर आगे बढ़ने से पहले, गुजरात की प्रसिद्ध महिला पुलिस अधिकारियों में से एक, उषा राधा का परिचय देना आवश्यक है। मेरा इरादा उन्हें बदनाम करने का नहीं था, लेकिन उनके बारे में कुछ संदेह था। मुझे एहसास हुआ कि ऐसा करने में कोई खास नुकसान नहीं होगा, क्योंकि पिछड़े वर्ग से आने वाली राधा से मिलने से मेरी कहानी की विश्वसनीयता और बढ़ जाएगी। राधा अभय चुडासमा की कनिष्ठ अधिकारी थीं और बेहद वफादार थीं। मेरे गुजरात छोड़ने के कुछ ही समय बाद, उषा राधा ने सर्वोच्च न्यायालय द्वारा 2003 से 2006 के बीच गुजरात में हुई 16 पुलिस मुठभेड़ों की जांच के लिए गठित विशेष कार्य बल से इस्तीफा दे दिया।

सोहराबुद्दीन शेख फर्जी मुठभेड़ मामले में सीबीआई द्वारा पहले ही गिरफ्तार किए जा चुके चुडासमा, 2007 से 2010 के बीच राडा के बॉस थे, जब दोनों अपराध शाखा में तैनात थे। ऐसी अटकलें लगाई जा रही थीं कि राडा जांच की दिशा को चुडासमा के पक्ष में प्रभावित करेंगे।

इस समय तक गुजरात पुलिस का नियंत्रण कक्ष मेरा पसंदीदा बन चुका था। जब भी मुझे किसी पुलिस अधिकारी का संपर्क चाहिए होता, मैं कटी-फटी बोली में फोन करती और खुद को एक अमेरिकी फिल्म निर्माता बताती जो शक्तिशाली गुजराती महिलाओं पर एक वृत्तचित्र बना रही है। फोन पर मौजूद संबंधित पुलिस अधिकारी मुझे न केवल लैंडलाइन नंबर बल्कि संबंधित अधिकारी का मोबाइल नंबर भी उदारतापूर्वक दे देते थे। जब मैंने उषा रादा को फोन किया, तब वह पूछताछ में व्यस्त थीं। मैंने उन्हें एक संदेश छोड़ा। दो घंटे बाद, उन्होंने मुझे वापस फोन किया और अहमदाबाद के सर्किट हाउस में मिलने के लिए कहा। मैं बैठक के लिए डेनिम स्कर्ट और काली टी-शर्ट पहनकर गई थी, साथ ही मैंने ढेर सारे भारी गहने भी पहने थे। मेरे सिर पर एक बंदना बंधा था और मेरे पास एक कैमरा और एक स्लिंगबैक बैग था। रिसेप्शनिस्ट मुझे बैठने की जगह तक ले गई।

कुछ ही मिनटों में रादा आ गईं, लगभग 30 वर्ष की उम्र की एक महिला, जिनके बाल छोटे कटे हुए थे और कद-काठी लंबी और दुबली-पतली थी। उन्होंने कॉलर वाली टी-शर्ट और जींस पहनी थी, साथ में स्पोर्ट्स शूज़ थे जो उनके व्यक्तित्व को और भी प्रभावशाली बना रहे थे। उन्होंने मुझे गर्मजोशी से गले लगाया। 'हैलो मैथिली, कैसी हो?' उन्होंने गर्मजोशी से हाथ मिलाते हुए और एक बड़ी और प्यारी मुस्कान के साथ पूछा।

बैठते ही मैंने उसके व्यक्तित्व की खूब तारीफ की; और मेरी सारी तारीफें सच थीं। उषा का व्यक्तित्व वाकई मनमोहक था, और उसकी मुस्कान मेरे सारे डर दूर कर देती थी। हमारी बातचीत के एक घंटे के भीतर ही उसने मुझे फिल्म दिखाने, खरीदारी कराने और गुजरात के सबसे मशहूर थाली रेस्टोरेंट में ले जाने का वादा कर दिया।

'मुझे अपना दोस्त समझो और किसी भी तरह की मदद मांगने में संकोच मत करना', उसने मुझे गले लगाने से पहले कहा और फिर मुझे अपनी सरकारी जीप में बिठाकर नेहरू फाउंडेशन के पास छोड़ दिया।

अगली शाम मेरे फोन पर उषा का एक संदेश आया। 'मैथिली, मुझसे रात 9:30 बजे एसजी

हाईवे पर मिलो।' मैंने तुरंत हां में जवाब दिया, लेकिन फोन रखते ही मुझे घबराहट होने लगी। आखिर वो रात 9:30 बजे एसजी हाईवे पर मुझसे क्यों मिलना चाहती थी?

काफी घबराई हुई, बल्कि डरी हुई, मैंने एसजी हाईवे के लिए एक ऑटो लिया। जैसे ही मैं तय जगह पर पहुँची और उसे फोन किया, उषा ने मुझसे कहा कि मैं फोन ऑटो ड्राइवर को दे दूं ताकि वह मुझे सही जगह बता सके जहाँ उसे मुझे ले जाना था। ड्राइवर ने बेमन से फोन मुझे देते हुए शिकायत की कि मुझे उसे आगे के लंबे सफर के बारे में पहले ही बता देना चाहिए था। तब तक लगभग 10 बज चुके थे। मेरे पास उषा की बात मानने के अलावा कोई चारा नहीं था। अगर मैं डरी हुई थी तो उसे दिखा नहीं सकती थी। हम कई किलोमीटर तक गाड़ी चलाते रहे, फिर मुझे सड़क पर उषा की पुलिस वैन दिखाई दी। वैन के पास सिर्फ तीन और पुलिसकर्मी इंतजार कर रहे थे। मेरा मन कर रहा था कि मैं ऑटो ड्राइवर से मुझे वहाँ से ले जाने का अनुरोध करूँ, लेकिन बहुत देर हो चुकी थी। 'हेलो!', उषा मेरी तरफ आते हुए बोली। उसने मुझे अपनी जीप में बैठने को कहा। 'चलो, मैं तुम्हें एक ऐसी जगह ले जा रही हूँ जो तुम्हें पसंद आएगी।'

मुझे रोने का मन कर रहा था। गुजरात में रहने के दौरान पहली बार जीप में बैठे-बैठे मेरे हाथ ठंडे पड़ गए। उषा लगातार बोलती रही जबकि मैं असामान्य रूप से चुप थी। मेरा मन कर रहा था कि फोन उठाकर अपने परिवार को कॉल करूँ। उन्हें उस आखिरी व्यक्ति के बारे में बताऊँ जिनसे मैं मिली थी, अगर कोई दुर्घटना हो जाए तो।

लेकिन मैंने उषा को गलत समझा था। हम अहमदाबाद के सबसे फैशनेबल रेस्टोरेंट में रुके। देखो, मैं चाहती थी कि तुम देखो कि हमारा अहमदाबाद तुम्हारे अमेरिका से कम नहीं है, उसने मुस्कुराते हुए कहा। मैं मुस्कुराई, राहत भरी मुस्कान जिसे उषा कभी नहीं समझ पाएगी। थोड़ी देर बाद मैंने बहाना बनाया और वॉशरूम की ओर चल पड़ी। मुझे नहीं लगता कि मैं उस टॉयलेट में जितना रोई, उतना कभी रोई होती। मुझे खांसी आ रही थी, मेरी आंखों और नाक से पानी बह रहा था, मुझे उल्टी आने ही वाली थी।

रेस्तरां से निकलने से पहले, हमारी बातचीत में उन्हें यकीन हो गया कि मैं उनकी बहुत प्रशंसा करता हूँ। हमने अगले दिन उनके घर पर मिलने का वादा किया। रेस्तरां में हमारी बातचीत गुजरात में आतंक मचा रहे मुसलमानों से हटकर उनके वरिष्ठ अभय चुडासमा के एक तरह के नायक होने की ओर मुड़ गई।

अगली शाम मुझे उषा के घर पर उनसे मिलना था। मैंने अपने खास कुर्ते को चार्जिंग से निकाला। मैंने कैमरा चेक किया, कुर्ता पहना और नेहरू फाउंडेशन से निकल गई। रास्ते में मेरी मुलाकात फाउंडेशन की एक नई सदस्य राजी से हुई, जो मुंबई की रहने वाली थी और मेरी पड़ोस में रहने वाली थी। पानी और उसकी सहेलियाँ अभी-अभी हॉस्टल लौटी थीं। एक और जर्मन लड़की भी हमारे साथ हॉस्टल में रहने आई थी। वह स्काइप पर अपने परिवार से बात कर रही थी और उसने मुझसे कहा कि जब मैं उसके कमरे के पास से गुजरूँ तो उसकी माँ को मेरा नमस्कार कह दूँ।

जब मैं शाहिबाग के पास पुलिसकर्मियों के क्वार्टर में पहुँचा, तब तक उषा अपने कैजुअल कपड़ों में आ चुकी थी और रात के खाने की थाली लग चुकी थी। उसकी बेटी लैपटॉप पर काम कर रही थी। उसने मुझे अपनी बेटी से मिलवाया और कहा कि स्कूल की पढ़ाई पूरी करने के बाद उसे

अमेरिका के किन कॉलेजों में आवेदन करना चाहिए, इस बारे में मुझसे सलाह ले। उषा एक अकेली माँ थी, उसने अपने पति को तलाक दे दिया था और अब अपने माता-पिता और बच्चों के साथ रहती थी। मैंने उषा से कहा, 'आज तुमसे तुम्हारी पुलिस फोर्स के बारे में नोट्स लेने हैं।' 'आज नहीं, आज फिल्म देखने जाते हैं।' मैं निराश था, लेकिन मैंने इसे अपने चेहरे पर ज़ाहिर नहीं होने दिया।

कुछ ही मिनटों में हम अहमदाबाद के एक मशहूर सिनेमा हॉल पहुँच गए। लेकिन जैसे ही हम अंदर दाखिल हुए, मेरा दिल बैठ गया। प्रवेश द्वार पर तलाशी और मेटल डिटेक्टर लगा हुआ था। मेरे कुर्ते में कैमरा लगा हुआ था। बस, अब हो गया! डर से मेरा मुँह सूख गया। हम कतार में लग गए। उषा एक-दूसरे से बातें कर रही थी, जबकि मेरा ध्यान बैरियर पर टिका हुआ था। कुछ ही मिनटों में डिटेक्टर कैमरे को पकड़ लेगा और मैं वहीं पकड़ा जाऊँगा। लेकिन चमत्कार होते हैं, और उस दिन भी ऐसा ही हुआ जब चेकिंग पॉइंट के पास खड़े एक कांस्टेबल ने उषा और मुझे कतार में देखा और हमें दूसरे प्रवेश द्वार से अंदर ले गया। हालाँकि दिसंबर का महीना था और रात में बहुत ठंड थी, फिर भी मुझे अपनी पीठ पर पसीना टपकता महसूस हुआ क्योंकि मुझे एहसास हुआ कि मैं एक बार फिर बच गया हूँ। पॉपकॉर्न और कोक से लदे हम 'नो वन किल्ड जेसिका' देखने के लिए अंदर गए, विडंबना यह है कि यह फिल्म जेसिका लाल हत्याकांड पर तहलका की जाँच पर आधारित थी।

जैसे ही फिल्म के क्रेडिट्स चलने लगे, फिल्म में तहलका के काम का ज़िक्र किया गया और उषा ने मेरे कान में फुसफुसाते हुए कहा, 'क्या तुमने तहलका के बारे में सुना है? ये लोग तो बदमाश हैं। अपने फोन में कैमरे लगाकर घूमते हैं और लोगों को ठगते हैं। इन्होंने गुजरात में भी हमारे लोगों को ठगा था।' सच में? मैंने भोलेपन का दिखावा करते हुए पूछा, 'तहलका क्या है, कोई टीवी चैनल है क्या?' 'नहीं नहीं, ये एक वेबसाइट है, इसे कभी मत देखना, इसमें भारत के बारे में सब बुरी बातें हैं,' उषा ने जवाब दिया और हम फिल्म देखते रहे।

उस रात जब मैं अपने कमरे में लौटा तो उस तमाशे पर मुस्कुराया जिसका मैं हिस्सा बन गया था। स्थिति की विडंबना और उस आशंका पर मुस्कुराया जो मुझे पहले थी कि क्या मैं अपने वरिष्ठों की उम्मीदों पर खरा उतर पाऊंगा। क्या मैं सच्चाई का पता लगाने में असमर्थ रहूंगा? मेरे पास रहने के लिए दूसरी जगह ढूंढने के लिए दो दिन थे। पानी ने मुझे अपना कमरा साझा करने की पेशकश की, लेकिन मैं जोखिम नहीं उठा सकता था। हर रात मैं अपना कुर्ता, डायरी और घड़ी चार्ज करता था, जिनमें कैमरे लगे हुए थे। मैं जरा सी भी गलती से अपनी स्थिति को खतरे में नहीं डाल सकता था। मैंने पानी से उसका लैपटॉप मांगा। मैं अपने निजी ईमेल का उपयोग करना चाहता था, जिसे मुझे अपने ईमेल से इस्तेमाल करने से बचना था।

उस रात जब मैंने राणा अय्यूब के नाम से लॉग इन किया, तो मुझे कम से कम हज़ार ईमेल मिले, जिनमें से कई मेरे दोस्तों के थे जो मेरे गायब होने के बारे में उत्सुक थे। मैंने अपना फेसबुक अकाउंट डिलीट कर दिया था ताकि इंटरनेट पर ऐसी कोई जानकारी न रहे जिससे राणा अय्यूब की तस्वीर मिल सके। मैंने तुरंत अमेरिका में रहने वाली एक दोस्त को ईमेल लिखा, जिसके परिवार वाले अहमदाबाद में रहते थे, और पूछा कि क्या मैं शहर में उसके किसी दोस्त के घर रुक

सकती हूँ, क्योंकि मैं होटलों में रुक-रुक कर थक चुकी थी।
उन्होंने अप्रत्याशित तत्परता से जवाब दिया। उनके परिवार और मित्र राजकोट में थे, लेकिन उनके एक पारिवारिक मित्र का एसजी हाईवे पर एक बंगला था। बंगले के मालिक देश में नहीं थे और घर की देखभाल एक नौकरानी करती थी जो परिसर में बने अस्थायी कमरे में रहती थी। व्यवस्था पर चर्चा होने के बाद, मैंने अपना सामान पैक किया और अगली सुबह मानिक भाई से उनके केबिन में मिलने गया। मुझे भुगतान करना था। उन्होंने मुझे आश्वासन दिया कि आप 10 दिन बाद वापस आ सकते हैं। तब तक प्रतिनिधिमंडल लौट चुका होगा और एक कमरा उपलब्ध कराया जा सकेगा।
बंगला देखने में सुंदर था, उसमें एक बड़ा बगीचा और लॉन भी था, लेकिन यह किसी अकेली महिला के रहने के लिए बिल्कुल भी उपयुक्त नहीं था। इसके बाईं और दाईं ओर निर्माणाधीन बंगले और अस्थायी झुग्गियाँ थीं, जहाँ निर्माण मजदूर सूर्यास्त के बाद बिल्कुल अंधेरे में रहते थे। संचार का कोई साधन नहीं था और चौकीदार बाज़ार जाने के लिए साइकिल का इस्तेमाल करता था, जो बंगले से लगभग एक किलोमीटर दूर था। परिसर में टूटे तार, लकड़ी, ईंटें और सीमेंट के ढेर लगे हुए थे। चौकीदार कालू भाई को मेरे आने की सूचना दी गई और इससे पहले कि वह मुख्य द्वार खोल पाते, दो आवारा कुत्तों ने मेरा स्वागत किया। कालू भाई की तीन बेटियाँ थीं और वे आवारा कुत्ते उनके परिवार का हिस्सा थे, जो बाद में मेरे एकांत के साथी बन गए।
घर पर मेरा एक और आश्चर्य इंतजार कर रहा था, जिसके बारे में कालू भाई ने मुझे बताना जरूरी नहीं समझा। एक शाम जब मैं ऑटो से बंगले पर लौटा, तो अंधेरा हो चुका था। गेट खटखटाने का कोई फायदा नहीं था क्योंकि कालू भाई अपने छोटे से घर में दरवाजे बंद करके रेडियो तेज आवाज में बजा रहे थे। मैंने उन्हें फोन किया और ड्राइवर से हॉर्न बजाने को कहा ताकि अंदर कोई मेरी आवाज सुन ले। मैं अपने साथ एक टॉर्च लेकर चल रहा था ताकि अंधेरी गली में रास्ता ढूंढ सकूं, जहां बिल्कुल भी रोशनी नहीं थी।
जैसे ही मैंने गेट के अंदर की बत्ती जलाई, कुत्ते भौंकने लगे। मुझे खुशी हुई क्योंकि इससे कालू भाई का ध्यान मेरी तरफ आकर्षित होगा। और सच में, कालू भाई ने जोर से पुकारा, 'आ रहा हूँ मैथिली बेन'। फिर भी कुत्ते भौंकते रहे।
जब तक मैंने नहाया और खाना खाया, कुत्ते भौंकते रहे। मैं बाहर निकला और सोचा कि वे भूखे होंगे, इसलिए मैंने कालू भाई को आवाज़ दी और पूछा कि क्या वे उन्हें खाना खिला सकते हैं। उन्होंने जवाब दिया, 'अरे बेन एक बार वो सांप होले में चला जाएगा ना सब शांत हो जाएंगे।' मैं चिल्लाया, 'सांप!'
अगले पंद्रह मिनट तक कालू भाई और उनकी बेटियाँ उस कोबरा के बारे में खुशी से बातें करते रहे, जिसने पिछले एक साल से बंगले को अपना घर बना रखा था। जब वे मुझे उसे ढूंढने ले गए, तो मैंने सांप को दीवार पर बैठे देखा।
उस दिन के बाद से मुझे रात को चैन से नींद नहीं आती थी। हर बार जब कुत्ते भौंकते, तो मुझे पता चल जाता कि सांप अपने ठिकाने से बाहर आ गया है। मैं अक्सर इस डर से जाग जाता था कि कहीं कोई बाड़ फांदने की कोशिश तो नहीं कर रहा। मेरे साथ कुछ अजीबोगरीब होने लगा

था। मेरी नाड़ी अचानक तेज़ हो जाती थी और मुझे हर रात ठंडे पसीने आने लगते थे। मेरा गला सूख जाता था और मुझे कुछ भी पचाने में बहुत मुश्किल होती जा रही थी। अगर किसी अधिकारी को मेरी असली पहचान पता चल गई तो क्या होगा? यह बंगला मुझे नुकसान पहुंचाने के लिए सबसे आसान जगह थी।

आगे आने वाले दिनों में जब दोपहर में करने को कुछ खास नहीं होता था, तो कालूभाई की बेटियाँ अपनी स्कूल की किताबें लेकर मेरे पास आती थीं। मैं चाय बनाता और हम पार्ले जी के साथ उसका आनंद लेते थे। कुत्ते मुझसे बहुत घुलमिल गए थे और मैं उस स्थिति में पहुँच गया था जहाँ मुझे कुत्तों के साथ खेलते हुए साँप को देखना मनोरंजक लगता था। कालूभाई की बेटियों और मैंने उसका नाम मुखिया रख दिया था। लड़कियाँ मुखिया पर पत्थर फेंकती थीं, जबकि मैं थोड़ी दूरी पर बैठकर अपने फोन से उन सबका वीडियो बनाता था।

Ashok Narayan

माइक अभी दिल्ली से नहीं लौटे थे। उनका परिवार उनसे मिलने भारत आया हुआ था और मैंने उनसे गुजरात में अपने काम के बारे में सावधानी बरतने को कहा था। इसी दौरान तेहलका ने गुजरात के आईपीएस अधिकारी संजीव भट्ट की गवाही को अपने मुखपृष्ठ पर छापा। यह गवाही मेरे सहयोगी आशीष खेतान ने प्रकाशित की थी, जो उस समय जांच संपादक थे। संजीव भट्ट के अनुसार, वे मोदी और संबंधित पुलिस अधिकारियों और नौकरशाहों के बीच हुई एक कथित बैठक में मौजूद थे, जिसमें मोदी ने उन्हें 2002 के दंगों के दौरान मुसलमानों को मारने की खुली छूट दे दी थी। गुजरात दंगों को कवर कर रहे अधिकांश पत्रकार, कार्यकर्ता और वकील हैरान थे। मेरे कई परिचित और जिनसे मैंने व्यक्तिगत रूप से बात की, उन्होंने उनकी बात पर विश्वास नहीं किया, उनका कहना था कि कोई भी मुख्यमंत्री दर्जनों शीर्ष नौकरशाहों और अधिकारियों के बीच इस तरह का आदेश देकर अपने राजनीतिक करियर को खतरे में नहीं डालेगा। कई सवाल उठ रहे थे। संजीव भट्ट को यह बयान देने में इतना समय क्यों लगा? गुजरात पर कई वर्षों की रिपोर्टिंग में मैंने कभी संजीव भट्ट या उनके किसी बयान का जिक्र नहीं किया था।

शोमा ने मुझे फोन किया और पूछा कि क्या मैं अधिकारियों से संजीव भट्ट के बारे में बात करवा सकता हूँ। इस विषय पर सवाल पूछने में मुझे थोड़ी झिझक हो रही थी, क्योंकि यह इतना विशिष्ट मामला था कि इससे संदेह पैदा हो सकता था। मुझे याद है मैंने शोमा से कहा था कि कई तकनीकी कारणों से मैं संजीव भट्ट के बयान पर भरोसा नहीं कर पा रहा हूँ। मैंने उसे भरोसा दिलाया कि अगर उसकी गवाही में जरा भी सच्चाई है, तो मैं उसे ढूंढ निकालूंगा।

मैं गुजरात दंगों के दौरान सबसे महत्वपूर्ण निर्णय लेने वालों से मिलना चाहता था। चार ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने गुजरात दंगों के दौरान महत्वपूर्ण भूमिकाएँ निभाई थीं। गृह सचिव अशोक नारायण, पुलिस महानिदेशक चक्रवर्ती, पुलिस आयुक्त पी.सी. पांडे और स्वर्णकांत वर्मा, जो 2002 के दंगों के दौरान मुख्यमंत्री के प्रधान सलाहकार थे। मैंने अशोक नारायण से मिलना शुरू कर दिया था।

तहलका की उस रिपोर्ट के अनुसार, जिसमें भट्ट की गवाही छपी थी, ऊपर उल्लेख किए गए अधिकांश अधिकारियों को नानावती आयोग द्वारा जिरह के दौरान स्मृतिभ्रंश हो गया था।

गुजरात कैडर के 1988 बैच के आईपीएस अधिकारी संजीव भट्ट की गवाही के अनुसार, उन्होंने गुजरात के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री मोदी द्वारा आयोजित बैठक में भाग लिया था, जिसमें उन्होंने शीर्ष पुलिस अधिकारियों से कहा था कि वे हिंदुओं को अल्पसंख्यक समुदाय के खिलाफ अपना गुस्सा निकालने दें।

बाद में अक्टूबर 2014 में, सुप्रीम कोर्ट ने संजीव भट्ट की याचिका को राजनीति और सक्रियता के माध्यम से अदालत को प्रभावित करने का प्रयास बताते हुए खारिज कर दिया। कोर्ट ने कहा:

नौ साल बाद जब उन्होंने इतने सनसनीखेज खुलासे किए, तो ई-मेल का खुलासा न करने और चुप रहने का उनका रवैया समझ से परे है। न्यायमूर्ति नानावती आयोग के समक्ष दिए गए बयान में भी उन्होंने ई-मेल का जिक्र नहीं किया। जब उन्होंने ई-मेल भेजकर यह कहा कि प्रतिद्वंद्वी

राजनीतिक दल ने उनकी क्षमता का पूरी तरह से उपयोग नहीं किया, तो आयोग के समक्ष भी ई-मेल का जिक्र न करने का कारण समझ से परे है। याचिकाकर्ता का समग्र आचरण विश्वास जगाने वाला नहीं है।

अगस्त 2015 में मोदी सरकार के गृह मंत्रालय द्वारा संजीव भट्ट को भारतीय पुलिस सेवा से बर्खास्त कर दिया गया था। उनके सहकर्मी मानते हैं कि संजीव भट्ट हमेशा से एक विवादास्पद व्यक्ति रहे हैं, जिनके दावों में कई विरोधाभास हैं। ऐसे में अशोक नारायण से 2002 के अन्य रहस्यों के बीच इस प्रश्न का उत्तर मांगना अत्यंत प्रासंगिक था।

जब मेरी उनसे मुलाकात हुई, तो अशोक नारायण गांधीनगर में अपनी पत्नी के साथ एक सुंदर बंगले में रहते थे। गुजरात पुलिस के कुशल नियंत्रण कक्ष की बदौलत उनसे संपर्क करना फिर से बहुत मुश्किल नहीं था। मुलाकात दिसंबर 2010 के अंत में हुई। मैंने उन्हें उनके लैंडलाइन पर फोन किया और उन्हें अपनी डॉक्यूमेंट्री के बारे में बताया, जो गुजरात के सबसे महत्वपूर्ण व्यक्तियों के जीवन को समर्पित होगी। मैंने उन्हें बताया कि उनकी योग्यताएं बहुत प्रभावशाली हैं और मैं अपने सहयोगी के साथ उनसे मिलना चाहूंगा।

अशोक नारायण के घर जाने से एक रात पहले मुझे एहसास हुआ कि मेरा लेंस सॉल्यूशन खत्म हो गया है। रात के आठ बजे जब बुनियादी ज़रूरत की चीज़ें भी मुश्किल से मिल रही थीं, तब मुझे कहीं से भी लेंस सॉल्यूशन मिलने का ख्याल नहीं आया। मैंने ऑनलाइन वैकल्पिक उपाय खोजे। किसी वेबसाइट पर एक चर्चा में सुझाव मिला कि मैं लेंस को नमक के पानी में भिगो दूं। अगली सुबह पार्ले जी-टी पीने के तुरंत बाद मैंने लेंस को नमक के पानी से निकाला और लगा लिया। मेरी आँखों में जलन होने लगी और मुझे एहसास हुआ कि मैंने स्थिति और बिगाड़ दी है। मैंने कालू भाई से बर्फ के टुकड़े मांगे। जलती और लाल आँखों के साथ मैंने एक टैक्सी रोकी और टैक्सी ड्राइवर को नारायण के घर का पता दिया। रास्ते में मुझे अजय का मैसेज आया कि वह गांधीनगर में है और मुझसे मिलना चाहता है। नारायण की पत्नी ने घर में मेरा स्वागत किया, जो एक मिलनसार व्यक्तित्व की थीं और उन्होंने सुनिश्चित किया कि मैं नमकीन खत्म करूँ, जो उन्होंने हाल ही में एक जाने-माने दुकानदार से मंगवाया था। मुझे बताया गया कि 70 वर्ष के आसपास के एक बुजुर्ग श्री नारायण तैयार हो रहे हैं। दो कप चाय पीते हुए, मेरे पारिवारिक जीवन, कानपुर में मेरे पैतृक घर और मेरी शादी की संभावनाओं पर चर्चा हुई। वह एक साधारण मध्यमवर्गीय, शिक्षित महिला थीं, जो अपनी बेटियों के विदेश में रहने के दौरान गृहस्थी जीवन का आनंद ले रही थीं। उन्होंने मुझे अपनी दोनों बेटियों की तस्वीरें दिखाईं और अगली मुलाकात में उनकी शादी का एल्बम दिखाने की पेशकश की।

अशोक नारायण ने गर्मजोशी से अभिवादन करते हुए कमरे में प्रवेश किया और मुझसे पूछा कि क्या उनकी अनुपस्थिति में उनकी पत्नी ने उनका अच्छे से स्वागत किया था। अशोक जी उम्र में काफी बड़े थे, या शायद मेरे पिता से भी बड़े थे। वे एक आध्यात्मिक व्यक्ति थे जो 'जीओ और जीने दो' के सिद्धांत में विश्वास रखते थे। साहित्य और पौराणिक कथाओं के उनके ज्ञान ने मुझे आश्चर्यचकित कर दिया। वे एक कवि भी थे, उन्हें उर्दू कविता से प्रेम था और उन्होंने स्वयं दो पुस्तकें लिखी थीं।

मैं एक ऐसे उर्दू लेखक की बेटी थी, जिन्होंने अपने काम के लिए खूब नाम कमाया था, और मेरा पालन-पोषण घर पर महफ़िलों और मुशायरों के बीच हुआ था। अशोक नारायण को उर्दू शेर में जवाब देने की तीव्र इच्छा होती थी, लेकिन मुझे खुद को रोकना पड़ा। मैथिली एक रूढ़िवादी संस्कृत शिक्षक की बेटी थी और विदेश में रह चुकी थी। साथ ही, मैथिली अपनी पहचान के हिस्से के रूप में मुसलमानों को एक समुदाय के तौर पर खास पसंद नहीं करती थी।

लेकिन नारायण में कट्टरता का कोई अंश नहीं था, जो गुजरात दंगों में कथित तौर पर शामिल अधिकारियों से जुड़ा हुआ था। धर्म के मामले में वे उदार थे और उस रात जब मैंने उन्हें अपनी बार-बार होने वाली चिंता के बारे में बताया, तो उन्होंने मुझे आध्यात्मिकता पर एक ईबुक भेजी। उनमें मुझे एक ऐसा व्यक्ति मिला जो अन्य व्यक्तियों, संस्कृतियों और धर्मों का सम्मान करता था। यही कारण था कि मुझे गुजरात दंगों के दौरान की घटनाओं और फर्जी मुठभेड़ों के बारे में उनसे जानकारी निकालने की उम्मीद थी। और अंततः मैं इसमें सफल भी हुआ। उन्होंने मुझे बताया कि गुजरात के गृह सचिव के रूप में उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा था कि प्रवीण तोगड़िया द्वारा आयोजित रैली सहित किसी भी राजनीतिक रैली की अनुमति नहीं दी जाएगी। उन्होंने यह भी कहा कि वे गुजरात के सर्वश्रेष्ठ अधिकारियों में से एक, राहुल शर्मा के निलंबन के खिलाफ थे; दंगों के तुरंत बाद नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में राज्य सरकार ने उन्हें निलंबित कर दिया था।

ये बातचीत चार दिनों तक चली, ज्यादातर चाय पर और एक बार उनकी पत्नी द्वारा बनाए गए दोपहर के भोजन पर। जिस दिन दंपति ने मुझे दोपहर के भोजन पर आमंत्रित किया, मैं बहुत परेशान थी। वे मुझे अपने परिवार के सदस्य की तरह मानने लगे थे। वे अक्सर कहते थे कि मैंने उनके घर में उनकी बेटियों की कमी पूरी कर दी है। जब मैंने अशोक नारायण के बारे में सुना कि वे नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली राज्य सरकार द्वारा गुजरात दंगों को दिए जा रहे मौन समर्थन के खिलाफ खुलकर आवाज उठाने में दृढ़ नहीं थे, तो मेरा दिल चुपचाप रो पड़ा। यह मेरा निजी विचार नहीं था। अशोक नारायण ने इसे स्पष्ट शब्दों में कहा था।

नारायण परिवार के साथ दोपहर के भोजन के लिए तय किए गए दिन मैंने दंपति से कुछ घंटे मांगे थे ताकि मुझे उनके बारे में जानकारी जुटाने के लिए पर्याप्त समय मिल सके। इस बार मैंने अपना पसंदीदा हरा कुर्ता पहना था, साथ में शॉल ओढ़ रखी थी और मेरी घड़ी भी थी जिसमें हर बार कैमरा चालू होते ही हल्की फ्लोरोसेंट लाइट जल जाती थी। मेरे पास मेरी डायरी भी थी जिसमें एक कैमरा सिला हुआ था। इन मुलाकातों में कोई जोखिम नहीं लेना चाहता, इसलिए कई कैमरे रखने की सलाह दी गई थी।

मेरे पहुँचने तक दोपहर का भोजन तैयार था। उसी दिन मैंने उनसे उनकी सबसे महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी, गुजरात के गृह सचिव होने के बारे में बात करना शुरू किया। माहौल एकदम अनुकूल था, मैंने इस विषय को इस तरह से शुरू किया जैसे खाने पर कोई हल्की-फुल्की बातचीत हो रही हो। नारायण ने बेझिझक अपनी बात रखी।

दोपहर के भोजन के बाद जब हम चाय पीने बैठे, तब तक वे नरेंद्र मोदी द्वारा दंगों से निपटने के तरीके के बारे में विस्तार से बताने लगे थे। मैंने कहा, 'श्री नारायण, आप जानते हैं, मैं पिछले एक सप्ताह से आपके बारे में गूगल पर खोज कर रहा हूँ और आपका नाम गुजरात दंगों, मोदी और

विभिन्न आयोगों से संबंधित कई लिंक दिखाता है। यह मेरे लिए बहुत ही रोचक रहा है और मुझे यकीन है कि आपके लिए एक ऐसे विवादास्पद व्यक्ति से निपटना बहुत मुश्किल रहा होगा, जो गुजरात दंगों के दौरान लगभग गलत काम करने की कगार पर था। आप जैसे आदर्शवादी, इतने मानवीय व्यक्ति के लिए, मैं केवल कल्पना ही कर सकता हूँ कि आपने क्या-क्या झेला होगा।'
और इस तरह बातचीत शुरू हुई।
सवाल) जब मुख्यमंत्री ने आपको दंगों को नियंत्रित करने के दौरान धीमी गति से चलने के लिए कहा, तो आपका चेहरा शर्म से लाल हो गया होगा?
ए) वह ऐसा कभी नहीं करता। वह कागज़ पर भी कभी कुछ नहीं लिखता। उसके अपने लोग थे और उनके ज़रिए वीएचपी और फिर उनके माध्यम से अनौपचारिक चैनलों से होते हुए निचले स्तर के पुलिस निरीक्षकों तक जानकारी पहुँचती थी।
प्र. और फिर आप असहाय हो गए?
ए) बिलकुल सही। और फिर हम कहेंगे, 'अरे, ऐसा क्यों हुआ?' लेकिन तब तक घटनाएँ घटित हो चुकी होंगी।
प्र) और जांच आयोगों के लिए कोई सबूत नहीं है?
ए) कई बार मंत्री सड़कों पर खड़े होकर भीड़ को उकसाते थे। एक बार ऐसा ही हुआ जब मैं उनके कमरे में बैठा था और हमें फोन आया। तब मैंने उन्हें बताया कि एक मंत्री ऐसा कर रहा है। तो उन्होंने उसे वापस बुला लिया। कम से कम उस समय तो उन्होंने (मोदी ने) किसी को वापस बुलाया था।
सवाल) क्या वह भाजपा के मंत्री थे?
ए) जी हां, बिल्कुल, उनका अपना मंत्री, एक आदमी।
प्र) मैंने सुना है कि माया कोडनानी नाम की एक महिला भी थी, वह काफी हद तक सरकार विरोधी हो गई है।
ए) हां, वह वहां हो सकती थी।
प्रश्न) क्या यह उन्मादपूर्ण स्थिति थी?
ए) मैं आपको एक प्रत्यक्ष अनुभव बताता हूँ। मैं एक मुस्लिम सिविल सेवा अधिकारी, प्रशासनिक अधिकारी को जानता हूँ। उन्होंने मुझे फोन किया और कहा, "सर, मेरी जान बचाइए, मेरे घर को घेर लिया गया है।" मैंने पुलिस आयुक्त को फोन किया... उन्होंने रिकॉर्ड किया या नहीं, लेकिन मुझे लगता है कि वह व्यक्ति बच गया। अगले दिन अधिकारी ने फोन किया और कहा, "सर, कल किसी तरह मैं बच गया, लेकिन आज बचने की संभावना नहीं है।"
तो मैंने फिर से कमिश्नर को फोन किया और उनसे उसे बचाने की गुहार लगाई। पंद्रह दिन बाद वह अधिकारी मेरे केबिन में आया। उसने कहा, "सर, वही कहानी दोहराई जा रही थी, कॉलोनी में हिंदू बहुसंख्यक थे और मुसलमानों को मारा जा रहा था।" उसने मुझसे कहा, "जब आपने फोन किया, तो पुलिस बल आ गया और एक मंत्री भीड़ का नेतृत्व करते हुए बाहर खड़ा था। पुलिस अधिकारी ने उसे सलाम किया। उसने पुलिस अधिकारी को देखा और उन्हें बताया कि सब ठीक है। बाद में किसी तरह एक पुलिस अधिकारी ने मुझे पहचान लिया और मेरी जान बचाई।"

सवाल) लेकिन यह मंत्री तो जेल में है?
ए) वे सभी बाहर हैं। लेकिन किसी को तो यह करना ही होगा। जब तक कोई सबूत नहीं देता, आप यह कैसे कर सकते हैं?
सवाल) किसी में ऐसा करने की हिम्मत नहीं है?
ए) ऐसा करने की हिम्मत किसी में नहीं है।
प्रश्न) मंत्रियों के खिलाफ कौन कार्रवाई करेगा?
ए) मैं आपको बता दूं, गृह सचिव के पद के बाद मैं सतर्कता आयुक्त था। आप जानते हैं कि हर राज्य में लोकायुक्त होता है जो मंत्रियों की देखरेख करता है। तो एक दिन मैंने कहा; अब ईमानदारी से कहूं तो एसी कामरों में मक्खियां नहीं होतीं, वरना मैं ये कह सकता था कि वो मक्खियां मार रहे थे।
प्रश्न) तो मैंने पूछा कि क्या हो रहा है?
ए) उन्होंने कहा, महोदय, क्या करें? मंत्रियों की तो कोई शिकायत ही नहीं करता। जब रिश्वतखोरी और भ्रष्टाचार के मामलों में लोग मंत्रियों का विरोध करने को तैयार ही नहीं हैं, तो दंगों में शामिल मंत्रियों के खिलाफ जाने की हिम्मत कैसे जुटाएंगे? किसकी शर्म आई है?
जब तक वे खुद सामने नहीं आते। और वे इतने चालाक हैं कि वे फोन पर बड़ी चालाकी से बातचीत करेंगे—वे अधिकारियों को फोन करके कहेंगे, 'अच्छा, उस इलाके का ध्यान रखो।'
अब एक आम आदमी के लिए तकनीकी रूप से इसका सामान्य अर्थ होगा, 'ध्यान रखें कि उस क्षेत्र में दंगे न हों', लेकिन वास्तविक अर्थ है 'ध्यान रखें कि उस क्षेत्र में दंगे हों।'
वे खुद काम नहीं करते, उनके पीछे एजेंटों के अलावा और भी कई एजेंट लगे हुए हैं।
अच्छा, फिर आप देखते हैं कि एफआईआर भीड़ के खिलाफ दर्ज की जाती है, तो आप भीड़ को कैसे गिरफ्तार करेंगे?
प्र) लेकिन क्या दंगों की जांच के लिए गठित आयोग मददगार साबित नहीं हुए हैं?
ए) नानावती आयोग का गठन हुआ था, लेकिन उससे अभी तक कुछ भी हासिल नहीं हुआ है, वे अभी तक कोई रिपोर्ट नहीं दे पाए हैं।
जब मैं गृह सचिव था, तब मैंने आदेश दिया था कि लिखित आदेश के बिना कुछ नहीं होगा। इसलिए जब बंद का आह्वान हुआ, तो मुख्य सचिव सुब्बाराव ने मुझे फोन किया और कहा कि विश्व हिंदू परिषद (वीएचपी) के एक नेता प्रवीण तोगड़िया रैली करना चाहते हैं, तो आप क्या सोचते हैं? मैंने कहा, महोदय, ऐसी अनुमति नहीं दी जानी चाहिए, क्योंकि इससे स्थिति बेकाबू हो जाएगी। मुख्यमंत्री को इसकी जानकारी मिली। उन्होंने कहा, आप ऐसा कैसे कह सकते हैं? हमें उन्हें अनुमति देनी होगी। मैंने कहा, ठीक है, तो मुझे लिखित आदेश दीजिए। मोदी ने बस मुझे घूर कर देखा।
नरेंद्र मोदी और प्रवीण तोगड़िया, दोनों कभी गुजरात में हिंदुत्व के विकास के पर्याय थे। नरेंद्र मोदी (64) और डॉ. प्रवीण तोगड़िया (58) राज्य में आरएसएस शाखाओं में साथ जाया करते थे। दोनों के बारे में एक मशहूर किस्सा है कि वे मोटरसाइकिल या स्कूटर पर सवार होकर गुजरात भर में संघ की विचारधारा का प्रचार करते थे। तोगड़िया हमेशा मोटरसाइकिल चलाते थे

और मोदी पीछे बैठते थे। तोगड़िया एक कैंसर सर्जन थे जो 1983 में विश्व हिंदू परिषद (वीएचपी) में शामिल हुए, और मोदी, एक पूर्णकालिक प्रचारक, 1984 में भाजपा में शामिल हुए। जब केशूभाई पटेल मुख्यमंत्री थे, तब दोनों उस कोर कमेटी में थे जो सरकार के लिए महत्वपूर्ण निर्णय लेती थी। जब केशूभाई पटेल को शंकरसिंह वाघेला के विद्रोह का सामना करना पड़ा, जिसने तोगड़िया को जेल में भी डाल दिया था, तब मोदी ने ही उनका साथ दिया था।

1995 से 2001 तक, जब मोदी लगभग राज्य से निर्वासित हो गए थे और गुजरात में अवांछित व्यक्ति बन गए थे, तब वे अपना अधिकांश समय भाजपा कार्यालय के बजाय विश्व हिंदू परिषद (वीएचपी) कार्यालय में बिताते थे, जहाँ उनका स्वागत नहीं था। बताया जाता है कि आडवाणी ने ही तोगड़िया को अक्टूबर 2001 में मोदी को गुजरात का मुख्यमंत्री बनाने के लिए राजी किया था। तोगड़िया इस बदलाव के लिए सहमत हो गए और उन्होंने अपने खास आदमी गोर्धन जादफिया को मोदी मंत्रिमंडल में गृह राज्य मंत्री के रूप में शामिल करवाया। भगवा रंग में रंगे पुलिस अधिकारियों की नियुक्तियों में तोगड़िया की महत्वपूर्ण भूमिका थी, जिनमें से कई ने फरवरी-मार्च 2002 में गोधरा कांड के बाद हुए दंगों में संदिग्ध भूमिका निभाई थी, जब विश्व हिंदू परिषद और बजरंग दल के कार्यकर्ताओं ने राज्य में आतंक का माहौल बना दिया था।

हाल ही में लोगों की यादों में छाई हार्दिक पटेल की घटना है, जो पटेल समुदाय के 21 वर्षीय युवा मसीहा के रूप में उभरे हैं और आरक्षण के मुद्दे पर राज्य में कामकाज ठप कर दिया है। उन्होंने तलवार लहराते हुए एक पत्रकार से पूछा कि क्या उसे पता है कि उन्होंने कितने हाथ काटे हैं। माना जाता है कि हार्दिक, केशूभाई पटेल और प्रवीण तोगड़िया की देन हैं, जिन्हें बाद में गुजरात में मोदी सरकार ने दरकिनार कर दिया था। कहा जाता है कि हार्दिक, गुजरात की वर्तमान मुख्यमंत्री और मोदी की सबसे करीबी सहयोगी आनंदीबेन को सत्ता से हटाने की एक चाल है। आनंदीबेन स्वयं पटेल हैं और अब खुद को उसी स्थिति में पा रही हैं, जैसी केशूभाई पटेल मोदी के गुजरात में आने से पहले थे।

2002 के गुजरात दंगों और उसके बाद के घटनाक्रम में प्रवीण तोगड़िया ने हिंदू जनता को भड़काया और विश्व हिंदू परिषद (वीएचपी) के कार्यकर्ताओं ने जमकर उत्पात मचाया। गुजरात में दिए गए एक भाषण में तोगड़िया ने कहा,

गोधरा स्टेशन पर आतंक इसलिए फैलाया गया क्योंकि यह देश गांधी जी का अनुसरण करता है। हमने 28 फरवरी को गांधी जी को कैद कर लिया। (मुसलमानों) खुद को सुधारो, वरना हम गांधी जी को हमेशा के लिए भूल जाएंगे। जब तक हम गांधी जी की अहिंसा की नीति का पालन नहीं करेंगे, जब तक हम मुसलमानों के सामने घुटने टेकने की प्रथा जारी रखेंगे, आतंकवाद को बढ़ावा नहीं दिया जा सकता। मेरे भाइयों, हमें गांधी जी को छोड़ना होगा। आप रामायण जानते हैं, यह गोधरा घटना से संबंधित है। सुबह 7:45 बजे सिग्नल फालिया पर जली हुई एस6 कोच हनुमान जी की पूंछ थी जिसे आग लगा दी गई थी।

दर्शक तालियाँ बजाते हैं, जय श्री राम के नारे लगाते हैं। फिर वह रात में हजारों की संख्या में एकत्रित भीड़ से सवाल करते हैं।

हनुमान जी की पूंछ किसने जलाई? रावण ने जलाई। हनुमान जी सैर पर गए थे, हमने सुना है कि

वे गोधरा गए थे (भीड़ हंसती और जयकार करती है)। हनुमान जी हलोल, कलोल, सरदारपुरा गए और कर्णावती (अहमदाबाद) में ही ठहर गए और वापस नहीं जाना चाहते थे।

संदर्भ स्पष्ट था, रावण शब्द मुसलमानों के लिए इस्तेमाल किया गया था। यह गुजरात में मुसलमानों को जान से मारने और उनका कत्लेआम करने का सीधा आह्वान था। जहां तोगड़िया कड़ी मेहनत कर रहे थे, वहीं मोदी को बहुसंख्यक हिंदू आबादी के हिंदू हृदय सम्राट के रूप में देखा जाने लगा, जिसे लगातार यह याद दिलाया जाता था कि मुसलमान उन्हें खत्म करने पर तुले हुए हैं। हालांकि, मोदी के मुख्यमंत्री बनने के कुछ ही दिनों बाद यह सौहार्द समाप्त हो गया। दोनों के बीच मतभेद पैदा हो गए। टीओआई की एक रिपोर्ट में इसे संक्षेप में इस प्रकार बताया गया:

दिसंबर 2002 में हुए विधानसभा चुनावों में तोगड़िया ने भाजपा के समर्थन में 100 से अधिक रैलियों को संबोधित किया और लगभग दो सप्ताह तक लगातार हेलीकॉप्टर का इस्तेमाल किया। हालात तब बदले जब मोदी ने चुनाव जीता। उन्होंने तुरंत ज़ादाफ़िया को अपने मंत्रिपरिषद से हटा दिया, जो तोगड़िया को एक स्पष्ट संकेत था कि अब शासन में उनके हस्तक्षेप की कोई आवश्यकता नहीं है। तोगड़िया और संघ परिवार के अन्य संगठनों के साथ परामर्श की प्रक्रिया बंद हो गई।

अशोक नारायण से मिलने और गुजरात दंगों से संबंधित उनके टेप किए गए अंशों को इकट्ठा करने के कुछ ही दिनों के भीतर मैंने उनसे कहा कि मैं उन दंगों के दिनों के उनके मित्र और विश्वासपात्र श्री चक्रवर्ती से मिलना चाहूंगा, जो उस समय गुजरात में पुलिस महानिदेशक थे। मुझे चक्रवर्ती की भूमिका का तब पता चला जब नारायण और उनकी पत्नी लगातार यह कहते रहे कि नारायण के इकलौते मित्र चक्रवर्ती ने उन भयानक दिनों में उनके जीवन को कुछ हद तक आसान बना दिया था। यह उस समय की बात है जब अधिकांश पुलिस अधिकारियों ने मोदी सरकार के सामने अपनी ईमानदारी से समझौता कर लिया था। चक्रवर्ती द्वारा की गई मुलाकातों और खुलासों पर अगले अध्याय में चर्चा की जाएगी, लेकिन अशोक नारायण के बारे में बात करते हुए यह महत्वपूर्ण है कि मैं पाठक के साथ उनसे हुई शेष बातचीत को साझा करूं। इस समय तक, मैं मुंबई में चक्रवर्ती से मिल चुका था और उनके साथ अपनी पहली मुलाकात पूरी कर चुका था, इसलिए अन्य अधिकारियों के साथ गुजरात दंगों पर मेरी चर्चा आसान और कम संदेहपूर्ण हो गई थी।

प्रश्न) क्या चक्रवर्ती वाकई इतने विवादास्पद व्यक्ति हैं?

ए) देखिए, वह पुलिस प्रमुख थे, इसलिए जो भी होता, सारा दोष उन्हीं पर और गृह विभाग पर आता। मानवाधिकार विभाग ने भी इसे संवैधानिक पक्षपात बताया, इसलिए हम सब इसमें फंस गए। संजीव भट्ट सूचना सूचना विभाग में थे। चक्रवर्ती उस समय महानिदेशक थे।

प्र) तो क्या आप उस बैठक में नहीं थे?

ए) कौन सी बैठक?

प्रश्न) जाहिर तौर पर एक बेहद विवादास्पद बैठक हुई जिसमें मुख्यमंत्री ने अधिकारियों और नौकरशाहों से दंगों को रोकने में धीमी गति से काम करने को कहा।

ए) हां हां, मैं उस बैठक में मौजूद था। मैंने आपको मना किया था।

प्र) तो आपको एसआईटी द्वारा नहीं बुलाया गया था?
ए) हाँ, उन्होंने ऐसा किया और मुझसे पूछताछ की।
इसीलिए चक्रवर्ती ने कहा कि उस बैठक की वजह से वे सब फंस गए। चक्रवर्ती भी उस बैठक का हिस्सा थे।
प्रश्न) चक्रवर्ती ने कहा कि जो लोग मुख्यमंत्री के करीबी थे, जैसे पी.सी. पांडे जैसे कुछ अधिकारी, वे बच गए।
ए) नहीं, लेकिन एसआईटी के कारण पीसी बाद में विवादों में घिर गया।
मेरा मतलब है कि वह भी विवादों में घिर गया।
प्र) लेकिन मैंने सुना है कि वह मुख्यमंत्री के करीबी हैं?
ए) जी हाँ, वह है, लेकिन हुआ ये कि अगर आप सत्ताधारी पार्टी की बात मान लें तो आपको कोई समस्या नहीं होगी।
सवाल) और क्या वह पूरी तरह से मुख्यमंत्री का आदमी है?
ए) हां, और अगर उसने ऐसा नहीं किया तो उसे चक्रवर्ती की तरह फेंक दिया जाएगा।
जैसे कि उन्हें मुझे सेवानिवृत्ति का पद देना पड़ा क्योंकि उन्हें मुझे दरकिनार करना था, क्योंकि वे मेरे कनिष्ठ को मुख्य सचिव बनाना चाहते थे। (सवाल) कितनी चालाकी!
ए) तो इस तरह मैं सतर्कता आयुक्त बनी [उनकी पत्नी ने आगे कहा]: न केवल उन्हें, बल्कि उनके जैसे तीन अन्य अधिकारियों को भी पदोन्नत नहीं किया गया।
प्र) क्या आप उसी श्रीकुमार की बात कर रहे थे?
ए) जी हां, वो आपकी फिल्म में खूब मसाला डालेंगे, ज्यादातर सनसनीखेज लेकिन सच्चाई के साथ। सबसे मजेदार बात ये है कि दंगों के दौरान श्रीकुमार एक साइड पोस्टिंग पर थे और दंगों के बाद उन्हें मेरी और चक्रवर्ती की सिफारिश पर ही ड्यूटी पर बुलाया गया। उन्हें सीबीआई का अनुभव था।
लेकिन बाद में उन्होंने ऐसी घटनाओं के समय हलफनामे दाखिल करने शुरू कर दिए जिनकी उन्हें कोई जानकारी नहीं थी, इसलिए उन्हें भी बाद में पद से हटा दिया गया। दरअसल, मुख्यमंत्री उन्हें निलंबित करना चाहते थे। हमने उनसे ऐसा न करने का आग्रह किया। ऐसा लग रहा था कि वह प्रेस के लिए ज्यादा काम कर रहे थे, प्रेस को जानकारी लीक कर रहे थे।
सवाल) लेकिन मुख्यमंत्री इतने निशाने पर क्यों हैं? क्या इसका कारण यह है कि वे भाजपा से जुड़े हैं?
ए) नहीं, क्योंकि उन्होंने दंगों के दौरान विश्व हिंदू परिषद (वीएचपी) का समर्थन किया था। उन्होंने हिंदू वोट हासिल करने के लिए ऐसा किया, जिसमें वे सफल भी हुए। उन्होंने वही किया जो वे करना चाहते थे और वही हुआ।
प्रश्न) लेकिन उन्होंने लोगों से धीरे चलने को कहा था?
ए) वह बैठक में ऐसा नहीं कहेंगे। वह अपने जवानों से ऐसा कहेंगे। वह वीएचपी को और फिर टंडन जैसे अधिकारियों और अन्य अधिकारियों को यह बात बताएंगे। और एक अधिकारी होने के नाते आप आदेश का पालन करना चुन सकते हैं।

प्रश्न) क्या चक्रवर्ती ने नियमों का पालन नहीं किया?

ए) हम दोनों ही वहां थे। हमने अपना काम किया।

मैंने उनसे कहा कि जब मैं सेना में शामिल हुआ था, तो मेरा मकसद जनता की सेवा करना था, न कि सत्ताधारी पार्टी की सेवा करना।

प्र) तब बाकी लोगों ने ऐसा क्यों नहीं किया?

ए) क्योंकि उन्हें खेल खेलना था, उनका एक लक्ष्य था, इसलिए समझौता करना पड़ता है।

चक्रवर्ती जैसे लोगों को देखिए, उन्हें पदोन्नति नहीं मिली, विदेश नहीं भेजा गया, लेकिन उन्होंने वही किया जो उनकी अंतरात्मा ने उन्हें करने को कहा।

प्रश्न) इस विवादास्पद बैठक के बारे में बाहर के लोगों को कैसे पता चला?

ए) यहाँ एक मंत्री थे, हरेन पंड्या, उन्होंने ही सबसे पहले प्रेस में यह बात कही थी। प्रश्न) बैठक में कौन-कौन मौजूद थे?

ए) मुख्य सचिव, सहायक मुख्य सचिव, गृह सचिव, उपराज्यपाल, अधिकारी।

एक आम आदमी के लिए भी उपरोक्त बातचीत से गुजरात दंगों के दौरान राज्य प्रशासन की मिलीभगत का स्तर स्पष्ट हो जाता है। अशोक नारायण जो मुझे बता रहे थे, वह हममें से अधिकांश लोग जानते थे, लेकिन किसी आधिकारिक व्यक्ति, जिस पर गुजरात दंगों के दौरान सबकी निगाहें टिकी थीं, ने ऐसा कभी नहीं कहा था। इससे भी अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि पूर्व गृह सचिव ने गुजरात दंगों और नरेंद्र मोदी के लिए इसके महत्व के बारे में बात करते हुए जिस सामाजिक और राजनीतिक संदर्भ का जिक्र किया, वह भी उल्लेखनीय है। उनकी निष्पक्षता इस तथ्य से सिद्ध होती है कि वे कहीं भी तथ्यों को कल्पना से मिलाने की कोशिश नहीं करते। वे श्रीकुमार द्वारा अपने हलफनामों को मीडिया में लीक करने के तरीके पर भी अपनी आशंका व्यक्त करते हैं। वे गुजरात दंगों के दौरान गांधीनगर में हुई एक बैठक का भी जिक्र करते हैं, लेकिन कहीं भी यह संकेत नहीं देते कि मुख्यमंत्री ने मुसलमानों के खिलाफ मार्च करने के आदेश दिए थे। बल्कि वे इस बात पर अधिक सूक्ष्म तर्क देते हैं कि ये आदेश व्यक्तिगत रूप से उन अधिकारियों को दिए गए थे जो सरकार के चहेते थे।

मैं वहां बैठा इस सज्जन, विनम्र व्यक्ति की बातें सुन रहा था, जो मुझसे ऐसी बातें कह रहा था जो उसने नानावती आयोग द्वारा की गई जिरह के दौरान भी नहीं कही थीं।

ए) भाजपा के इशारे पर विश्व हिंदू परिषद (वीएचपी) ने बंद का आह्वान किया और यहीं से इसकी शुरुआत हुई।

प्रश्न) क्या यह आपके लिए एक बड़ी समस्या थी?

ए) हां, जब तक भाजपा की ओर से संकेत नहीं मिलता, तब तक स्थिति को संभालना मुश्किल था।

प्रश्न) मोदी की प्रतिष्ठा कैसी है?

ए) उनकी पूजा की जाती है, रूढ़िवादी हिंदू मानते हैं कि वे ध्वज धारण करते हैं।

प्र) क्या उनकी भूमिका पक्षपातपूर्ण नहीं थी?

ए) वह गोधरा कांड के लिए माफी मांग सकते थे, वह दंगों के लिए माफी मांग सकते थे।

प्रश्न) मुझे बताया गया है कि मोदी ने पक्षपातपूर्ण भूमिका निभाई थी, जैसे कि गोधरा से शवों को लाना और निर्णयों में टालमटोल करना।

ए) मैंने बयान दिया था कि शवों को अहमदाबाद लाने का निर्णय उन्होंने ही लिया था।

प्रश्न) तो फिर राज्य आपके खिलाफ रहा होगा?

ए) देखिए, शवों को अहमदाबाद लाने से सारा मामला भड़क उठा, लेकिन फैसला तो उन्होंने ही लिया था।

जब हम बात कर रहे थे, तभी अशोक नारायण से अचानक एक मेहमान मिलने आया—कैलाशनाथन, जो नरेंद्र मोदी के सबसे करीबी माने जाते थे और उस समय उनके प्रधान सलाहकार थे। कैलाशनाथन उनसे मिलने तब आए जब अशोक नारायण ने मुख्यमंत्री कार्यालय में संदेश छोड़ा था कि उनके बहनोई हिमाचल प्रदेश विधानसभा चुनाव लड़ना चाहते हैं, जो जल्द ही होने वाले थे। मोदी, जो गुजरात भेजे जाने से पहले हिमाचल प्रदेश के पूर्व प्रभारी रह चुके थे, अभी भी राज्य में काफी प्रभावशाली थे।

यहां कुछ बहुत ही असहज करने वाली बात थी। क्या यही कारण था कि अधिकारियों ने नरेंद्र मोदी के खिलाफ खुलकर कार्रवाई करने से इनकार कर दिया? क्या यह सावधानी भरी उदारता थी? इसने मुझे असहज कर दिया।

कैलाशनाथन के जाने के बाद, अशोक नारायण की पत्नी ने मुझे बताया कि वह कितने महत्वपूर्ण थे और फिल्म बनाने में कभी भी कोई कठिनाई आने पर मुझे उनकी मदद लेनी चाहिए।

प्रधान सलाहकार के जाने के बाद नारायण के साथ बातचीत जारी रही।

प्रश्न) आपके काम का सबसे चुनौतीपूर्ण हिस्सा क्या रहा है?

ए) मुझे हमेशा इस बात का दुख होता था कि दंगों के दौरान इतने सारे लोग मारे गए। उदाहरण के लिए, कई पत्रकारों ने पूछा कि हमने इस्तीफा क्यों नहीं दिया?

मैंने उनसे कहा था कि अगर मुझे अपराधबोध होगा तो मैं ऐसा करूंगा।

प्रश्न) लेकिन वे गलत नहीं थे, आप राजनीतिक रूप से अस्थिर स्थिति में फंस गए थे...

ए) किसी भी राज्य सरकार को ऐसे दंगों का सामना नहीं करना पड़ता। हमारे पास दंगों को नियंत्रित करने के लिए केवल चार कंपनियां थीं। सीआरपीएफ भी सक्षम नहीं है, लेकिन अगर एक टीम भी होती तो हमें खुशी होती। और केंद्र में भी भाजपा की सरकार थी।

सवाल) तो क्या मुख्यमंत्री आसानी से और अधिक सैनिकों की मांग कर सकते थे? क्या यह केंद्र और राज्य के बीच एक समन्वय की तरह था?

ए) बेशक संपर्क व्यवस्था थी। हमारे मुख्यमंत्री जब चाहें श्री आडवाणी से बात कर सकते थे।

प्रश्न) मुझे बताया गया है कि वे अच्छे दोस्त हैं?

ए) बहुत अच्छे दोस्त, हाँ, तो यह एक कारण था।

प्र) कोई सेना नहीं। क्या आपने मुख्यमंत्री को नहीं बताया था?

ए) उसे सब कुछ पता था। क्या आपको लगता है कि उसे जानकारी नहीं थी? दूसरी बात, हिंदू समुदाय का व्यवहार मुझे सचमुच चौंका गया... शर्मनाक तरीके से घरों को लूटना, वे गाड़ियों में आते थे और लूटपाट करते थे... इंसानियत का सबसे बुरा रूप।

प्रश्न) उन्हें ऐसा करने के लिए किसने प्रेरित किया?

ए) गोधरा कांड।

प्र) एक ही लोगों को रिपोर्ट करना काफी उथल-पुथल भरा रहा होगा...

ए) उनमें मुझे कुछ भी गलत करने के लिए कहने की हिम्मत कभी नहीं हुई।

प्रश्न) क्या सरकार का गुस्सा आप पर निर्देशित था?

ए) जी हां, बिल्कुल, मैंने कहा था कि मुझे लिखित में आदेश दे दीजिए, चाहे जो भी हो।

निचले स्तर के सभी अधिकारियों को देखिए, हर किसी को ऐसे अपराधों में लिप्त राजनेताओं को गिरफ्तार करने का अधिकार है, लेकिन उनमें से अधिकांश राजनीतिक दबाव में आकर समझौता कर चुके हैं।

प्र) दंगों के दौरान यही हुआ था?

ए) जी हां, मोबाइल फोन के इस युग में आपको कागजों पर आदेश देने की जरूरत नहीं है, आपको बस फोन करना है।

सवाल) क्या मुख्यमंत्री आपसे नफरत करते?

ए) मुझे पक्का नहीं पता कि वह मुझसे नफरत करता था या नहीं, लेकिन वह ज़रूर चाहता होगा कि मेरी जगह कोई और होता।

प्रश्न) ये सभी घटनाएँ कैसे हुईं, दंगे कैसे भड़के?

ए) यह सब विश्व हिंदू परिषद (वीएचपी) द्वारा सुनियोजित था। गोधरा हत्याकांड और दंगे दोनों ही भयावह थे और किसी को भी उचित नहीं ठहराया जा सकता।

प्रश्न) क्या ये दंगे ट्रेन जलाने की घटना की प्रतिक्रिया थे?

ए) आप बी के आधार पर ए को सही नहीं ठहरा सकते।

सवाल) मुख्यमंत्री को इस्तीफा दे देना चाहिए था। वह मुख्यमंत्री थे, खासकर इतनी सारी घटनाओं के बाद।

ए) एक समय ऐसा भी आया जब गोवा बैठक में उन्हें बदलने की बात चल रही थी। जाहिर तौर पर उन्होंने इस्तीफा दे दिया था, लेकिन आडवाणी के दबाव में आकर आडवाणी ने वाजपेयी पर दबाव डाला कि वे इस्तीफा स्वीकार न करें। मैंने तत्कालीन प्रधानमंत्री वाजपेयी को दंगों के बारे में एक प्रस्तुति दी थी और मोदी भी वहां मौजूद थे।

प्रश्न) मुख्यमंत्री इससे खुश नहीं होते?

ए) यह खुशी या नाखुशी का सवाल नहीं था। मुझे जो कुछ हुआ था, उसका प्रस्तुतीकरण देना था। उस समय भी मैं देख सकता था कि वाजपेयी मोदी और उनकी भूमिका से नाखुश थे।

प्र) क्या वह भी जानबूझकर धीमे चले? क्या वह तत्परता दिखा सकते थे? उन्होंने राजनीति खेली।

ए) अगर उन्होंने तब इस्तीफा दे दिया होता तो उन्हें राजनीतिक रूप से फायदा होता। अब वे उस छवि से छुटकारा पाने की कोशिश कर रहे हैं।

प्रश्न) क्या वे धर्म के आधार पर सत्ता में आए? उनकी बयानबाजी...

ए) 2002 में उन्हें दंगों के कारण वोट मिले... उन्हें 2007 में और अधिक वोट मिले क्योंकि

उन्होंने विकास की छवि बनाई।

प्रश्न) बाकी लोग, यानी अधिकारी कैसे थे?

ए) पूर्व सचिव के तौर पर मैं साफ-साफ कहूँ तो, डीजीपी स्वयं एक ईमानदार व्यक्ति थे, लेकिन एक प्रभावी पुलिस अधिकारी बनने के लिए वे बहुत नरम स्वभाव के थे। दंगों के दौरान उन्होंने राजनीतिक दबावों का सामना नहीं किया, लेकिन वे अपने जवानों, अपने पुलिस अधिकारियों को नियंत्रित नहीं कर सके। इसके अलावा वे ईमानदार थे। मान लीजिए कि सरकार की ओर से अधिकारियों के तबादलों का दबाव होता, तो वे कहते, नहीं, मुझे लिखित आदेश दीजिए।

प्र) तब वह सरकार की नजरों में गिर गया होगा?

ए) जी हाँ, वह था। मेरे लिए अच्छी बात यह थी कि दंगों के दौरान वह मेरे साथ था, कम से कम एक निष्पक्ष व्यक्ति तो था। इसलिए यह एक अच्छा सहारा था।

तकनीकी रूप से सभी कैबिनेट मंत्रियों के पास कलेक्टरों और जिला मजिस्ट्रेटों जैसी विशिष्ट शक्तियों को छोड़कर सभी शक्तियां होती हैं। हालांकि, अन्य सभी शक्तियों का प्रत्यायोजन होता है। लेकिन यदि कैबिनेट मंत्री आपको अवैध आदेश देते हैं, तो भारत का संविधान आपको 'नहीं' कहने का अधिकार देता है।

प्र) क्या उस समय [दंगों के दौरान] आपमें 'ना' कहने का साहस था?

ए) हमें वही कहना पड़ा जो हमें कहना था। सब कुछ कहने के बाद भी, उनमें ऐसे आदेश देने की हिम्मत नहीं है, उनके पास लिखित में कोई आदेश नहीं है। इसलिए मैंने कहा कि मैं कागजों में लिखी बातों के आधार पर ही कार्रवाई करूंगा।

प्रश्न) आपको राज्य सरकार के गुस्से का सामना करना पड़ा होगा?

ए) मैंने किया। मुझे मुख्य सचिव का पद नहीं दिया गया था। लेकिन निरीक्षकों और दारोगा जैसे अधिकारियों के पास मुख्यमंत्री समेत किसी भी मंत्री को गिरफ्तार करने का अधिकार था। लेकिन उन्होंने सरकार का साथ देना चुना।

प्रश्न) क्या यही हुआ था?

ए) जी हाँ, और मोबाइल फोन के इस युग में, वे बस उन्हें काम करने के लिए कहते हैं। और अधिकारी पदोन्नति को ज़्यादा महत्व देते हैं।

जब सेना आई तो उन्हें बहुत सारे सामान की जरूरत पड़ी।

दरअसल, हमें दंगों से निपटने के लिए पर्याप्त बल नहीं मिला। सभी बल अयोध्या में थे। केंद्र सरकार ने हमें बल नहीं दिया।

प्रश्न) ये दंगे किस हद तक राजनीतिक रूप ले चुके थे?

ए) ये सांप्रदायिक भावना से प्रेरित थे। सत्ताधारी पार्टी ने विश्व हिंदू परिषद (वीएचपी) द्वारा दिए गए बंद के आह्वान का समर्थन किया। यह एक बड़ी समस्या थी और वरिष्ठ पुलिस अधिकारी हमसे कहते थे कि जब तक भाजपा की ओर से राजनीतिक संकेत नहीं मिलता, तब तक यह काम नहीं करेगा। क्योंकि उन्हें लगता है कि हम जनता का साथ दे रहे हैं।

सवाल) लेकिन मोदी की जीत किसी और चीज से ज्यादा जनसंपर्क का कमाल लगती है?

ए) बिलकुल।

प्रश्न) वाइब्रेंट गुजरात को लेकर चल रहे पूरे प्रचार को देखिए।
ए) [वह सिर हिलाता है]।
प्रश्न) लेकिन उसे इतना निशाना क्यों बनाया जा रहा है?
ए) उन्हें इसलिए निशाना बनाया जा रहा है क्योंकि उन्होंने वीएचपी का समर्थन करने का विकल्प चुना। उन्होंने वही किया जो उन्हें करना था और उन्हें वही मिला जो वे चाहते थे।
चक्रवर्ती जैसे लोगों को प्रशंसा नहीं मिली, पुरस्कार नहीं मिले, क्योंकि उन्होंने अपनी अंतरात्मा की आवाज सुनने का विकल्प चुना।
प्रश्न) क्या हर कोई मुख्य सचिव जी. सुब्बाराओ की वाकई बहुत प्रशंसा कर रहा है?
ए) सचमुच?
प्र) मैं व्यंग्य कर रहा हूँ।
ए) दुर्भाग्यवश सुब्बाराओ सरकार को खुश करना चाहते थे, वे मुख्यमंत्री को खुश करना चाहते थे, लेकिन वे इसमें भी सफल नहीं हो सके [मुस्कुराते हुए]।
प्रश्न) क्यों?
ए) मेरा मतलब है कि सेवानिवृत्ति के बाद सरकार ने उन्हें आराम से पांच साल का कार्यकाल दिया था।
प्र) मुझे अपनी फिल्म में दंगों के बारे में कितना बताना चाहिए?
ए) देखिए, फिर आपकी फिल्म विवादित हो जाएगी। क्योंकि दंगे विवादित थे।
प्र) तो क्या मैंने आपके मुख्यमंत्री से दंगों के बारे में एक भी सवाल नहीं पूछा?
ए) यदि आपने ऐसा किया होता, तो वह आपको दूसरी तरफ मोड़ देता और निश्चित रूप से आपको दूसरी मुलाकात का मौका नहीं देता।
प्रश्न) भट्ट जैसे व्यक्ति ने मुख्यमंत्री और सरकार के खिलाफ क्यों मोर्चा खोला?
ए) कोई न कोई कारण तो जरूर रहा होगा। उसके बॉस ने उसे जरूर बताया होगा। यह उसके ऊपर हुकुम चलाने वाले व्यक्ति के कहने पर ही हुआ होगा।
प्रश्न) वह कितना विश्वसनीय है?
ए) वह विश्वसनीय नहीं है
प्रश्न) अच्छा, वैसे जयंती रवि का संदर्भ मुझे माया कोडनानी ने दिया था।
A) Oh achcha....
प्रश्न) क्या उनकी बातें सरकार विरोधी लग रही थीं?
ए) अब वह है, लेकिन पहले नहीं थी। पहले वह मुख्यमंत्री और सरकार के साथ थी।
प्रश्न) क्या वह इस बात से नाराज थी कि कोई उसकी मदद के लिए नहीं आया?
ए) राजनीतिक आका कभी किसी की मदद के लिए आगे नहीं आते।
प्रश्न) वह पूरी तरह निर्दोष होने का दावा करती है।
ए) दंगों में वह निश्चित रूप से आरएसएस समर्थक, मुख्यमंत्री समर्थक और वीएचपी समर्थक थीं।
प्रश्न) इसका मतलब है कि उसने दंगों के दौरान सक्रिय रूप से भाग लिया था?
ए) हाँ।

प्रश्न) राहुल शर्मा कैसे हैं?
ए) वह विद्रोहियों में से एक है।
प्रश्न) जैसे कि?
ए) खैर, उसने किसी की मदद नहीं की। वह तो बस दंगों को नियंत्रित करना चाहता था।
प्रश्न) क्या उसे भी बाहर निकाल दिया गया था?
ए) उनका तबादला कर दिया गया। डीजीपी की सिफारिश, श्री चक्रवर्ती की सिफारिश और मेरे द्वारा उनकी सिफारिश का समर्थन करने के बावजूद।
सवाल) क्या सिर्फ इसलिए कि उन्होंने मुख्यमंत्री के खिलाफ आवाज उठाई?
ए) बिल्कुल।
यहां राहुल शर्मा नाम के अधिकारी की कहानी बताना जरूरी है, जिनसे मेरी मुलाकात दो-तीन सामाजिक मौकों पर हुई थी। राहुल से मेरी पहली मुलाकात तब हुई जब वे अपने एक वकील मित्र से मिलने आए थे, साथ में उनकी पढ़ी-लिखी और गरिमामयी पत्नी भी थीं। शर्मा मुझे शांत स्वभाव के व्यक्ति लगे, जिन्हें पत्रकारों को अपनी बहादुरी की कहानियां सुनाने की आदत नहीं थी। वे अपने काम को ही अपनी पहचान मानते थे और जब तक मैं वहां मौजूद था, तब तक अपने कानूनी मामले पर चुप रहना ही बेहतर समझा। उस समय राज्य सरकार उन्हें लगातार परेशान कर रही थी—उनका तबादला कर दिया गया था, उनकी वार्षिक गोपनीय रिपोर्ट में उनके बारे में नकारात्मक टिप्पणियां लिखी गई थीं और उनके खिलाफ दो विभागीय आरोपपत्र जारी किए गए थे। बाद में गुजरात सरकार ने 2015 में उनकी समय से पहले सेवानिवृत्ति की अर्जी मंजूर कर दी।
फरवरी 2015 में इंडियन एक्सप्रेस की एक रिपोर्ट में उनके बारे में यह कहा गया था:
शर्मा उन अधिकारियों में शामिल थे जिन्होंने 2002 के गोधरा दंगों के मामलों में राज्य सरकार को चुनौती दी थी और 2002 में नरोदा पाटिया, नरोदा गांव और गुलबर्ग सोसाइटी नरसंहार मामलों में जांच में सहायता करते हुए एक जांचकर्ता के रूप में महत्वपूर्ण सबूत जुटाए थे। केंद्रीय प्रशासनिक न्यायाधिकरण में तीन मामलों में कानूनी लड़ाई लड़ते हुए - उनकी वार्षिक गोपनीय रिपोर्ट में नकारात्मक टिप्पणियां और उनके खिलाफ जारी दो विभागीय आरोपपत्र - उन्होंने तीन महीने पहले सेवानिवृत्ति के लिए आवेदन किया था, जिसकी तिथि 28 फरवरी, 2015 तय की गई थी। हालांकि, राज्य सरकार ने उनके अनुरोधित तिथि से केवल दो दिन पहले उनके पत्र पर निर्णय लिया।
हालांकि, राहुल शर्मा के प्रति सरकार के गुस्से को समझने के लिए यह जानना भी आवश्यक है कि सर्वोच्च न्यायालय द्वारा नियुक्त एसआईटी ने उनके उत्पीड़न के बारे में क्या राय रखी थी। 2002 के दंगों पर एसआईटी की रिपोर्ट का एक प्रमुख बिंदु यह था कि इसने इस बात की पुष्टि की कि नरेंद्र मोदी सरकार ने उन पुलिस अधिकारियों को प्रताड़ित किया जिन्होंने 2002 में हिंसा को समाप्त करने का प्रयास किया था और दंगों के बाद भी राज्य द्वारा उनका उत्पीड़न और दुर्व्यवहार जारी रहा।
गुजरात सरकार ने वरिष्ठ आईपीएस अधिकारी राहुल शर्मा को नोटिस जारी कर पूछा है कि उन्होंने

दंगों के दौरान वरिष्ठ राजनेताओं और नौकरशाहों के फोन रिकॉर्ड बिना अनुमति के जांच आयोगों को क्यों और कैसे सौंपे। दंगों के नौ साल बाद जारी नोटिस में सरकार ने शर्मा से पूछा कि उनके खिलाफ कार्रवाई क्यों नहीं की जानी चाहिए।

यह ऐसे समय में सामने आया जब एसआईटी ने खुद कहा कि मोदी सरकार ने दंगों के दौरान हुई महत्वपूर्ण बैठकों का कोई रिकॉर्ड या विवरण नहीं रखा।

1992 बैच के आईपीएस अधिकारी शर्मा अप्रैल 2002 में अहमदाबाद के डीसीपी (कंट्रोल रूम) थे। नरोदा पाटिया और गुलबर्ग सोसाइटी में हुई हिंसा की जांच करते हुए, उन्होंने इस अवधि के दौरान अहमदाबाद में प्राप्त और किए गए सभी कॉलों का डेटा एटी एंड टी और सेलफोर्स मोबाइल सेवा प्रदाताओं से एकत्र किया और इसे क्राइम ब्रांच को सौंप दिया। वरिष्ठ मंत्रियों, पुलिस अधिकारियों और आरएसएस और वीएचपी के सदस्यों के बीच हुई फोन कॉलों के रिकॉर्ड वाली ये सीडी बाद में 'गुम' हो गईं। लेकिन मार्च 2002 में दंगों की जांच के लिए गठित नानावती आयोग के समक्ष गवाही देते समय, शर्मा ने अपने पास सुरक्षित रखी इस सीडी की एक प्रति प्रस्तुत की।

मेरी सहकर्मी अनुमेहा यादव ने तहलका में एक रिपोर्ट लिखी थी जिसमें कहा गया था:

ये फोन रिकॉर्ड दोषियों को पकड़ने में सबसे महत्वपूर्ण सबूतों में से एक रहे हैं, जिनमें 2009 में गुजरात विश्व हिंदू परिषद के अध्यक्ष जयदीप पटेल और मंत्री माया कोडनानी की गिरफ्तारी और अग्रिम जमानत रद्द करना, और गुलबर्ग सोसाइटी में कांग्रेस के पूर्व सांसद अहसान जाफरी और 30 अन्य लोगों की हत्या की जांच शामिल है। ये सीडी नरोदा पाटिया हिंसा में महत्वपूर्ण सबूत हैं, जिसमें आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार 105 मुसलमानों की हत्या हुई थी।

लेकिन गुजरात में निष्पक्ष जांच के किसी भी प्रयास को विफल करना आम बात हो गई है। शर्मा को नोटिस मिलने से एक सप्ताह पहले, 2004 के इशरत जहां मुठभेड़ की जांच के लिए गठित एक अलग एसआईटी के सदस्य, एक अन्य वरिष्ठ आईपीएस अधिकारी, सतीश वर्मा ने शिकायत की थी कि उन्हें मामले में सुरागों पर कार्रवाई करने से रोका जा रहा है। वर्मा, उन तीन पुलिस अधिकारियों में से एक हैं जो इस मुठभेड़ की जांच कर रहे हैं, जिसे कथित तौर पर गुजरात पुलिस अधिकारियों ने अपने राजनीतिक आकाओं को खुश करने के लिए करवाया था। वर्मा ने हस्तक्षेप के उदाहरणों का हवाला देते हुए एक हलफनामा भी प्रस्तुत किया था।

28 जनवरी को गुजरात उच्च न्यायालय में दायर 80 पृष्ठों के हलफनामे में वर्मा ने बताया कि कैसे गुजरात सरकार द्वारा 2009 में गठित पूर्व एसआईटी ने स्पष्ट फोरेंसिक साक्ष्यों को नजरअंदाज कर दिया था, जिनमें इशरत के शरीर में मिली गोलियां भी शामिल थीं जो पुलिस द्वारा मुठभेड़ में इस्तेमाल किए गए हथियारों से मेल नहीं खाती थीं। वर्मा ने बताया कि कैसे गुजरात कैडर के अधिकारी मोहन झा, जो पूर्व एसआईटी के सदस्य भी थे, और दिल्ली कैडर के अधिकारी करनैल सिंह ने जानबूझकर एक प्रमुख गवाह के बयान वापस लेने की बात बिना किसी टिप्पणी के उच्च न्यायालय को भेज दी ताकि संदेह और अस्पष्टता पैदा हो सके। वर्मा ने खुलासा किया कि कैसे झा, जो वर्तमान में क्राइम डिटेक्शन ब्रांच (डीसीबी) के जेसीपी हैं, ने पिछले महीने वाइब्रेंट गुजरात शिखर सम्मेलन में सुरक्षा के लिए आवश्यक होने का दावा करते हुए 26 पुलिस

अधिकारियों को सीधे अपने अधीन विशेष अभियान समूह में रखने की कोशिश की। मुठभेड़ वाले दिन ये सभी 26 अधिकारी डीसीबी के साथ थे।

नाम न छापने की शर्त पर एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने बताया, 'वर्मा का कहना है कि उन्होंने एसआईटी के काम शुरू करने के 19 दिन बाद, दिसंबर में ही एसआईटी में चल रही गतिविधियों का आधिकारिक रिकॉर्ड रखना शुरू कर दिया था। इससे पता चलता है कि उन्होंने अनियमितताओं को रिकॉर्ड में दर्ज करने की आवश्यकता समझी और उन्हें पहले से ही अंदाजा था कि निष्पक्ष जांच के उनके प्रयासों में बाधा डाली जाएगी। इससे पता चलता है कि इन फर्जी मुठभेड़ हत्याओं की जांच का यह प्रयास कितना कुटिल है।'

अशोक नारायण ने दंगों के बाद हुई फर्जी मुठभेड़ों के बारे में बोलते हुए बहुत ही प्रभावशाली ढंग से अपनी बात रखी।

प्र) उन मुलाकातों के बारे में क्या?

ए) मुठभेड़ें धार्मिक आधार से ज़्यादा राजनीतिक आधार पर होती हैं। सोहराबुद्दीन मुठभेड़ को ही देख लीजिए। उसे राजनेताओं के इशारे पर मारा गया था। अमित शाह इसी वजह से जेल में हैं। यह हर जगह हो रहा है। यहाँ भी हो रहा है। फर्जी मुठभेड़ें या तो राजनीतिक रूप से प्रेरित होती हैं या पुलिसकर्मियों के अति उत्साह के कारण होती हैं।

प्रश्न) क्या आपके गृह सचिव के कार्यकाल के दौरान ऐसा नहीं हुआ?

ए) सोहराबुद्दीन मुठभेड़ नहीं। उनमें से सिर्फ एक।

मैंने अधिकारियों से कहा कि वे जो कर रहे हैं... वह राजनीतिक रूप से प्रेरित होना चाहिए। मैंने डीजीपी से पूछा, 'आप लोग क्या कर रहे हैं?'

प्र) क्या आपको दंगों के दौरान वास्तव में क्या हुआ था, उस पर एक किताब लिखनी चाहिए?

ए) लेकिन मेरी बात पर कौन विश्वास करेगा?

प्रश्न) आप गृह सचिव थे।

ए) कांग्रेस के लोग कहेंगे कि आप सरकार का हिस्सा थे, इसलिए 'उन्होंने सरकार का पक्ष लिखा है।' भाजपा भी मेरे पक्ष से सहमत नहीं होगी। राजनीतिक दल वही मानेंगे जो वे मानना चाहते हैं।

अशोक नारायण के साथ यह मेरी आखिरी मुलाकातों में से एक थी। उन्होंने उन लगभग सभी बातों की पुष्टि की जो मैंने पिछले कई सालों में अधिकारियों के साथ अनौपचारिक बातचीत में सुनी थीं। कि सरकार का साथ देने वाले कुछ सरकारी अधिकारियों को पुरस्कार दिए गए, जबकि अन्य को दरकिनार कर दिया गया। मान लीजिए कि अशोक नारायण पूर्वाग्रही और पक्षपाती थे। फिर भी, मोदी सरकार द्वारा प्रशासन के खिलाफ जाने वाले अधिकारियों के तबादलों और बदले की भावना का रवैया सबके सामने है। राहुल शर्मा, रजनीश राय, सतीश वर्मा, कुलदीप शर्मा, इन सभी अधिकारियों के खिलाफ कम से कम 20 साल पुराने निर्दोष मामले खोदकर निकाले गए और उनका इस्तेमाल किया गया। ये वे अधिकारी थे जिन्होंने उस समय न्याय का झंडा बुलंद रखने की कोशिश की जब गुजरात में न्याय की स्थिति सबसे खराब थी, और इसी वजह से उन्हें आज तक प्रताड़ित किया जा रहा है।

आगे के अध्यायों में हम देखेंगे कि कुलदीप शर्मा, जिन्हें गुजरात का महानिदेशक बनाया जाना

था, को मात्र इसलिए पदोन्नति से वंचित कर दिया गया क्योंकि उन्होंने तत्कालीन गृह मंत्री अमित शाह के खिलाफ माधोपुरा सहकारिता मामले में जांच शुरू कर दी थी। एसपी राहुल शर्मा को निलंबित कर दिया गया और उन पर एक मदरसे में दंगाइयों को रोकने और बाद में गुजरात दंगों के दौरान विभिन्न मंत्रियों के कॉल रिकॉर्ड जांच आयोगों को उपलब्ध कराने के आरोप में मामले दर्ज किए गए। मामला अभी शांत होना शुरू ही हुआ था। अशोक नारायण ने उस राज्य के पक्षपात और मिलीभगत की पुष्टि की थी, जहां तीन महीने तक चले सबसे घातक दंगों में से एक में खून बहने दिया गया था।

अब अगले किरदार और अगले अध्याय की ओर बढ़ने का समय था।

जी.सी.रायगर

2002 के दंगों के दौरान गुजरात के खुफिया प्रमुख और बाद में सोहराबुद्दीन मुठभेड़ के समय पुलिस महानिदेशक रहे जी.सी. रायगर से मेरी मुलाकात उस दिन हुई जब सभी लोग भारत-पाकिस्तान क्रिकेट मैच को लेकर उत्साहित थे। अजय ने अपने घर पर फिल्म की स्क्रीनिंग का आयोजन किया था, जिसमें उनके अधिकांश मित्र शामिल होने वाले थे और उन्होंने मुझे भी आमंत्रित किया था। मैं जाना तो चाहता था, लेकिन अजय के मित्रों के सामने आने से बचने के लिए नहीं गया, जिनमें से कई के मजबूत राजनीतिक संबंध थे। उन्होंने मुझे पहले बताया था कि उनकी एक करीबी मित्र अनार पटेल हैं, जो शहर में एक गैर सरकारी संगठन चलाती हैं। अनार गुजरात की मुख्यमंत्री आनंदीबेन पटेल की बेटी हैं।

जब मैं उस दोपहर रायगर से मिलने पहुँचा, तो वे मैच शुरू होने का बेसब्री से इंतज़ार कर रहे थे। मैंने उनसे कहा, 'मुझे उम्मीद है कि अफरीदी छक्के मारना शुरू नहीं करेंगे, सर; वैसे भी हमारी गेंदबाजी बहुत मजबूत नहीं है।' रायगर ने उन्हें राजस्थानी चिवड़ा और चाय परोसी और गुजरात आईबी के प्रमुख के रूप में अपने दिनों को याद करने लगे। अखबारों की खबरों के अनुसार, वे सोहराबुद्दीन फर्जी मुठभेड़ मामले में सीबीआई के सामने पेश हुए थे और उस समय उन पर काफी दबाव था।

यह एक ऐसी मुलाकात थी जिसके बारे में मैं बेहद आशंकित था क्योंकि मुझे बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि रायगर किस पक्ष में हैं और उनसे कितनी सच्चाई निकलवाई जा सकती है। माइक वापस आ गया था और हम एक बार फिर नेहरू फाउंडेशन में लौट आए थे। हम रायगर से उनके कार्यालय में मिले, जहां उन्हें सेवानिवृत्ति के बाद नकली शराब के मामलों की जांच करने का काम सौंपा गया था। 2002 के गुजरात दंगों के दौरान खुफिया विभाग के एडीजीपी आर.बी. श्रीकुमार ने दंगों के बाद एक साक्षात्कार में कहा था:

शीर्ष अधिकारियों को खुश रखने के लिए कई अधिकारियों ने कुछ नहीं किया। यहां तक कि मेरे पूर्ववर्ती जी.सी. रायगर भी पीछे हट गए। बाद में, उन्हें पदोन्नति देकर पुरस्कृत किया गया, जबकि वे मुझसे कनिष्ठ थे। उन्हें सेवानिवृत्ति के बाद नकली शराब आयोग के सदस्य के रूप में भी नियुक्त किया गया है, जो एक उच्च न्यायालय के न्यायाधीश के अधीन आता है।

भट्ट द्वारा सुप्रीम कोर्ट में दिए गए हलफनामे में जिनका नाम लिया गया था, रायगर ने इस बात की पुष्टि या खंडन करने से इनकार कर दिया कि भट्ट वास्तव में 27 फरवरी 2002 को मुख्यमंत्री की बैठक में उपस्थित थे या नहीं। उन्होंने एक स्थानीय समाचार पत्र को बताया था, 'मैं कुछ नहीं कह सकता, मैं उस दिन छुट्टी पर था।'

भट्ट ने अपने हलफनामे में कहा है कि तत्कालीन डीजीपी के. चक्रवर्ती ने उन्हें बैठक में उपस्थित होने और सहायता करने के लिए कहा था, लेकिन चक्रवर्ती ने 2002 के दंगों की जांच के बारे में मीडिया से बात करने से इनकार कर दिया था और उनकी ओर से कोई सुराग नहीं मिल रहा था।

रायगर मुंबई दंगों और उसके बाद हुए फर्जी मुठभेड़ों, दोनों में प्रमुख व्यक्तियों में से एक थे। ये दोनों गुजरात में आपराधिक साजिश के दुर्भाग्यपूर्ण लेकिन स्पष्ट उदाहरण हैं। सोहराबुद्दीन मुठभेड़

की जांच के दौरान पुलिस अधिकारियों में से एक वी.एल. सोलंकी ने सीबीआई को एक लिखित बयान दिया था, जिसे बाद में आरोपपत्र में शामिल किया गया था। बयान में कहा गया था:
नवंबर 2006 के पहले सप्ताह में, उन्होंने (सुश्री गीता जौहरी, आईजी) मुझे अपने कक्ष में मिलने का निर्देश दिया। तदनुसार, मैं गांधीनगर गया। प्रारंभ में, उन्होंने मेरे साथ जांच की प्रगति पर चर्चा की। कुछ समय बाद, सुश्री गीता जौहरी ने मुझे बताया कि उस दिन एक भयावह घटना घटी थी, कि गृह राज्य मंत्री श्री अमित शाह ने उन्हें अतिरिक्त डीजीपी श्री जी.सी. रायगर और डीजीपी श्री पी.सी. पांडे के साथ अपने कार्यालय में बुलाया था और जांच की प्रगति पर चर्चा की थी।
उसने मुझे बताया था कि गृह राज्य मंत्री बहुत खराब मूड में थे, और उन्होंने उससे मेरे बारे में पूछताछ की थी कि मुझ जैसे पुलिस निरीक्षक की हिम्मत कैसे हुई ऐसी रिपोर्ट लिखने की जिससे श्री डी.जी. वंजारा, राजकुमार पांड्यान जैसे वरिष्ठ अधिकारी, जो सोहराबुद्दीन के मुठभेड़ के लिए जिम्मेदार थे, गंभीर मुसीबत में पड़ जाएं।
बैठक के बारे में विस्तार से बताते हुए, सुप्रीम कोर्ट ने सीबीआई को बताया था कि दिसंबर 2006 में अमित शाह ने गुजरात के तत्कालीन डीजीपी पीसी पांडे, एडीजीपी, सीआईडी जीसी रायगर और आईजीपी, सीआईडी गीता जौहरी (जो उस समय मामले की मुख्य जांचकर्ता थीं) के साथ हुई बैठक में कथित तौर पर जौहरी के डिप्टी सोलंकी द्वारा तैयार की गई आपत्तिजनक जांच रिपोर्टों में बदलाव की मांग की थी। सोलंकी ने सहयोग करने से इनकार कर दिया। इसके बजाय, उन्होंने सोहराबुद्दीन और कौसर बी के अपहरण के गवाह प्रजापति से पूछताछ करने की कोशिश की। प्रजापति ने नवंबर 2006 में खुले न्यायालय में चिल्लाकर कहा था कि पुलिस उन्हें जान से मारने वाली है क्योंकि उन्हें बहुत कुछ पता है। सोलंकी से बात करने से कुछ दिन पहले ही उनका भी 'मुठभेड़' हो गया था।
18 महीने से अधिक की जांच के बाद, सीबीआई ने बाद में दायर आरोपपत्र में शाह और 19 अन्य आरोपियों को नामजद किया था, जिनमें शीर्ष पुलिस अधिकारी पांडे, जौहरी, ओ. पी. माथुर, राजकुमार पांडियन, डी. वंजारा और आर. के. पटेल शामिल थे। उन पर गैंगस्टर सोहराबुद्दीन शेख की फर्जी मुठभेड़ में हत्या के गवाह प्रजापति को खत्म करने की साजिश रचने का आरोप था। गुजरात कैडर के नौ आईपीएस अधिकारी गवाह के रूप में पेश हुए: जी.सी. रायगर (तत्कालीन एडीजीपी, सीआईडी क्राइम), रजनीश राय, आई. एम. देसाई (तत्कालीन सीआईडी क्राइम में और मामले की निगरानी कर रहे थे), पी. पी. पांडे (एडीजीपी, सीआईडी क्राइम), वी. वी. रबारी (सीआईडी क्राइम के पूर्व प्रमुख), राजन प्रियदर्शी (सेवानिवृत्त), सुधीर सिन्हा (तत्कालीन राज्य सूचना सूचना विभाग के प्रमुख), ए. के. शर्मा (डीआईजी क्राइम ब्रांच अहमदाबाद) और मयूर चावड़ा (डिस्प, मुख्यमंत्री सुरक्षा)।
सीबीआई अधिकारियों ने कहा कि रायगर और राय प्रमुख गवाह थे।
आरोपपत्र में कहा गया है कि दिसंबर 2006 के मध्य में अमित शाह (तत्कालीन गृह राज्य मंत्री) ने अपने कार्यालय में एक बैठक बुलाई, जिसमें पांडे, जौहरी और रायगर उपस्थित थे, ताकि शेख मामले की जांच पर अपनी नाराजगी व्यक्त कर सकें। शाह ने जौहरी को कुछ दस्तावेज नष्ट करने के लिए कहा।

सीबीआई ने कहा, 'हालांकि रायगर ने खुद को इससे दूर रखने का अनुरोध किया था, लेकिन पांडे और जौहरी इन साजिशपूर्ण निर्देशों के स्वेच्छा से मिलीभगत करने वाले सदस्य थे।'

रायगर ने सीबीआई को बताया कि जब सोहराबुद्दीन फर्जी मुठभेड़ मामले की जिम्मेदारी उनके हाथ में थी, तब तत्कालीन गृह मंत्री अमित शाह उन पर लगातार दबाव डाल रहे थे। 'वह मेरे काम से नाखुश थे। वह मेरे जरिए कुछ गैरकानूनी काम करवाना चाहते थे, लेकिन इससे मुझ पर बहुत तनाव आ गया। इसलिए मैंने तबादला मांगा। उसी दिन गृह मंत्री ने मेरा तबादला कराई में करने का आदेश दिया।'

उनकी जगह एक अन्य अधिकारी, ओ. पी. माथुर को कार्यभार सौंपा गया। रायगर ने कहा, 'मैंने शाह से तबादला करने के लिए कुछ दिन मांगे थे, लेकिन उन्होंने उसी दिन मेरा तबादला कर दिया।'

उन्होंने यह भी कहा कि उस समय मामले की जांच कर रहे पीआई वी. एल. सोलंकी ने मामले के सिलसिले में उदयपुर जाने के लिए कभी उनकी अनुमति नहीं ली थी। तत्कालीन एडीजीपी ओ. पी. माथुर ने अपने बयान में कहा कि डीएसपी जी. बी. पढेरिया और आईजीपी गीता जौहरी के बीच मतभेद हो गया था, क्योंकि जौहरी को शक था कि पढेरिया ने गवाह नथुभा जडेजा को मुकरने के लिए जिम्मेदार थे। इस पूरे मामले को प्रधान सचिव (गृह) के संज्ञान में लाया गया, जिन्होंने कहा कि उन्हें इसे आपस में सुलझा लेना चाहिए। बाद में मामला सुलझ गया। हालांकि, जौहरी ने उन्हें विश्वास में नहीं लिया, उन्होंने सीबीआई को बताया।

मेरे स्टिंग ऑपरेशन के बाद मार्च 2011 में गुजरात छोड़ने के बाद इन बयानों का विवरण सामने आया।

दिसंबर में जब मैं माइक के साथ रायगर से पहली बार उनके कार्यालय में मिला, तब भी सीबीआई ने उन्हें पूछताछ के लिए तलब किया हुआ था। मैंने माइक को स्थिति की संवेदनशीलता समझाई और बताया कि हो सकता है कि हम उनसे कुछ भी जानकारी न निकाल पाएं। 'माइक, आज उनसे राजनीति के बारे में कुछ मत पूछो, चलो ऐसा दिखावा करते हैं जैसे हम विदेशी हैं और हमें इस मामले की कोई जानकारी नहीं है।'

रायगर माइक से बहुत प्रभावित हुए और उनसे गुजरात में उनके अनुभव के बारे में पूछा। माइक ने उन्हें अहमदाबाद की गुफा, पाल्दी और सरखेज रोजा में अपने शूट के बारे में बताया। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या सिर्फ गुजराती ही विदेशी या अमेरिकी चीजों से आकर्षित होते हैं, या हम दोनों के आत्मविश्वास ने ही इन अधिकारियों को हमारी कहानी पर इतनी आसानी से विश्वास करने पर मजबूर कर दिया था।

मुझे राहुल ढोलकिया से हुई बातचीत याद है, जो गुजराती मूल के और बॉलीवुड फिल्म निर्माता हैं। उनकी फिल्म 'परज़ानिया' गुजरात दंगों पर आधारित थी, जिसे राज्य के सिनेमाघरों में प्रदर्शित होने से रोक दिया गया था। मुंबई के जुहू स्थित कोस्टा कॉफी में बैठे राहुल ने मुझे अपनी फिल्म 'परज़ानिया' के लिए धन जुटाने और फिल्म बनाने के अपने अनुभव की कहानियां सुनाईं, जिससे मैं खूब हंसा। फिल्म के निर्माता को तब तक पता ही नहीं था कि फिल्म दंगों के दौरान राज्य में अल्पसंख्यकों के साथ हुए अन्याय के खिलाफ है, जब तक कि हिंदू दक्षिणपंथी संगठनों ने इसका

विरोध नहीं किया। राहुल एक अमेरिकी चैनल के लिए काम कर चुके थे और उन्होंने अनिवासी भारतीयों के लिए गुजरात पर फिल्म बनाने का बहाना बनाया। गुजरात में जिन लोगों से मैं मिला, उनमें से अधिकांश को मेरी कहानी भी कुछ ऐसी ही थी। निर्माताओं और संबंधित अधिकारियों के लिए ढोलकिया पर भरोसा करने के लिए यह पर्याप्त संदर्भ था। एक बार जब उन्हें फिल्म के लिए गुजरात दंगों के फुटेज की जरूरत पड़ी, तो उन्होंने एक अखबार से संपर्क किया जिसके पास संबंधित टेप थे। फिल्म के प्रमुख अधिकारी इस बात से प्रभावित हुए कि वह अमेरिका से हैं। और जब उन्हें पता चला कि ढोलकिया के दादा हिंदू महासभा के अध्यक्ष थे, तो वे और भी ज्यादा प्रभावित हुए। उन्हें तुरंत वह सब कुछ उपलब्ध कराया गया जिसकी उन्हें आवश्यकता थी।

लेकिन असल समस्या रायगर की थी। हमसे पहली मुलाकात में वे बात करने के लिए बहुत उत्सुक थे और मुझे पिता तुल्य सलाह दे रहे थे कि मैं अपनी शादी में और देरी न करूं, क्योंकि एक उम्र के बाद लड़की को अच्छा जीवनसाथी मिलना मुश्किल हो जाता है। वे राजस्थान के एक पुराने ख्यालों वाले परिवार से थे और अमित शाह के गुस्से के डर से उनके खिलाफ चल रहे मामले में गवाह बनने से हिचकिचा रहे थे। लेकिन फर्जी मुठभेड़ों में शाह की संलिप्तता के सबूत दिन-ब-दिन बढ़ते जा रहे थे, इसलिए रायगर ने आखिरकार गवाह बनने का फैसला कर लिया। लेकिन रायगर ने मुझसे बातचीत के दूसरे दिन जो खुलासा किया, वह चौंकाने वाला था।

फर्जी मुठभेड़ों में शामिल सभी किरदारों को मैं जानता था, लेकिन जिस तरह से प्रशासन ने उन सभी किरदारों को अपने हिसाब से इस्तेमाल किया था, उसे समझना मेरे लिए मुश्किल था। रायगर निश्चिंत थे क्योंकि उन्हें पता था कि मैं पहले ही पी.सी. पांडे, अशोक नारायण और राजन प्रियदर्शी से बात कर चुका हूं और उन्हें पूरा यकीन था कि मैं गुजरात की गौरवशाली पुलिस फोर्स को कवर कर रहा हूं।

मैंने उनसे भुज भूकंप के बारे में बात की और उन्होंने हमें भूकंप की तीव्रता, जानमाल के नुकसान और उसके बाद गुजरात पुलिस द्वारा किए गए कठिन कार्यों के बारे में जानकारी दी। मैंने भोलेपन का दिखावा करते हुए उनसे पूछा कि क्या गुजरात वाकई उतना ध्रुवीकृत था जितना बताया जाता है? उन्होंने कहा, 'अरे, आपको अंदाजा भी नहीं है कि 2002 में यहाँ क्या हुआ था।' जैसे ही उन्होंने दंगों के बारे में बताया, मेरा भोलापन जिज्ञासा में बदल गया। मैंने उन्हें बताया कि मेरे पास अन्य अधिकारियों से इस बारे में कुछ जानकारी है। रायगर खुफिया विभाग के प्रमुख थे, जिसका अर्थ है कि गुजरात दंगों के दौरान वे एक महत्वपूर्ण पद पर थे।

सवाल) लेकिन मुझे मोदी के बारे में बताएं, कि हर कोई उन्हें ही जिम्मेदार मानता है?

ए) मुझे इसके बारे में बात करने के लिए मजबूर मत करो? मैं अभी-अभी इससे बाहर निकला हूँ।

प्रश्न: जब यह सब हो रहा था, तब आप वहीं मौजूद थे?

ए) मैं था।

प्रश्न) क्या यह काफी संवेदनशील मुद्दा है?

ए) हां, मैं उन तीन महीनों के दंगों को भूलना चाहता हूं। कुछ ऐसी बातें हुईं जो नहीं होनी चाहिए थीं।

प्र) सचमुच? क्या इससे आपकी अंतरात्मा को भी ठेस पहुंची?

ए) जी हाँ, ऐसा हुआ था।

प्रश्न) अशोक नारायण ने भी यही कहा था।

ए) जी हां, वो भी इस पूरे मामले में शामिल थे। लोगों के मन में अभी भी ये बात ताज़ा है, हर जगह यही चर्चा है। अमेरिका अभी भी उन्हें [मोदी को] स्वीकार नहीं करता। इतनी लोकप्रियता के बावजूद। हाल ही में विकीलीक्स में खबर आई थी कि अमेरिका अब उनसे अच्छे संबंध रखना चाहता है। लेकिन बाद में उसी विकीलीक्स ने उनके बारे में अपमानजनक बातें भी कह दीं। इसलिए उन्होंने मीडिया में अपने अच्छे पक्ष को उजागर किया।

प्रश्न) लेकिन क्या ये देश में हुए सबसे भीषण दंगे थे? क्या ये मुंबई से भी बदतर थे?

ए) हां, मुंबई तो सिर्फ दो दिन के लिए था। यह वाला तो महीनों तक लगातार चलता रहा।

प्र) लेकिन कैसे? इसे इतने लंबे समय तक चलने की अनुमति क्यों दी गई?

ए) नारायण ने आपको बताया होगा, वे उस समय गृह सचिव थे।

प्र) जी हां, उन्होंने कहा कि वे बहुत नाराज थे। उन्होंने सरकार की कड़ी आलोचना की, उनका कहना था कि राज्य सरकार ने कोई कार्रवाई नहीं की।

ए) वह गृह सचिव थे। वह सरकार के सबसे महत्वपूर्ण पदाधिकारी थे। और वह जो कह रहे हैं वह सच ही होगा।

प्र) लेकिन क्या आप सभी निराश थे?

ए) हाँ, हममें से अधिकांश लोग निराश और दुखी थे, सिवाय उन लोगों के जो उस समय सरकार का साथ दे रहे थे, उन्होंने सरकार का पक्ष लिया। इसमें केवल राजनेता ही शामिल नहीं थे, पुलिसकर्मी भी जिम्मेदार थे।

प्र) तो क्या दंगों के दौरान राजनेता और पुलिस के बीच सांठगांठ जैसी स्थिति थी?

ए) सीमित रूप से हां, क्योंकि एक बार स्थिति नियंत्रण से बाहर हो जाए तो ज्यादा कुछ नहीं किया जा सकता है।

सवाल) लेकिन उन्होंने [मोदी] इससे काफी राजनीतिक लाभ उठाया। आज वह जो कुछ भी हैं, दंगों की वजह से ही हैं।

ए) जी हाँ, बिलकुल। अगले ही चुनाव में वे घबराए हुए थे। लेकिन यह उनके काम आया। उन्हें लगा कि उन्होंने यह उनके लिए किया है।

बातचीत जल्द ही फर्जी मुठभेड़ों की ओर मुड़ गई। जब जांच चल रही थी तब रायगर अतिरिक्त डीजीपी थे। सीबीआई ने फर्जी मुठभेड़ों के संबंध में उस वर्ष मई और जून में उनसे प्रतिदिन दस-दस घंटे की पूछताछ की थी। फिर भी, उन्होंने मुझे अपनी कहानी बताने में कोई संकोच नहीं किया।

प्र) यहाँ हो रही इन मुलाकातों का क्या मतलब है? आप तो वहाँ मौजूद थे।

ए) मैं सिर्फ एक मामले में शामिल था। एक अपराधी [सोहराबुद्दीन] को झूठे मुठभेड़ में मार दिया गया। मूर्खतापूर्ण ढंग से उसकी पत्नी को मार डाला गया।

प्रश्न) क्या इस मामले में कोई मंत्री भी शामिल था?

ए) गृह मंत्री अमित शाह।

प्र) उनके अधीन काम करना मुश्किल रहा होगा।
ए) हम उससे असहमत थे। हमने उसके आदेश मानने से इनकार कर दिया, इसीलिए मुठभेड़ों में हमें गिरफ्तार होने से बचा लिया गया।
प्रश्न) क्या स्थिति हर जगह इतनी ही खराब है?
ए) गुजरात 10 साल पहले कहीं बेहतर स्थिति में था।
प्रश्न) क्या यह राजनीतिक परिवर्तन के कारण है?
ए) लोकतंत्र में अगर कोई व्यक्ति हद से ज्यादा प्रभावशाली हो जाता है, तो यह नुकसानदेह हो सकता है, जैसे कि गृह मंत्री अमित शाह। वे तबादलों, नियुक्तियों और पदोन्नति को नियंत्रित करते हैं। और अगर कोई अपना काम ठीक से नहीं करता, तो उसे किसी गौण पद पर भेज दिया जाता है, और कोई भी गौण पद पर जाना नहीं चाहता। इसीलिए मैंने सोहराबुद्दीन मामले के दौरान तबादला करने का अनुरोध किया था।
प्रश्न) क्या आपको इसलिए स्थानांतरित किया गया क्योंकि वे नहीं चाहते थे कि आप जांच करें?
ए) क्योंकि मैं गलत तरीके से जांच नहीं करना चाहता था।
प्र) और वे चाहते थे कि आप गलत तरीके से जांच करें?
ए) हाँ।
सवाल) एक आदमी को ये सब करने की इजाजत कैसे मिल जाती है? अमित शाह को ये सब करने की छूट कैसे मिल सकती है?
ए) उसने अपना रास्ता खुद बना लिया। वह सत्ता में बैठे लोगों के करीबी था।
प्र) क्या वह मुख्यमंत्री के करीबी थे?
ए) जी हाँ, वह मुख्यमंत्री के बहुत करीब थे। वह मुख्यमंत्री के सबसे करीबी व्यक्ति थे।
सवाल) तो क्या मुख्यमंत्री उन्हें गिरफ्तारी से नहीं बचा सके?
ए) वह ऐसा नहीं कर सका [उसके खिलाफ सबूत थे]
प्र) हां, और फिर वह खुद भी इसमें शामिल हो जाता?
ए) अगर वह दखल देता है तो उसे जाना पड़ेगा, इस तरह यह आदमी [सीएम] चालाक है। उसे सब कुछ पता था लेकिन उसने दूरी बनाए रखी ताकि वह इसमें न फंसे।
कानून है, आप लगातार मुठभेड़ नहीं कर सकते। अगर किसी एक कारण से भी आप ऐसा करते हैं, तो भी आप लोगों को खत्म नहीं कर सकते। और इन मंत्रियों के लिए यह बहुत आसान है, वे बच जाते हैं, उन्हें हस्ताक्षर करने की ज़रूरत नहीं होती, वे मौखिक रूप से ही काम कर देते हैं। लेकिन अब तकनीक के साथ यह बहुत आसान हो गया है, वे ऐसे फोन इस्तेमाल करते हैं जिन्हें ट्रैक किया जा सकता है।
सवाल) हां, आपके मामले में मैंने पढ़ा था कि उन्होंने कुछ कॉल रिकॉर्ड के आधार पर मंत्री को बुलाया था।
ए) हाँ।
प्रश्न) लेकिन क्या राज्य में ईमानदार अधिकारी भी हैं, जैसा कि हम अभी देख रहे हैं?
ए) जी हाँ, ऐसे लोग बहुत हैं, लेकिन नुकसान पहुँचाने के लिए बस कुछ भ्रष्ट लोगों की ज़रूरत

होती है। हालाँकि, अभी भी कुछ अच्छे अधिकारी बचे हैं, जिनकी वजह से अब मंत्रियों पर भी कार्रवाई हो रही है।

प्र) जी हां, किसी ने मुझे राहुल शर्मा नाम के एक अधिकारी से मिलने के लिए कहा था। वह कथित तौर पर ईमानदार हैं और इसलिए सरकार की नजरों में अच्छे नहीं हैं?

ए) मुस्लिमों की जान बचाने के कारण सरकार उन पर कड़ी नज़र रख रही है। उन्होंने एक स्कूल में मुस्लिम बच्चों की जान बचाई। न केवल जान बचाई बल्कि कुछ लोगों को गिरफ्तार भी किया और सत्ताधारी पार्टी के एक सदस्य को गिरफ्तार करने के कारण उनका तबादला कर दिया गया।

ए) समस्या सरकार की तरफ से थी, और शुरू में उन्हें इस बात का एहसास ही नहीं था कि स्थिति इतनी खराब हो जाएगी। शुरू में वे दंगाइयों के खिलाफ बल प्रयोग नहीं करना चाहते थे। इसीलिए हालात बेकाबू हो गए।

प्रश्न) क्या यह सच है कि वे मुसलमानों के खिलाफ़ खड़े हिंदुओं के प्रति नरम रुख अपनाना चाहते थे?

ए) शुरू में हाँ, यह एहसास नहीं था कि हालात इतने खराब हो जाएंगे। लेकिन आपने जो कहा वह सच है।

सवाल) लेकिन आप अधिकारियों को हिंदुओं और दंगाइयों के प्रति नरम रुख अपनाने के लिए कहा गया था?

ए) हम नहीं, सामान्य तौर पर नहीं, बल्कि महत्वपूर्ण पदों पर आसीन लोग, कुछ स्थानों पर, कुछ क्षेत्रों में, उनके माध्यम से यह बात संप्रेषित की गई।

प्रश्न) मोदी से पहले केशूभाई नाम के एक मुख्यमंत्री थे? वे कैसे थे?

ए) मोदी की तुलना में, वह एक संत थे। तुलनात्मक रूप से। मेरा मतलब है कि केशूभाई जानबूझकर किसी को नुकसान नहीं पहुंचाना चाहेंगे। चाहे वह किसी भी धर्म का हो। वह किसी को सिर्फ इसलिए नुकसान नहीं होने देंगे क्योंकि वे मुसलमान हैं।

प्रश्न) लेकिन महोदय, निष्पक्ष दृष्टिकोण से देखें तो, उदाहरण के तौर पर, बहुत सारे तथ्य कल्पना के साथ मिश्रित प्रतीत होते हैं?

ए) आप जानते हैं कि यह मुश्किल है। क्योंकि ये लोग सीधे आदेश नहीं देते, ये सब अदृश्य हैं। कानून में भी देखिए। उदाहरण के लिए, अगर मुख्य सचिव कहते हैं कि मैं आपका अनुसरण नहीं करूंगा और मुख्यमंत्री कहते हैं कि आपको करना होगा, तो जो भी हो, उसकी जिम्मेदारी मुख्यमंत्री की होती है। लेकिन पुलिस बल में, यह मेरी जिम्मेदारी है।

प्रश्न) श्री चक्रवर्ती ने भी यही बात कही। उन्होंने कहा कि कुछ आदेश दिए गए थे, लेकिन वे सीधे तौर पर नहीं दिए गए थे? और यह एक ऐसी बात है जिसे समझना जरूरी है?

ए) हाँ, ऐसा लगता है जैसे वे यह बात उन लोगों को बताते हैं जिनकी उन्होंने अतीत में मदद की थी। वे जानते हैं कि कौन उनकी मदद करेगा। अनौपचारिक रूप से वे निरीक्षकों और निचले स्तर के पुलिस अधिकारियों से बात करते थे। लेकिन सभी अधिकारी उनके आदेश नहीं मानते थे। कुछ शीर्ष अधिकारी ऐसे भी हैं जिन पर अभी भी दोष सिद्ध हो चुके हैं।

सवाल) तो क्या मुख्यमंत्री के ऐसा कहने पर उल्टा असर पड़ेगा?

ए) जी हाँ, ठीक वैसे ही जैसे आप गांधीनगर में अशोक नारायण से मिले थे। वह कुछ भी नहीं लेता था। वह 'जी सर' भी नहीं कहता था।

प्र) क्या वह आईएएस अधिकारी भी हैं?

ए) जी हाँ, उन्हें ऑर्डर कागज़ पर मिलते हैं। हमारे विपरीत।

प्र) महोदय, आपने एक दिलचस्प मुद्दा भी उठाया। उदाहरण के लिए, जब आपने कहा कि मुठभेड़ की जांच के दौरान आप राजनीतिक दबाव में थे; तो क्या आप उन्हीं लोगों को गिरफ्तार नहीं कर सकते जिन्होंने आप पर दबाव डाला था? उदाहरण के लिए, गृह मंत्री?

ए) कुछ सबूत तो होने ही चाहिए। ये हमारे खिलाफ उपलब्ध सबूत हैं। मैंने शाह से कहा था कि जब वो मुझसे कुछ काम करने को कहेंगे तो मैं वो नहीं करूंगा। ऐसे बहुत से लोग हैं जो कहेंगे 'जी सर, हम कर देंगे', क्योंकि उनके अपने स्वार्थ होते हैं।

प्रश्न) तो अगर आप सीधे तौर पर गृहिणी के खिलाफ जाते हैं तो राज्य वास्तव में आपको नुकसान नहीं पहुंचा सकता?

ए) खैर, सीधे तौर पर तो नहीं, जब तक कि वे अप्रत्यक्ष रूप से मेरी जान न ले लें। लेकिन हाँ, यहाँ लोकतंत्र है। इसलिए हम जीवित रह सकते हैं।

प्रश्न) मैं आपके बारे में पढ़ रहा था और ऐसा लगता है कि आपके गृह मंत्री शाह पर यह आरोप है कि वे संबंधित अधिकारियों से गवाहों और बयानों की मांग करते थे।

ए) लेकिन उन्हें वे जवाब कभी नहीं मिले। वे अप्रत्यक्ष रूप से पूछते थे: मेरे खिलाफ बोलने वाले लोग कौन हैं?

प्रश्न) श्रीमती जौहरी का क्या हुआ? उन्होंने कहा था कि सोहराबुद्दीन एक आतंकवादी था।

ए) देखिए, मुद्दा सोहराबुद्दीन से ज़्यादा उसकी पत्नी का है। अगर सोहराबुद्दीन की हत्या वैध या कानूनी मुठभेड़ में भी हुई होती तो कोई समस्या नहीं होती। मुद्दा तो पत्नी का है, उसे क्यों मारा गया? और वो भी तीन दिन बाद।

प्र) तो आप इसकी जांच कर रहे थे?

ए) जब ये सारी बातें सामने आईं कि मुलाक़ातें झूठी थीं, तब हमने इसकी जांच की। गीता ने यह काम किया, वो मेरे अधीन काम कर रही थी। जब तक मैं वहाँ थी, उसने अच्छा काम किया, उसके बाद... [मुस्कुराता है]।

प्रश्न) इसी कारण आपका तबादला हुआ था?

ए) हाँ।

प्रश्न) दरअसल, मैं पी.सी. पांडे से भी मिला था।

ए) ओह, वह पुलिस आयुक्त थे।

प्र) तो क्या आप दोनों दंगों के दौरान साथ काम कर रहे थे?

ए) हां, हमें ऐसा करना पड़ा, मैं आईबी का प्रमुख था।

प्रश्न) और जिन कई अधिकारियों से मैं मिला, उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री ने पांडे पर भरोसा किया और दंगों के दौरान सारा काम उन्हीं के माध्यम से करवाया।

ए) अब तक तो आपको दंगों के बारे में सब कुछ पता चल ही गया होगा [मुस्कुराते हुए]

रायगर ने सब कुछ कह दिया था। वास्तव में, उन्होंने कुछ भी अनकहा नहीं छोड़ा था। उनके कहे हर शब्द में मोदी, शाह और मिलीभगत करने वाले पुलिसकर्मियों की संलिप्तता साफ झलक रही थी। मैं अंदर ही अंदर गुस्से से उबल रहा था। माइक मेरी नाराजगी को भांप गया था, रायगर के घर से निकलते समय उसने मेरा हाथ पकड़ लिया। यह बेशर्मी भरा व्यवहार था। रायगर ने गुजरात दंगों और फर्जी मुठभेड़ों में राज्य की मिलीभगत से जुड़ी सभी अनौपचारिक बातचीत की पुष्टि कर दी थी।

क्या रायगर ने यह निष्कर्ष नहीं निकाला था कि आईपीएस अधिकारी राहुल शर्मा को गुजरात के एक मदरसे में मुस्लिम छात्रों की जान बचाने के कारण राज्य द्वारा निशाना बनाया जा रहा था? क्या हम अब भी यह मान सकते हैं कि तत्कालीन गुजरात मुख्यमंत्री और उनके मंत्रियों के खिलाफ मीडिया द्वारा बदले की भावना से कार्रवाई की जा रही थी? इन टेपों के सबूत इसके विपरीत ही थे।

मेरा सिर दर्द कर रहा था। मुझे अपने परिवार की याद आ रही थी, अपने लोगों के प्यार और स्नेह की चाह थी। मैं इस दुर्भाग्यपूर्ण राज्य में फैलाई जा रही नफरत से भाग जाना चाहती थी, जो हर दिन किसी न किसी के द्वारा मेरे सामने प्रकट हो रही थी। मुझे आराम की ज़रूरत थी।

मैंने पानी के दरवाजे पर दस्तक दी। उसने एक स्थानीय कारीगर से कुछ सजावटी हस्तशिल्प खरीदे थे और उन्हें अपनी दीवार पर लगाने की कोशिश कर रही थी। जब उसने दरवाजा खोला, तो उसने मुस्कुराते हुए कहा, 'अरे, मेरी मदद करो' और गुजरात की खूबसूरती के बारे में बातें करने लगी। हाँ, मैंने धीरे से कहा। हाँ, सच में, काश पानी भी वो नफरत देख पाती जो मैंने देखी थी। वह गुजरात की कई युवा आबादी की तरह सिर्फ 18 साल की थी। उन्हें इतनी नफरत क्यों परोसी जा रही थी? मैं कुछ देर काम नहीं करना चाहता था। मैंने अजय को फोन किया।

कॉलेज में एक उत्सव था जिसके लिए उसके पास कुछ पास थे। उसने मुझे लेने की पेशकश की। मैंने काला कुर्ता पहना, आंखों में काजल लगाया, मेकअप किया और ऊँची एड़ी के जूते पहने। माइक, जो पास में ही किताब पढ़ रहा था, मेरे साथ आने से मना कर दिया और सुझाव दिया कि मैं एक दिन के लिए कॉलेज की छात्रा बन जाऊं और बाहर जाकर नाच-गाना कर एक अच्छी शाम बिताऊं। मुझे इसकी सख्त जरूरत थी। उस शाम मुझे लगा कि नेहरू फाउंडेशन के बाहर कोई ऐसा व्यक्ति खड़ा है जिसे मैंने सुबह भी वहीं देखा था।

शायद यह महज़ मेरा एक आभास था। उत्सव स्थल तक ऑटो लेने के बजाय, मैंने अजय को मुझे लेने के लिए संदेश भेजा। उस शाम मैंने तस्वीरें खींचीं, छात्रों के साथ नृत्य किया, ज़ोर-ज़ोर से गीत गाए। अगले दिन, जो कार कल बाहर खड़ी थी, वह गायब थी।

पी.सी.पांडे

बल में कई लोग उन्हें शुतुरमुर्ग कहते थे, जबकि कुछ उन्हें एक अत्यंत वीर, सुसंस्कृत अधिकारी बताते थे जो वाक्पटु और विनम्र थे। एक ऐसा व्यक्ति जिस पर मुख्यमंत्री सबसे अधिक भरोसा करते थे और राज्य के सभी महत्वपूर्ण मामलों पर मोदी और शाह दोनों से परामर्श लेते थे। वह जीवन की सुख-सुविधाओं से प्यार करने वाले व्यक्ति थे - विदेश यात्राएं, अपने बारे में प्रशंसा पाना और दोस्तों के साथ क्लब या जिमखाना में शामें बिताना।

2 मार्च 2002 के द टेलीग्राफ अखबार ने उनके बारे में निम्नलिखित विवरण लिखा था।

अहमदाबाद के पूर्व पुलिस आयुक्त श्री पी.सी. पांडे (जब यह नरसंहार हुआ था तब वे पुलिस आयुक्त थे)। पुलिस की भूमिका को पुलिस आयुक्त पी.सी. पांडे के इस कथन से बेहतर कोई उदाहरण नहीं मिलता कि, 'पुलिस आम सामाजिक परिवेश से अलग-थलग नहीं है... जब समाज की सोच में बदलाव आता है, तो पुलिस भी उसका हिस्सा होती है और इसका कुछ न कुछ प्रभाव पड़ना तय है।'

मैंने माइक से पांडे को फोन करवाया और फिर खुद भी उन्हें फोन करके उनका शेड्यूल चेक किया। मुझे लगा कि वे प्रभावित हुए हैं। जब हम अहमदाबाद स्थित उनके बंगले में दाखिल हुए, तो वे अपनी व्हीलचेयर पर बैठी मां को बगीचे में टहला रहे थे। मैंने उन्हें और उनकी मां को 'नमस्ते' कहा। माइक का परिचय सहायक के रूप में कराया गया और हमें अंदर बुलाया गया। हमें बताया गया कि उनकी पत्नी कैंसर का इलाज करवा रही हैं, वे भी लिविंग रूम में आईं और अपना परिचय दिया। वहां कॉफी टेबल पर अखबारों और पत्रिकाओं के ढेर लगे थे, साथ ही इंडिया टुडे और अन्य गुजराती अखबारों की एक प्रति भी रखी थी।

सबसे पहले उन्होंने मुझसे मेरे उपनाम त्यागी के बारे में पूछा। मैंने उन्हें आरएसएस से अपने जुड़ाव, अपने पिता (जो एक संस्कृत शिक्षक थे) और अपने अमेरिकी नागरिकता के बारे में बताया। मैंने उन्हें बताया कि मैं एक कायस्थ हूँ, मेरा परिवार मुंबई और कानपुर में रहता है और मैं धर्म से दूर हूँ। लेकिन मैंने उन्हें आश्वस्त किया कि देश में मुसलमानों को तुष्टीकरण देने का माहौल मुझे अपने धर्म के करीब ला रहा है।

इसका मनचाहा असर हुआ, लेकिन पांडे एक चतुर व्यक्ति थे। उन्हें यह जानने की उत्सुकता थी कि क्या उनसे मिलने से पहले किसी ने हमें मीडिया में उनकी कथित संदिग्ध छवि के बारे में बताया था। वह अपनी चालें बखूबी चल रहे थे। उस दिन मैंने अपना कोई भी उपकरण नहीं पहना था। मैंने कहा कि मैंने उनके बारे में केवल अच्छी बातें ही फिल्म निर्माता नरेश कनोडिया से सुनी थीं, जो गुजरात में हमारे एकमात्र संपर्क सूत्र थे।

'ओह, अब समझ आया,' उन्होंने कहा, 'वरना तुम भी अल जज़ीरा और इस देश के दूसरे पीले पत्रकारों की तरह पूर्वाग्रह से ग्रसित हो जाते।' मैंने उन्हें बताया कि मैं सूरत के उन हीरा व्यापारियों से मिलना चाहता हूँ जो दुनिया भर में मशहूर हैं। मैंने पूरी तैयारी कर ली थी। पांडे के बेटे सूरत में हीरा व्यापार करते थे और उन्होंने खुशी-खुशी मुझे उनके संपर्क विवरण दे दिए। मैंने पांडे से यह भी अनुरोध किया कि वे मुझे वाइब्रेंट गुजरात के फिल्म विभाग या प्रचार विभाग के किसी व्यक्ति

से मिलवा दें, जिसके बारे में हमने बहुत अच्छी बातें सुनी थीं। 'सर, मुझे कच्छ के बारे में जानना है, वहाँ की सफेद रेत के बारे में, नए राजमार्ग के बारे में और अत्याधुनिक तकनीक के बारे में, जो गुजरात को भारत के सबसे जीवंत राज्यों में से एक बनाती है। साथ ही, इसकी संस्कृति के बारे में भी कुछ जानना है।'

दंगों के दौरान अपनी विवादास्पद छवि को लेकर पांडे द्वारा उकसाए जाने के बावजूद, मैंने ऐसा व्यवहार किया मानो मुझे इसमें कोई दिलचस्पी ही न हो। मुझे तिरुपुग्ज़ा नामक एक सज्जन का नंबर दिया गया, जो दक्षिण भारतीय नौकरशाह थे और हमें गुजरात, विशेष रूप से जीवंत गुजरात अभियान से संबंधित सभी प्रासंगिक सामग्री उपलब्ध कराएंगे।

'और मैथिली,' उन्होंने उत्साह से कहा, 'तुम्हें अखबार में सुहेल सेठ नाम के एक बेहद सम्मानित बुद्धिजीवी का यह लेख भी जरूर पढ़ना चाहिए।' उन्होंने पूरी तैयारी कर रखी थी। मोदी की प्रशंसा करने वाले सभी लेखों के प्रिंटआउट तैयार थे, साथ ही इंडिया टुडे के उस अंक की एक प्रति भी थी जिसमें देवबंद के मौलाना वस्तानवी ने मोदी की प्रशंसा की थी, हालांकि बाद में उन्होंने कहा कि उनके इस बयान को गलत तरीके से पेश किया गया था। पांडे के पास सुहेल सेठ के लेख की कम से कम 12 प्रतियां थीं, जिनमें से एक उन्होंने मुझे सौंप दी। पांडे ने आगे कहा, 'और अगर यह फिल्म अमेरिका में रहने वाले गुजरातियों के लिए है, तो मुझे यकीन है कि मोदी जी आपसे बात करके खुश होंगे। मुझे बता दीजिए, मैं मुलाकात तय कर दूंगा।'

मैंने बहुत कम उत्साह दिखाया और कहा कि मैं पाण्डे जिससे भी मिलवाना चाहें, उससे मिलूंगा क्योंकि वे गुजरात के सबसे जानकार व्यक्तियों में से एक लगते हैं और मुझे फिल्म बनाने के लिए उनके मार्गदर्शन की आवश्यकता होगी। पाण्डे इससे प्रसन्न प्रतीत हुए।

बाद में कैंटीन में 20 रुपये का लंच करते हुए मैंने माइक से कहा, "हम आम सैनिकों से नहीं निपट रहे थे।" मैंने अपनी प्लेट में रखा तला हुआ पापड़ माइक को दे दिया, जिसे उसने बड़े चाव से खाया। मैंने उसे बताया कि तहलका में मेरे एक सहकर्मी ने पहले गुजरात में एक स्टिंग ऑपरेशन किया था। लेकिन वह गुंडों और दंगाइयों के साथ था। यहाँ हम अनुभवी राजनयिकों से निपट रहे थे, इसके लिए बेहद आत्मविश्वास और अपने द्वारा निर्धारित आधार पर पूर्ण विश्वास होना ज़रूरी था। माइक ने सुझाव दिया कि स्टिंग ऑपरेशन खत्म होने के बाद हम एक फिल्म की पटकथा लिखें। हम हँस पड़े।

पी.सी. पांडे से मुलाकात के दौरान, हमने रायगर, अशोक नारायण, माया कोडनानी के साथ भी अपनी बैठकें जारी रखीं और उन सभी को दूसरों के साथ हमारी मुलाकातों के बारे में बताया गया। एक दिन मैं बाल-बाल बची जब मैं पी.सी. पांडे के बंगले पर एक बैठक के लिए जा रही थी। जैसे ही मैं उनके घर के पास पहुँची, मैंने एक अधिकारी के अर्दली को देखा जो मुझे राणा अय्यूब के नाम से जानता था और वह तीन घर दूर एक बंगले से बाहर निकल रहा था। सौभाग्य से मेरे घुंघराले बाल, जो आमतौर पर मेरी पहचान बता देते हैं, अच्छी तरह से बंधे हुए थे और मेरे रुमाल ने मेरे आधे चेहरे को लगभग ढक रखा था। पांडे मुझे लेने के लिए द्वार पर खड़े थे। मेरे माथे पर पसीने की बूँदें उभर आईं और गालों पर टपकने लगीं। मेरा शरीर का तापमान बढ़ गया था। पांडे ने देखा कि मुझे पसीना आ रहा है और मेरे चेहरे का रंग बदल गया है। 'क्या तुम ठीक

हो मैथिली?' उन्होंने पूछा और मुझे अपने बंगले में ले गए। 'जी सर,' मैंने जवाब दिया, अभी भी इस बात से उबर नहीं पाई थी कि एक मिनट पहले ही मेरा भेद खुल सकता था। मैंने धीरे से कहा कि मौसम में बदलाव के कारण शायद मुझे बुखार हो गया है।

उन्होंने तुरंत मुझे बिठाया, किसी से मेरे लिए कॉफ़ी बनवाई और खुद अपने कमरे में जाकर मेडिकल किट ले आए। उन्होंने थर्मामीटर निकाला और मुझे उसे अपनी जीभ के नीचे रखने को कहा। मैं कांप रही थी। उन्होंने मुझे डॉक्टर के पास चलने का सुझाव दिया, लेकिन मैंने मना कर दिया और कहा कि तापमान सामान्य है। थर्मामीटर 99 पर बीप करने लगा। उन्होंने मुझे ज़बरदस्ती एक बिस्किट खिलाया, फिर कॉफ़ी और एक पैरासिटामोल दी। मुझे थोड़ा बेहतर महसूस होने लगा। मैंने मुस्कुराकर श्रीमती पांडे के बारे में पूछा, जो कुछ ही मिनटों बाद वहाँ पहुँचीं।

उनके भाई से फोन पर हुई बातचीत से ऐसा ही लगा कि वे अपने रिश्तेदारों के साथ नेपाल घूमने जा रहे थे। मैंने मन ही मन सोचा कि मेरे पास तैयारी करने के लिए बहुत कम समय है। वे साल के अंत की छुट्टियों में काठमांडू जाने की योजना बना रहे थे और उन्होंने मुझे नए साल की पूर्व संध्या पर घूमने के लिए नेपाल के कुछ बेहतरीन स्थानों के बारे में बताया। मैंने सहमति में सिर हिलाया। गुजरात में हिंदू-मुस्लिम ध्रुवीकरण पर चर्चा के दौरान, पाण्डे ने मुझे बताया कि उनके एक वकील और मित्र, जो अक्सर उनके घर आते थे, मुस्लिम थे। उस दिन से, जब भी मैं पाण्डे के घर बैठता, मेरी धड़कनें तेज हो जातीं, क्योंकि मैं अहमदाबाद के उस वकील से परिचित था, जिनसे मेरी मुलाकात उनके द्वारा संभाले जा रहे विभिन्न आपराधिक मामलों के सिलसिले में हुई थी। मेरी घबराहट के बावजूद, अगले कुछ महीनों में पी.सी. पाण्डे के साथ बातचीत सहजता से चलती रही।

प्रश्न) आरएसएस के लिए गुजरात कितना अभिन्न अंग है?

ए) देखिए, यह गुजरात सरकार में भाजपा की रीढ़ की हड्डी है। यह एकमात्र ऐसा संगठन है जो इस्लामी पार्टियों का मुकाबला कर सकता है।

सवाल) और वह आरएसएस के कितने करीब हैं?

ए) जी हाँ, वो आरएसएस के बहुत करीब हैं। यह उनके लिए बहुत महत्वपूर्ण है। वो आरएसएस के कार्यकर्ता थे।

यहां आरएसएस प्रमुख अमृतभाई काडीवाला का उन पर काफी प्रभाव है।

प्रश्न) मुझे यहाँ आपके मंत्रियों के बारे में बहुत सी अफवाहें सुनने को मिल रही हैं, चाहे वह दंगों से संबंधित हों या यहाँ की स्थिति से। क्या यहाँ आरएसएस हरेन पांड्या को बहुत पसंद करता था?

ए) जी हां, यहां के गृह मंत्री हरेन पांड्या बहुत लोकप्रिय नेता थे, वे आरएसएस के बेहद करीबी थे। इसी तरह अमित शाह भी यहां थे, जो अब जेल में हैं। वे भी आरएसएस के बेहद करीबी थे। एक और नेता थे, गोर्धन जादफिया, जो बीच-बीच में विश्व हिंदू परिषद (वीएचपी) के बेहद करीबी थे।

प्र) और वे सभी गृह मंत्री थे। क्या उन्हें इस पद पर रखना एक सोच-समझकर लिया गया निर्णय

था...?
ए) जी हाँ, क्योंकि गृह विभाग पुलिस अधिकारियों को नियंत्रित करता है, इसलिए अपने खुद के आदमी रखना अच्छा होता है। इसलिए जब केशूभाई मुख्यमंत्री थे, तब हरेन पांड्या गृह मंत्री थे।
प्रश्न) क्या मुझे गोर्धन ज़ादाफ़िया से नहीं मिलना चाहिए, आपका सुझाव है?
ए) नहीं, मुझे नहीं लगता कि आपको उससे मिलना चाहिए, क्योंकि तब आप भटक जाएंगे... मेरा मतलब है कि यह आपकी फिल्म का हिस्सा नहीं है।
सवाल) अच्छा, तो अगर मैं दिल्ली में हूं, तो आप मुझे अमित शाह से मिलने का सुझाव दे रहे हैं?
ए) हां, आपको ऐसा करना चाहिए, वह एक विचारधारावादी है।
प्रश्न) आप मुझे उनसे मिलने की सलाह क्यों दे रहे हैं?
ए) आपको राज्य का एक अलग दृष्टिकोण मिलेगा। वह बहुत ही केंद्रित हैं। वह आपको आरएसएस और राज्य के बारे में बताएंगे।
प्रश्न) क्या मैं उसे आपका संदर्भ दे सकता हूँ? वह कहाँ रहता है?
ए) जी हाँ, उन्हें बता दीजिए कि मैंने पूछा था। वे गुजरात भवन में रहते हैं।
प्रश्न) क्या मुझे दंगों के बारे में मोदीजी से बात करनी चाहिए?
ए) ऐसा मत करो, वह बात नहीं करेगा।
प्र) क्या यह उसकी सबसे बड़ी कमजोरी है?
ए) जी हां, ऐसा मत करो।
प्र) तो, आप दंगों के दौरान वहां मौजूद थे?
ए) हाँ, यह मेरे जीवन के सबसे भयावह दौरों में से एक था। मैं 30 साल सेवा कर चुका था। लेकिन देखिए, 85, 87, 89, 92 में दंगे हुए और ज़्यादातर बार हिंदुओं की पिटाई हुई। मुसलमानों का पलड़ा भारी रहा। इसलिए 2002 में जो हुआ, वह होना ही था, यह हिंदुओं का प्रतिशोध था। साथ ही, 1995 के बाद लोगों को लगा कि सरकार उनकी है, खासकर इसलिए क्योंकि यह भाजपा की सरकार थी। लोग कहते हैं कि मैं जनता तक नहीं पहुँच पाया। एक भी व्यक्ति ने मुझे फोन नहीं किया, मैं भविष्यवक्ता नहीं हूँ कि मुझे कौन फोन कर रहा है, यह जान सकूँ।
सवाल) तो क्या मोदी ही पोस्टर बॉय हैं?
ए) आप मल्लिका साराभाई को जानते हैं, वो डांसर, वो मोदी की बहुत बड़ी आलोचक हैं। लोग कहते हैं कि 2002 के दंगे उन्हीं की वजह से हुए थे। वो कहती हैं कि मैंने गोधरा में ट्रेन नहीं जलाई थी। तो अगर मैंने वो नहीं किया, तो उसके बाद जो कुछ हुआ, उसके लिए आप मुझे कैसे दोषी ठहरा सकते हैं? अगर वो मैंने किया होता, तो ये भी मैंने ही किया होता। देखिए, ये वहाँ जो हुआ, उसकी प्रतिक्रिया थी। मतलब, अगर आप इसे तर्क से देखें, तो मुसलमानों का एक समूह जाकर ट्रेन में आग लगा रहा है, तो आपकी प्रतिक्रिया क्या होगी?
सवाल) क्या आपने उन्हें पलटवार किया?
ए) जी हां, जी हां, आप उन्हें करारा जवाब दीजिए। अब इस करारा जवाब के बारे में तो आपने पहले ही शोध कर लिया होगा कि उन्हें [हिंदुओं को] 85, 86, 92 और इसी तरह के वर्षों में

करारी हार मिली थी। तो अब मौका है, उन्हें उसी तरह जवाब दीजिए... भला इसमें किसी को क्या आपत्ति होगी?

प्र) और मुझे यकीन है कि वह इसे नहीं रोकता।

ए) देखिए, एक बार जब लोग किसी चीज़ को लेकर इतने भावुक हो जाते हैं, तो आप उन्हें रोक नहीं सकते, जैसे कि मिस्र में हुआ था।

तो आप ही बताइए, क्या आप इस तरह की आबादी पर गोली चलाना चाहेंगे?

अगर वो ऐसा कर भी दे तो क्या होगा? क्या उस आदमी को दोबारा सड़कों पर घूमने की इजाजत मिलेगी? अब इस तरह के हालात में, आप कैसे कहेंगे कि मोदी को स्विच बंद कर देना चाहिए था? रिमोट तो उनके हाथ में नहीं था।

प्रश्न) दंगे कितने समय तक चले?

ए) प्रारंभिक चरण लगभग 2 दिनों तक चला, इससे अधिक नहीं।

प्रश्न) तो, मीडिया ने यही दिखाया कि हिंदू मुसलमानों को निशाना बना रहे थे?

ए) हाँ, वे और क्या दिखाते? मुसलमान भी हिंदुओं को निशाना बना रहे थे। आप देखिए, ठीक है, भले ही उतने प्रतिशत में नहीं, लेकिन यहाँ हम समानता की बात नहीं कर रहे हैं। या इसे संतुलित नहीं कर रहे हैं। लेकिन गोधरा में ट्रेन जलाने की घटना में मुसलमान ही पहले हमलावर थे, इसलिए स्वाभाविक रूप से प्रतिक्रिया तो होनी ही थी।

मुसलमानों को ज़्यादा नुकसान उठाना पड़ता है। लेकिन वे भी जवाबी कार्रवाई करते हैं। इसलिए अगर कोई हिंदू बीच में आता है तो उसे भी मार दिया जाता है। तो अगर आप उससे पूछेंगे, तो वह खुलकर बोलेगा।

प्र) वैसे, मैंने कल अखबार में एसआईटी रिपोर्ट के बारे में एक लेख देखा था?

ए) जी हां, दंगों की जांच के लिए एक एसआईटी समिति गठित की गई थी। रिपोर्ट सुप्रीम कोर्ट में जमा की गई थी और उसकी एक प्रति मीडिया, इस अखबार को लीक हो गई थी। अन्यथा यह गोपनीय थी। रिपोर्ट में उन्हें किसी भी बात के लिए दोषी नहीं ठहराया गया है।

लेकिन रिपोर्ट लिखने वाले व्यक्ति का कहना है कि उन्हें ऐसा कुछ भी नहीं मिला जिससे उसे दोषी ठहराया जा सके।

प्र) और क्या उन्होंने आपको भी पकड़ने की कोशिश नहीं की?

ए) जी हाँ, उन्होंने कहा कि उनके अधीन काम करने वाले अधिकारियों को सेवानिवृत्ति के बाद पदस्थापन दिए गए थे। मैं पूछती हूँ, कौन सा पदस्थापन? मेरा पदस्थापन तो ऐसा है जिससे मुझे कोई वेतन नहीं मिलता।

सवाल) लेकिन अगर आप राज्य के लिए काम कर रहे हैं तो वह आपको पुरस्कार क्यों नहीं देगा? फिर क्या यह पुरस्कार उन लोगों को दिया जाना चाहिए जिन्होंने उसके खिलाफ काम किया?

ए) हां, उसे अपने खिलाफ जाने वाले लोगों को पद क्यों देना चाहिए?

प्र) बिलकुल नहीं।

ए) कोई सवाल ही नहीं, कोई सवाल ही नहीं।

प्रश्न) वह संत नहीं है

ए) यही बात है।

प्र) आप सड़क पर जाइए। लोगों से पूछिए, क्या आप परिमल गार्डन जा सकते हैं?

ए) हां, वे उसे प्यार करते हैं।

प्र) मुझे लगता है कि इसका एक कारण यह भी है कि उन्होंने उन्हें वही दिया जो वे चाहते थे। वे उनकी चाहत का प्रतीक हैं। अधिकांश लोगों ने कहा कि अल्पसंख्यक तुष्टीकरण नहीं हुआ और उन्हें अपना गौरव वापस मिल गया।

ए) जी हां, यह प्रतिक्रिया बिना मांगे प्राप्त हुई है।

प्रश्न) तो मुसलमान उससे नफरत करते हैं?

ए) जो लोग कट्टरपंथी हैं, वे मीडिया में जो देख रहे हैं, वही देख रहे हैं, जैसे कि देवबंद प्रमुख वस्तानवी का लेख। इंडिया टुडे में छपा है कि वस्तानवी कहते हैं कि गुजरात समान अवसर प्रदान करता है। इस पर आपत्ति जताई गई, क्योंकि लोगों का मानना था कि वह मोदी को 2002 में किए गए कार्यों के लिए प्रमाण पत्र दे रहे हैं।

मैं [मुकुल] सिन्हा के घर पर बैठा था और वहीं मेरी मुलाकात अल जज़ीरा चैनल के कुछ पत्रकारों से हुई?

ए) हाँ, तो मुस्लिम चैनल वाले गोधरा फैसले को कवर करने आए होंगे। इसलिए वे कुछ न कुछ बकवास करेंगे।

प्र) तो उन्होंने मुझे एक पत्रिका की प्रति दी जिसमें एसआईटी पर एक रिपोर्ट प्रकाशित हुई थी।

ए) अच्छा, यह सांप्रदायिक संघर्ष ही रहा होगा।

प्र) नहीं, नहीं, मैं आपको बताता हूँ...यह तहलका था।

ए) ओह, ये तो पीली पत्रकारिता का एक क्लासिक उदाहरण है। आप जानते हैं कि तेहलका वाले क्या करते हैं, वे कैमरे लेकर घूमते हैं और आपकी तस्वीरें खींचते हैं। वे एक व्यक्ति को दूसरे को पैसे देते हुए दिखाएंगे, उसका अभिनय करेंगे और फिर बोलेंगे। अब आप बातचीत नहीं सुन पाएंगे और ये सब दिखाया जाएगा।

प्रश्न) वे इसे कैसे दिखाते हैं?

ए) वे इसे चैनलों को बेचते हैं। पहले उन्होंने एक मंत्री को हथियार डीलर के साथ पैसों का लेन-देन करते हुए दिखाया था। तो फुटेज के कुछ अंश तो होंगे, लेकिन पूरा नहीं। 2002 के लिए, कुछ ज़्यादा बोलने वाले लोगों को वे दिखाते थे। इसी तरह वे पैसे कमाते हैं। वे फुटेज को न्यूज़ चैनलों को बेचते हैं। जैसे सिन्हा, उन्हें अल जज़ीरा को इंटरव्यू क्यों देना पड़ा? वह चैनल लगातार महिलाओं के साथ बलात्कार और उन्हें जलाए जाने के दृश्य दिखाता रहा। और क्यों? क्योंकि इससे उन्हें ज़्यादा प्रचार मिलता है।

प्र) आयोगों ने आपसे कड़ी पूछताछ की होगी?

ए) हां, मैं अब भी हूं।

प्र) तो इसका अंत नहीं हो रहा है? आपसे पूछताछ तो हुई ही होगी?

ए) जी हां, मुझसे पूछताछ की गई है। यह सब इसलिए हो रहा है क्योंकि इस लाठी से नरेंद्र मोदी को पीटा जा सकता है।

उनके लिए 2002 एक पूर्णकालिक पेशा है, जिससे उन्हें पैसा मिलता है।
सवाल) मैं वास्तव में जानना चाहता था, मतलब आप वहां पुलिस कमिश्नर के रूप में थे, तो आपने इससे कैसे निपटा?
ए) यह भयानक था। मेरा मतलब यह नहीं है कि मैंने पहले कभी ऐसी स्थिति नहीं देखी थी, लेकिन यह अलग थी। और मिस्र में जो हुआ, वैसा ही। आप जानते हैं कि मिस्र में अब लोगों पर बल प्रयोग नहीं किया जा सकता, है ना? तो यहाँ विरोध प्रदर्शन कर रही भीड़ पर कोई बल प्रयोग कैसे कर सकता है? क्या वह उसके बाद जीवित रह पाता? बल प्रयोग इसका समाधान नहीं है।
प्रश्न) तो क्या उसी गोधरा की वजह से गुजरात का निर्माण हुआ?
ए) जी हां, अयोध्या से एक ट्रेन आ रही थी, उसमें विश्व हिंदू परिषद (वीएचपी) के समर्थक सवार थे, वे अयोध्या में मंदिर बनवाना चाहते थे। वे लौट रहे थे और ट्रेन में 73 लोग थे, लेकिन कुछ मुसलमानों ने उन पर हमला कर दिया। स्थानीय लोग पेट्रोल के डिब्बे लेकर आए, डिब्बे में घुस गए और आग लगा दी। परिणामस्वरूप 61 लोगों की मौत हो गई।
इसके जवाब में वीएचपी ने बंद का आह्वान किया।
फिर 28 तारीख को हिंसा भड़क उठी और हर कोई सड़कों पर उतर आया। बूढ़े, जवान, लड़कियां...
प्र) तो उन पर क्या आरोप हैं?
ए) उनका मानना है कि उन्होंने सबको बाहर आने के लिए संगठित किया। 27 तारीख को, वह गोधरा जाते हैं...
ए) क्या उसने मुसलमानों के खिलाफ हिंसा को अंजाम दिया था?
प्र) क्या उन पर यह भी आरोप है कि वे गोधरा गए और दंगों के पीड़ितों से मिलने तक नहीं गए?
ए) वह ऐसा क्यों करेगा, उनसे क्यों मिलेगा?
प्र) हाँ, हिंदुओं को मारा जा रहा था?
ए) और वह रात 10 या 11 बजे वापस आया।
प्रश्न) उनका मानना है कि उन्होंने उनसे कार्रवाई न करने के लिए कहा था।
ए) हां, तो उन्होंने मुझसे आयोग के दौरान यह सवाल पूछा था और मैंने कहा था कि मुझे ऐसा कोई निर्देश नहीं दिया गया था। मैंने कहा था कि मुझे उनसे ऐसा कोई निर्देश नहीं मिला था। जबकि मुझे निर्देश मिले थे, और इसके बावजूद लोग मारे गए।
अब मैं यह नहीं कह सकता कि मैं सबकी रक्षा कर सकता हूँ।
मैं भगवान नहीं हूं और जैसा कि मैंने कहा, मैंने अपनी तरफ से पूरी कोशिश की।
प्रश्न) तो क्या यही एकमात्र चीज है?
ए) नहीं, उन्हें मुझसे सिर्फ यही शिकायत है। क्योंकि नरेंद्र मोदी तक पहुँचने का यही एकमात्र तरीका है, और वो है मेरे माध्यम से।
प्र) और इसलिए भी क्योंकि आप उनके बहुत करीब हैं?
ए) मान लीजिए कि मैं उसके खिलाफ कुछ कह दूं, तो वे खुश हो जाएंगे।
प्र) तो, आपने बल समेत कई दुश्मन बना लिए होंगे?

ए) इसमें कुछ आईपीएस अधिकारी हो सकते हैं।
प्र) जैसा कि मुझे उन कुछ लोगों के बारे में बताया गया था जो यहाँ अच्छा काम कर रहे थे?
ए) जी हां, राहुल शर्मा, सतीश वर्मा, कुलदीप शर्मा, ये वही लोग हैं।
प्रश्न) जी हां, जी हां।
ए) कुलदीप शर्मा। उन्हें भेड़ एवं ऊन विभाग में भेज दिया गया है। अब वे सरकार के विरोधी और मुकुल सिन्हा जैसे लोगों के समर्थक बन गए हैं।
देखिए, यह एक लंबी कहानी है, आपको पूरी बात जाननी होगी। कुलदीप शर्मा ने तत्कालीन गृह मंत्री से जमकर टकराव मोल लिया था।
प्र) और वह कौन था?
ए) अमित शाह।
प्रश्न) क्या यह वही व्यक्ति है जिसे गिरफ्तार किया गया था?
ए) कुलदीप शर्मा ने मुख्यमंत्री से शिकायत की कि आपका गृह मंत्री एक बदमाश है, इसलिए मुख्यमंत्री ने उससे इसे साबित करने के लिए कहा होगा।
प्र) लेकिन वह महामहिम के खिलाफ क्या कार्रवाई करेगा?
ए) और सुनो, फिर उसमें इतनी धृष्टता है कि वह मुख्यमंत्री को पत्र लिखकर गृह मंत्री के खिलाफ सीबीआई जांच कराने की मांग करता है। लेकिन मुख्यमंत्री ने कहा कि मैं इस मामले की जांच एक सेवानिवृत्त मुख्य सचिव से करवाऊंगा।
सवाल) तो शाह की गिरफ्तारी पर वह जरूर खुश हुआ होगा?
ए) उसे गिरफ्तार करवाने में उसकी अहम भूमिका थी।
प्रश्न) लेकिन कैसे?
ए) उन्होंने ही सीबीआई और मीडिया को सबूत दिए थे। इस प्रकार उन्होंने पांडियन नामक अधिकारी के कॉल रिकॉर्ड को साबित किया।
प्रश्न) कैसे?
ए) पांडियन और कुलदीप के खिलाफ कुछ अन्य मामले भी थे। पांडियन ने एक मामले का खुलासा अखबार में किया था। इसलिए कुलदीप पांडियन को जेल भेजना चाहता था। और पांडियन वास्तव में मुठभेड़ में शामिल था।
प्र) ओह, तो इस तरह उन्हें महारानी का खिताब मिला।
ए) जी हाँ, क्योंकि पांडियन महामहिम के करीबी थे। वे उनसे बात करते थे। इसलिए उन्होंने यह साबित कर दिया कि शाह मुठभेड़ में शामिल थे।
प्रश्न) तो, वे कौन लोग हैं जिनके साथ मुठभेड़ की गई?
ए) वे सभी बदमाश और छोटे-मोटे अपराधी हैं और जब कानून कुछ नहीं कर पाता तो आप उन्हें खत्म कर देते हैं।
सवाल) मैंने तो यहाँ तक सुना है कि एक महिला ने उसे आतंकवादी कहा था।
ए) जी हाँ, जी हाँ।
तो मेरा कहने का मतलब यह था कि मैं महानिदेशक था और मैं पुलिस बल से सेवानिवृत्त हो रहा

था, और उसी समय वह भी विदेश से आ गया था। तो वह पुलिस महानिदेशक बनना चाहता था। लेकिन मुद्दा यह था कि आप उसे कैसे नियुक्त कर सकते हैं, एक ऐसे व्यक्ति को जो हमेशा सरकार के खिलाफ कुछ न कुछ गड़बड़ी करने की फिराक में रहता है?

प्र) हां, और वह सरकार के खिलाफ गया था, तो वे ऐसा कैसे कर सकते थे?

ए) हां, आप उनसे कुलदीप शर्मा जैसे व्यक्ति को नियुक्त करने की उम्मीद नहीं कर सकते, इसलिए उन्हें एक साइड पोस्टिंग दी गई।

प्र) जैसे क्या?

ए) उन्हें भेड़ एवं ऊन विभाग का अध्यक्ष बनाया गया। [हंसते हुए]

प्र) अरे यार, ये तो सजा के तौर पर पोस्ट की गई पोस्ट जैसी है!

ए) यह एक दंडात्मक नियुक्ति थी। अगर आप सरकार के खिलाफ जाते हैं तो... मतलब, अन्यथा वह महानिदेशक बनने के लिए सबसे योग्य व्यक्ति थे।

उन्होंने पुलिस व्यवस्था और सुधारों में पीएचडी भी की थी। लेकिन उनका मकसद सिर्फ बदला लेना था, और यहीं से इसकी शुरुआत हुई।

मुख्यमंत्री हमेशा कहते थे कि वह बहुत अविश्वसनीय थे। वास्तव में, गृह मंत्री के साथ उनका व्यवहार बहुत अच्छा था।

प्र) लेकिन एचएम तो वाकई एक दिलचस्प शख्सियत हैं?

ए) लेकिन मैं आपको उनसे मिलने की सलाह दूंगा। वे जमानत पर हैं, लेकिन शर्त यह है कि वे गुजरात नहीं जा सकते। इसलिए मैं आपको उनसे मिलने की सलाह दूंगा। वे बहुत ही प्रतिभाशाली व्यक्ति हैं। बेहद बुद्धिमान। कई रोचक बातें जानते हैं।

प्रश्न) क्या वह विचारधारा का अनुयायी है?

ए) जी हाँ, वह आरएसएस के कट्टर समर्थक हैं।

प्रश्न) यह सब क्यों हो रहा है?

ए) लेकिन तीस्ता और सिन्हा जैसे लोगों को यह पसंद आएगा।

देखिए, आप कुछ भी कहें, 80 प्रतिशत जनता बहुसंख्यक यानी हिंदू है, इसलिए आपको उनकी देखभाल करनी होगी। जैसे कांग्रेस करती है। और आपको मुसलमानों के गैरकानूनी कामों का समर्थन क्यों करना है? मुसलमान चाहे कितना भी गलत करें, आप उनका समर्थन करना चाहते हैं। हिंदू चाहे कितना भी सही करें, आप उनके खिलाफ हो जाते हैं?

प्रश्न) लेकिन हिंदुओं ने कितनी मुक्ति का अनुभव किया होगा?

ए) जी हां, अब शहर में घूमकर देखिए और हिंदू-मुस्लिम बहुल इलाकों में देखिए। हमें बहुत सारे कॉल रिकॉर्ड्स खंगालने पड़े। इसी तरह से इंस्टेंट मैसेज भेजने वाले लोग पकड़े गए [गुजरात विस्फोट]।

प्र) वाह!

ए) और सुप्रीम कोर्ट का कहना है कि उनके मामलों की पैरवी न करें।

प्रश्न) क्यों?

ए) अल्पसंख्यक तुष्टीकरण।

प्र) क्या सुप्रीम कोर्ट में भी ऐसा ही होता है?

ए) जी हाँ, ऐसा होता है।

इन लोगों को दीवार के सामने खड़ा करके गोली मार देनी चाहिए। आप जानते हैं, एक धमाका होता है, 6 लोग मर जाते हैं, फिर दूसरा और तीसरा धमाका ट्रॉमा सेंटर के पास वाले अस्पताल में होता है, जहाँ मरीज़ों को लाया जाता है। इसलिए मैंने मुख्यमंत्री को फोन किया और कहा कि मत जाइए। तब तक वे कमिश्नर के कार्यालय पहुँच चुके थे। बम एक वैन में रखा गया था।

आपको इन सब चीजों की कुटिलता दिखाई दे रही है। अब आप इन्हें खुश करना चाहते हैं। किसलिए? वोटों के लिए।

मेरी सबसे अच्छी दोस्त मुसलमान है, लेकिन यह एक अलग बात है, वह भी एक इंसान है। उसके साथ भी बाकी लोगों जैसा ही व्यवहार करो, मुझे कोई दिक्कत नहीं है।

प्र) मुझे खुशी है कि दंगों के दौरान मुसलमानों को सबक सिखाया गया।

ए) हां, आपको ऐसा महसूस होता है, एक समय ऐसा आता है जब जो हुआ सो हुआ, इसीलिए मुझे बहुत खुशी है कि मैं इन लोगों [मुसलमानों] को सलाखों के पीछे डाल सका। यह सबसे संतोषजनक बात थी।

तो मुकुल सिन्हा और तीस्ता जैसे लोग कहेंगे कि अराजकता फैली हुई है। हाँ, अराजकता तो है, लेकिन उस अराजकता को किसने पैदा किया? इन्हीं मुसलमानों ने?

और ऐसा नहीं है कि मुझे राजनीतिक दलों से कोई खास लगाव है, लेकिन अगर कांग्रेस का यही हाल है, तो मैं भाजपा के साथ ही क्यों न हो जाऊं।

प्रश्न) मुलाकातों के बारे में आपका क्या विचार है?

ए) देखिए, व्यक्तिगत रूप से मैं मुठभेड़ों के खिलाफ हूं, यह एक तरह से हत्या है, लेकिन कभी-कभी यह आवश्यक हो जाता है।

प्र) जी हां, तो जिस अधिकारी से मैंने बात की, वह मुझे इस घटना के बारे में बता रहा था।

ए) अच्छा, तभी मेरा नाम सामने आया होगा। मैं महानिदेशक था, लेकिन मुठभेड़ के दौरान नहीं। मुठभेड़ 2005 में हुई थी। मुझे मामले की जांच करने के लिए कहा गया था।

प्र) ओह ठीक है।

ए) सोहराबुद्दीन नाम के उस व्यक्ति पर कुछ एके रखने के आरोप में मुकदमा चल रहा था, हथियार बरामद हुए और बाद में उसे दोषी ठहराया गया... यह उसका पिछला रिकॉर्ड था। वह महिला (कौसर बी) उसकी पत्नी भी नहीं थी।

सवाल) क्या उनका अफेयर था?

ए) वह उसके साथ लिव-इन रिलेशनशिप में रह रही थी। इसलिए, अगर आप ऐसे स्वभाव के व्यक्ति के साथ रहती हैं, तो उसके साथ जो कुछ भी होगा, वही आपके साथ भी होगा। यह मुसीबत को न्योता देना है। और ऐसा नहीं है कि आप इस व्यक्ति के बारे में अनजान हैं। इसका मतलब यह नहीं है कि किसी को मार डाला जाए।

प्र) लेकिन महोदय, क्या उन्होंने यह पैसे के लिए किया या विचारधारा के लिए, हिंदुत्व की विचारधारा के लिए?

ए) विचारधारा और धन दोनों ही पहलू।

सवाल) मुझे बताया गया है कि भ्रष्टाचार मुठभेड़ का एक प्रमुख कारण था? पैसा था। इसीलिए गृह मंत्री और अधिकारी दोनों पकड़े गए?

ए) हां, ज्यादातर मामलों में इसमें पैसा ही लगता है।

सवाल) कई लोग कह रहे थे कि इस गृह मंत्री के कारण मुख्यमंत्री भी लगभग इसमें शामिल थे।

ए) देखिए, जो लोग इस मामले की जांच करवाना चाहते थे, वे गृह मंत्री नहीं थे, निशाना तो मुख्यमंत्री थे।

प्रश्न) लेकिन सच्चाई यह है कि एचएम वास्तव में इसमें शामिल था, इसलिए...

ए) देखिए, तकनीकी रूप से उस मानदंड के अनुसार आप सीएम को शामिल नहीं कर सकते।

सवाल) मुझे एटीएस प्रमुख सिंघल के बारे में कुछ जानकारी दीजिए। मैं दलित होने के नाते उनका प्रोफाइल तैयार कर रहा हूं।

ए) सिंघल, वैसे तो एक अच्छे अधिकारी हैं, वे राजस्थान के रहने वाले हैं और गुजरात में बस गए हैं, लेकिन सोहराबुद्दीन मुठभेड़ में भी वे मौजूद थे। उन्हें भी पुलिस ने पकड़ लिया था, वे बाल-बाल बचे और फिर वे इशरत मुठभेड़ में भी शामिल थे।

प्र) क्या इससे सरकार की छवि पर कोई धब्बा लगेगा?

A) Yes, it is, kya kar sakte hain.

प्रश्न) क्या 2002 में वहां मौजूद सभी अधिकारियों की छवि को, यहां तक कि गुजरातियों के बीच भी, कोई नुकसान पहुंचा?

ए) यहां तक कि गुजरातियों को भी लगा कि कुछ अधिकारी बेहतर प्रदर्शन कर सकते थे। उन्होंने खुलकर अपनी गलती नहीं मानी, उन्होंने अपना दायित्व ठीक से नहीं निभाया। मेरे साथ एक तटस्थ अधिकारी जैसा व्यवहार किया गया।

प्र) लेकिन आप पर अत्याचार हो रहा है?

ए) नहीं, लेकिन गुजराती लोग मुझे प्रताड़ित नहीं कर रहे हैं, गैर सरकारी संगठन ऐसा कर रहे हैं। देखिए, पहली बात तो यह है कि शवों को अहमदाबाद लाया गया और सिविल अस्पताल में रखा गया। उसके बाद इलाके में तनाव का माहौल छा गया। इधर-उधर से कुछ मामले सामने आने की सूचना मिल रही थी। मुझे बस इस बात का अफसोस है कि मैं खुद उन दो जगहों पर नहीं जा सका जहां हिंसा भड़की थी, क्योंकि मुझे पूरा यकीन है कि अगर मैं जाता तो नरोदा और मेघानीनगर में ऐसी घटना नहीं होने देता।

एक जगह पर एक पूर्व सांसद है जो अपनी इमारत की छत से 10,000 लोगों पर हमला करने का फैसला करता है। वह अपनी 12 बोर की बंदूक उठाता है और भीड़ पर गोलियां चलाता है।

प्र) यह व्यक्ति कौन है?

ए) एहसान जाफरी, लगभग 75 वर्ष के एक बुजुर्ग व्यक्ति। वे पूर्व में राज्यसभा सदस्य थे, अब उन्होंने गोलीबारी की। उस गोलीबारी में दो लोगों की मौत हो गई और यह पुलिस रिकॉर्ड का हिस्सा है। उनकी आक्रामकता इस सोच से उपजी कि मैं क्या करूँ। मैं 10,000 की संख्या में हूँ और तुम 100 की संख्या में हो, मैं ऐसा नहीं करूँगा।

प्र) तो फिर मैं तुम्हें क्यों बख्श दूं?
ए) बिलकुल सही। आप कह सकते हैं कि पुलिस ने कुछ नहीं किया, हमने आपको गोली चलाने के लिए नहीं कहा था, आप चुप रह सकते थे। बात यही है। नरोदा में भी ऐसा ही हुआ था। वहाँ भी एक अति उत्साही हिंदू लड़का मस्जिद पर चढ़ गया था। मुसलमानों ने उसके टुकड़े-टुकड़े कर दिए। हिंदू भड़क उठे और इसी से दंगे भड़क उठे।
प्रश्न) मुझे तीस्ता नाम की एक सामाजिक कार्यकर्ता से मिलने के लिए कहा गया था?
ए) सबसे बड़ा बदमाश। उदय माहुरकर का नंबर ले लो, वह इंडिया टुडे में पत्रकार है।
प्रश्न) और सिन्हा नाम का एक और वकील?
ए) एक और बदमाश।
वह नानावती आयोग में लड़ रहे हैं, और उन्हें विदेश में रहने वाले इन सभी लोगों से भारी मात्रा में पैसा मिलता है। फिर तीस्ता सेतलवाद नाम की एक महिला हैं, जो सेतलवाद परिवार से थीं। और एक जावेद आनंद नाम का एक व्यक्ति है, जो उस समय उप-संपादक था। उस समय जावेद विवाहित था। इसलिए तीस्ता उनसे परिचित हो गईं। अब उनके पिता को यह पसंद नहीं आया। जावेद ने अपनी पहली पत्नी को त्याग दिया और तीस्ता के साथ रहने लगे। और इस तरह तीस्ता की कोई हैसियत नहीं रही, लेकिन 2002 के बाद वह गुजरात लौट आईं और तुरंत गुजरात के नागरिकों के हितों की रक्षा के लिए जुट गईं।
वह एक विधि-प्रधान परिवार से थीं, उन्होंने सेवानिवृत्त न्यायाधीशों को एक साथ लाया और बाद में उन्होंने 'सांप्रदायिकता' नामक एक पुस्तक भी लिखी। उन्होंने पीड़ितों की मदद करना शुरू किया और मध्य पूर्व से धन आने लगा। सबको लगा कि भाजपा हार जाएगी। लेकिन गुजरात में भाजपा की जीत के बावजूद केंद्र में उसकी सत्ता छिन गई और इस तरह वह केंद्र की पोस्टर गर्ल बन गईं।
सवाल) क्या आप उसे रोकने के लिए कुछ नहीं कर सके?
ए) हम ऐसा कैसे कर सकते थे? हम करना तो चाहते थे, लेकिन अदालतें हम पर टूट पड़तीं।
प्र) तो क्या मुख्यमंत्री ने अपनी चिंता के बारे में आपसे बात की होगी? उ)
हाँ वह था।
सवाल) लेकिन देखिए, दंगों ने ही मोदी को मोदी बनाया, है ना?
ए) हां, उससे पहले उन्हें कौन जानता था? मोदी कौन थे? वे दिल्ली से आए थे, उससे पहले हिमाचल प्रदेश से। वे न तो हरियाणा और न ही हिमाचल प्रदेश जैसे महत्वहीन राज्यों के प्रभारी थे।
प्र) यह एक तुरुप का पत्ता जैसा था, है ना?
ए) यही तो बात है... अगर ऐसा नहीं होता तो वो अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मशहूर नहीं होते। इससे उन्हें एक तरह का बढ़ावा मिला, भले ही नकारात्मक रूप से, लेकिन कम से कम वो मशहूर तो हो गए।
प्र. तो क्या आप उसके आदमी हैं?
ए) मेरा मतलब है हां, क्योंकि मैं 2002 के दंगों के दौरान उनके साथ था, इसलिए यह ठीक है।

ये बातचीत दो महीने की बैठकों और विभिन्न उपकरणों की मदद से की गई बातचीत के दौरान रिकॉर्ड की गई हैं। पांडे, जो खुद को मोदी का चहेता मानते हैं, मोदी से अपनी नज़दीकी के बारे में खुलकर बोलने से नहीं कतराते। उन्हें यह बताने में कोई झिझक नहीं है कि मोदी कोई संत नहीं हैं जो वैचारिक रूप से विरोधियों को भी पद दे दें। वे कौसरबी की हत्या को यह कहकर सही ठहराते हैं कि वह सोहराबुद्दीन के साथ 'लिविंग इन' में रह रही थीं, जिसे सीबीआई द्वारा पहले ही साबित किए गए फर्जी मुठभेड़ में मार दिया गया था।

बातचीत के दौरान जब भी कार्यकर्ताओं का जिक्र होता है, तो वह उन्हें ऐसे बदमाश बताने से नहीं कतराते जिन्होंने गुजरात को बदनाम किया है।

अंत में जब उन्होंने कहा कि मुझे अब परिमल गार्डन में टहलने जाना चाहिए और देखना चाहिए कि दंगों के बाद गुजराती लोग कितना मुक्त महसूस करते हैं, तो मुझे ज्यादा आश्चर्य नहीं हुआ।

पांडे ने मुझे सूरत में अपने बेटे से मिलवाने का प्रस्ताव दिया, जो नेपाल से लौटने पर हीरा व्यापारी था। उन्होंने दिल्ली में अमित शाह से मुलाकात करवाने में भी मदद की, जिन्हें फर्जी मुठभेड़ मामले में जमानत मिलने के बाद अदालत ने गुजरात में प्रवेश करने से रोक दिया था। उन्होंने थिरु से भी बात की और उनसे गुजरात के प्रचार-प्रसार और मुख्यमंत्री द्वारा राज्य में निवेश लाने के लिए किए गए कार्यों में मेरी मदद करने को कहा। पांडे की विभिन्न आयोगों द्वारा जांच की जा रही थी और सीबीआई ने उन पर फर्जी मुठभेड़ मामले में आरोप लगाया था। एहसान जाफरी की पत्नी ने अपने पति और अन्य मुसलमानों को बचाने में उनकी निष्क्रियता के लिए सर्वोच्च न्यायालय में याचिका दायर की थी। लेकिन उन्हें इसकी कोई परवाह नहीं थी। उन्होंने मुझे बड़े ही बेपरवाही से बताया कि उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ेगा।

पांडे के साथ मेरी बातचीत खत्म होते-होते मेरी घबराहट काफी बढ़ गई थी। मैं कुछ समय के लिए शहर छोड़ना चाहती थी। यह तब संभव हुआ जब मैंने चक्रवर्ती का साक्षात्कार लेने की योजना बनाई, जो दंगों के दौरान गुजरात के महानिदेशक थे और मुंबई में रहते थे। चक्रवर्ती मुंबई के पॉश खार इलाके में रहते थे। पानी मेरे साथ मुंबई जाना चाहती थी। और चूंकि माइक को फिर से दिल्ली जाना था, और मुझे एक सहायक की ज़रूरत थी, इसलिए पानी और मैंने मुंबई के लिए अगली फ्लाइट पकड़ ली। वह अपने साथ एक साड़ी ले गई थी जो उसे ऑफिस में एक सहकर्मी ने उपहार में दी थी क्योंकि मेरी एक करीबी दोस्त की शादी थी और मैंने पानी को शादी समारोह में आमंत्रित किया था। मैंने पानी से वादा किया कि काम खत्म होने के बाद मैं उसे भारतीय संस्कृति की झलक दिखाऊंगी।

चक्रवर्ती

मैंने अशोक नारायण से चक्रवर्ती के लिए सिफारिश करने को कहा था, जो मीडिया और गुजरात के अधिकारियों से कुछ हद तक अलग-थलग रहते थे। गुजरात दंगों के दौरान पुलिस महानिदेशक होने के कारण उन्हें मीडिया, अंतरराष्ट्रीय प्रेस और आयोगों द्वारा लगातार घेरा जाता रहा था। वे मुंबई के पॉश उपनगरीय इलाके खार में अपनी पत्नी और दो बेटियों के साथ अपेक्षाकृत शांतिपूर्ण जीवन व्यतीत करते थे।

मैं पानी को घर पर छोड़कर उससे मिलने गई थी। जब मेरे परिवार वाले मुझे मैथिली की जगह निम्मी कहकर बुलाते थे, तो पानी हैरान हो जाती थी। मैंने उसे बताया कि यह मेरा उपनाम है। लेकिन मेरी माँ को बहुत बुरा लगता था जब भी पानी मुझे मैथिली कहकर बुलाती थी। एक दिन जब मैं रसोई में अपने और पानी के लिए नाश्ता बना रही थी, तो उन्होंने कहा, 'ऑफिस में जो ड्रामा और नाटक करती हो, उसे घर क्यों लाती हो? घर तो रंगमंच नहीं है।' वह साफ तौर पर नाराज़ थीं। उन्हें नाम बदलने से परेशानी नहीं थी, बल्कि इस बात से डर लग रहा था कि मैं अपनी ज़िंदगी को जोखिम भरी तरीके से जी रही हूँ। उन्हें मेरी चिंता सता रही थी। एक बार मैंने उन्हें अपने कमरे में रोते हुए देखा। उनके हाथ में मेरा एक कुर्ता था। 'सोनू, उनके लिए तुम्हें मार डालना बहुत आसान है।' मुझे बुरे सपने आते हैं कि किसी ट्रक ने तुम्हें कुचल दिया है या उस सुनसान घर में जिस सांप के साथ तुम रहती हो उसने तुम्हें काट लिया है।' मैं हंसने लगी, उसे गले लगाया और उसे भरोसा दिलाया कि मुझे कभी कुछ नहीं होगा। वह रोती रही।

मैं एसी बस से बांद्रा गया, जहाँ से मुझे ऑटो लेकर खार जाना था। खार में चक्रवर्ती का घर एक मशहूर स्कूल के बगल में था। उसी इमारत में एक डॉक्टर भी रहते थे, जिनकी वजह से वह इमारत स्थानीय लोगों में काफी मशहूर थी। चक्रवर्ती ने खुद मुझे घर में बुलाया और अपनी खूबसूरत पत्नी से मिलवाया, जो एक शाही परिवार से थीं। बैठक में रोशनी बहुत कम थी, जिससे मैं थोड़ा परेशान हो गया। इतनी कम रोशनी में मैं वीडियो कैसे रिकॉर्ड कर पाऊँगा? और अगर मुझे ट्यूबलाइट जलाने के लिए कहना पड़े, तो मैं क्या बहाना बनाऊँगा?

चक्रवर्ती ने मुझसे अमेरिका में मेरे जीवन के बारे में पूछा और उनकी पत्नी ने मुझे बताया कि उनकी बेटी अमेरिका में एक उभरती हुई अभिनेत्री है। उन्होंने मुझे अपनी अभिनेत्री बेटी से संपर्क करने के लिए प्रोत्साहित किया, क्योंकि उन्हें लगा कि हम दोनों अच्छे दोस्त बन सकते हैं। उनकी एक और बेटी भी घर आई, जब मैं श्रीमती चक्रवर्ती से बात कर रहा था। छोटी बेटी एक प्रमुख एयरलाइन में एयर होस्टेस थी और उसने मुझसे बताया कि फ्लाइट में सेलिब्रिटी कितने असभ्य हो सकते हैं। मैं एक महीने के दौरान चक्रवर्ती से तीन बार मिला। पहली मुलाकात बहुत संक्षिप्त थी और मैंने खुद को कच्छ में अपनी शूटिंग के बारे में बताने, वहां के विभिन्न कुम्हारों से मिलने और गुजरात के प्रसिद्ध उत्तरायण उत्सव में भाग लेने तक ही सीमित रखा। मैंने श्रीमती चक्रवर्ती को बताया कि उनके दोस्त और अशोक नारायण की पत्नी ने मुझे दोपहर के भोजन पर स्वादिष्ट तंदूरी पनीर परोसा था। श्रीमती चक्रवर्ती जल्द ही मुझसे इतनी सहज हो गईं कि उन्होंने मुझे साड़ियों का अपना संग्रह और पारिवारिक तस्वीरें दिखाईं।

मैंने उनसे अगले हफ्ते फिर मिलने का वादा किया और मैं गया भी। इस बार मैं श्रीमती चक्रवर्ती के लिए पेड़े का एक डिब्बा लेकर गया था, जिन्होंने कॉफी पर मुझे कई तरह के स्नैक्स से परिचित कराया। लेकिन चक्रवर्ती कम बोलने वाले व्यक्ति थे। उन्होंने अपने लिए एक अलग ही दुनिया बना ली थी, जिसमें बहुत कम लोग आते-जाते थे और उनके दोस्त भी ज्यादातर उनके पेशेवर दायरे से ही थे। उनकी पत्नी ने बताया कि अहमदाबाद की अपनी कुछ यात्राओं में उन्हें हमेशा बेगानापन महसूस होता था। उन्होंने कहा कि उनके पति, ईमानदार व्यक्ति होने के बावजूद, हमेशा एक बाहरी व्यक्ति की तरह माने जाते थे।

मुझे ठीक से पता था कि उनकी बात करने की इच्छुक पत्नी से बात करते समय उनकी चुप्पी कैसे तोड़नी है। मैंने गुजरात में मिले सभी अधिकारियों के नाम लिए और सुनी-सुनाई सारी बातें सुना दीं। यह सब मैंने भोलेपन और सम्मान का बेहतरीन प्रदर्शन करते हुए किया। इससे माहौल हल्का हो गया और बात बन गई।

चक्रवर्ती के साथ हुई मेरी बातचीत के बारे में लिखने से पहले, गुजरात के समाचार पत्रों में उनके बारे में छपी कुछ खबरों को साझा करना महत्वपूर्ण है। मुख्यधारा मीडिया ने उन पर 2002 में गुजरात राज्य में भड़की सांप्रदायिक आग को नियंत्रित करने में असमर्थ एक अक्षम डीजी होने का आरोप लगाया था। जिस समय मैं उनसे मिला, उस समय वे विभिन्न समाचार पत्रों में छपी उस रिपोर्ट का खंडन करने के लिए सुर्खियों में थे, जिसमें कहा गया था कि संजीव भट्ट 27 फरवरी 2002 को नरेंद्र मोदी द्वारा बुलाई गई बैठक में मौजूद थे। हालांकि, संजीव भट्ट के बयान की पुष्टि करने वाले अधिकांश गवाहों, जिनमें एक कांस्टेबल भी शामिल था, ने बाद में कहा कि उन्हें संजीव भट्ट द्वारा दबाव डाला गया था। जाहिर है, संजीव भट्ट के दावों में कोई खास दम नहीं था। हालांकि, उसी वर्ष, एसआईटी जांच अधिकारी ए.के. मल्होत्रा ने बैठक में आठ लोगों की उपस्थिति की पुष्टि की: मुख्यमंत्री मोदी, कार्यवाहक मुख्य सचिव स्वर्ण कांत वर्मा, अतिरिक्त मुख्य सचिव (गृह) अशोक नारायण, डीजीपी के. चक्रवर्ती, अहमदाबाद पुलिस आयुक्त पी.सी. पांडा, गृह सचिव के. नित्यानंदम, मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव पी.के. मिश्रा और मुख्यमंत्री के सचिव अनिल मुकीम।

गुजरात दंगों और नरेंद्र मोदी एवं अमित शाह के नेतृत्व में गुजरात सरकार की जांच के संदर्भ में चक्रवर्ती का नाम सबसे महत्वपूर्ण नामों में से एक था, न केवल 2002 के दंगों के दौरान बल्कि आपराधिक जांच के अन्य महत्वपूर्ण दौरों में भी। मार्च 2002 में, टीओआई ने एक रिपोर्ट प्रकाशित की कि डीजीपी चक्रवर्ती ने पुलिसकर्मियों के तबादलों को लेकर गुजरात सरकार पर तीखा हमला बोला था।

चक्रवर्ती आवास पर मेरी दूसरी यात्रा के दौरान उन्होंने अंततः मेरे जासूसी कैमरे के सामने अपनी चुप्पी तोड़ी। उनके द्वारा अपने अधिकारियों के पक्ष में रुख अपनाने की खबरें थीं, लेकिन उनमें से किसी की भी पुष्टि नहीं हो सकी। आखिरकार, उन्होंने मीडिया के साथ-साथ अपने सहयोगियों से भी बात करने से इनकार कर दिया था।

जब मैंने अन्य अधिकारियों के साथ अपनी मुलाकातों से जुड़े कई किस्से सुनाए, तो चक्रवर्ती आखिरकार खुलकर बोलने लगे, शायद इसलिए कि उन्हें एहसास हो गया था कि मेरे पास पहले

से ही बहुत सारी अनौपचारिक बातचीत की जानकारी थी। आखिरकार मैंने उनसे गुजरात दंगों के बारे में बात करवाई।

'यह अब तक का सबसे भयानक मंजर था। संक्षेप में कहें तो, दंगों का कोई तर्कसंगत आधार नहीं था। ये दंगे गोधरा में ट्रेन जलाने की घटना के बाद भड़के। अब इसमें कोई शक नहीं कि डिब्बा विश्व हिंदू परिषद (वीएचपी) के उन लोगों का था जो अयोध्या गए थे। पूरी ट्रेन उन्हीं की थी। इसलिए जो हुआ वह यह था कि उसके बाद दंगे भड़क उठे। मेरा कहने का तात्पर्य यह है कि आमतौर पर जब दंगे होते हैं तो उनका कोई कारण होता है और ज्यादातर स्थानीय होता है। यहाँ एक ऐसा कारण था जो पूरे हिंदू समुदाय के लिए खतरा प्रतीत होता था।'

अब दंगों में कौन लोग हिस्सा लेते हैं? गरीब लोग... यहाँ तो सारे अमीर लोग सड़कों पर थे। कुछ लोगों ने फोन करके कहा, "सर, शॉपर्स स्टॉप में मर्सिडीज में लोग आकर लूट रहे हैं।"

इतिहास ने अनादिकाल से हिंदुओं को सिखाया है कि गजनी और बाबर ने भारत पर आक्रमण किया और सोमनाथ को लूटा। इसलिए यह बात यहां के हिंदुओं के मन में गहराई से बैठ गई है। और 1965 से भारत में दंगे होते रहे हैं। इससे पहले भी हजारों लोग मारे गए थे।

सवाल) मुझे लगता है कि उनके [मोदी] खिलाफ असल में जो बात गई, वह यह थी कि वे आरएसएस से थे और उन्होंने दंगों के दौरान आरएसएस और वीएचपी का समर्थन किया था?

ए) वह मजबूरी अपरिहार्य थी। आरएसएस कार्यकर्ता के रूप में पले-बढ़े व्यक्ति को उनकी मांगों के आगे झुकना ही पड़ता है।

सवाल) मुझे यही बताया गया था कि दंगों के दौरान उन्होंने आरएसएस के सामने सिर झुकाया था।

ए) अपनी स्थिति में वे इसके अलावा कुछ और कर ही नहीं सकते थे, खासकर तब जब उन्हें किसी ऐसे संगठन द्वारा प्रशिक्षित किया गया हो जो इसमें शामिल था। और यह बात तब और भी मायने रखती है जब वे सत्ता के भूखे मंत्री हों।

प्रश्न) क्या वह सत्ता का बहुत भूखा है?

ए) हाँ।

तहलका के प्रति उचित सम्मान के साथ।

प्रश्न) वह क्या है?

ए) यह तरुण तेजपाल द्वारा प्रकाशित एक पत्रिका है, आपने इसके बारे में जरूर सुना होगा। इसमें कहा गया है कि दंगों के दौरान सभी अधिकारियों को पुरस्कृत किया गया। इसमें व्यक्तिगत तौर पर कुछ नहीं कहा गया है, लेकिन मुझे क्या मिला? यह ठीक है, लेकिन सभी को एक ही तराजू में तोलना गलत है, यह पूर्वाग्रह है।

प्र) क्या ऐसा इसलिए नहीं है कि आपके साथ काम करने वाले अधिकांश लोग विवादों में फंस गए या उनकी कोई भूमिका थी, इसलिए आप भी आलोचनाओं के घेरे में आ गए?

ए) लेकिन फिर आप इसके बारे में ज्यादा कुछ नहीं कर सकते।

प्रश्न) लेकिन आप जिस तरह के व्यक्ति हैं, गुजरात के डीजीपी के रूप में टिके रहना मुश्किल रहा होगा।

ए) मेरा दृष्टिकोण मेरी क्षमता के अनुरूप था, मैंने अपनी पूरी कोशिश की। मैंने यथासंभव अधिक से अधिक मुसलमानों की मदद करने का प्रयास किया। बड़ी संख्या में लोगों की जान बच गई; केवल इसलिए कि एहसान जाफरी की जान नहीं बच पाई...

प्र) एहसान जाफरी कौन हैं?

ए) वह एक मुस्लिम पूर्व सांसद थे जिन्हें बचाया नहीं जा सका। भीड़ ने उनकी हत्या कर दी। उनका घर जला दिया गया। पूरे इलाके पर हमला किया गया। पुलिस समय पर नहीं पहुंच सकी।

प्र) क्या आपको इसलिए आलोचना झेलनी पड़ी क्योंकि आप महानिदेशक थे?

ए) देखिए, मेरे अधीन भी बहुत से लोग काम करते हैं... एक पदानुक्रम है। अहमदाबाद के कमिश्नर, उनके आईजी और फिर उनके कनिष्ठ। मैंने कमिश्नर को आदेश दिए थे, मैंने उनसे पूछा भी था, लेकिन कमिश्नर का कहना है कि उन्होंने अपने अधिकारियों को बताया था, लेकिन जब तक वे पहुंचे, तब तक एहसान जाफरी की हत्या हो चुकी थी, नुकसान हो चुका था। इसलिए नानावती न्यायिक जांच इस मामले की जांच कर रही है और सुप्रीम कोर्ट ने भी इसका संज्ञान लिया है।

प्र) मैं यही तो कह रहा हूँ। आप दूसरों के किए की कीमत चुका रहे हैं और अब वे राज्य के माध्यम से उसका लाभ उठा रहे हैं?

ए) यह तो अपरिहार्य है।

इसीलिए मैं कह रहा हूं कि मीडिया पक्षपाती रहा है, उसने कहानी के दोनों पक्षों को नहीं सुना है।

प्र) दंगों के दौरान आपके द्वारा अपनाए गए रुख के कारण आप कभी उनके पसंदीदा नहीं रहे?

ए) मुझे ऐसा ही लगता है। मैं कभी वैसा नहीं बना। किसी न किसी तरह मुझे हमेशा अपने हर काम को अभिव्यक्त करने की इच्छा होती थी। वह निरर्थक नहीं होता था।

प्र) क्या आपने दंगों के दौरान अपनी नाराजगी व्यक्त की थी?

ए) हां, मैंने कुछ बिंदुओं पर ध्यान दिलाया, लेकिन फिर भी आपको कई तरह के पदानुक्रमों का सामना करना पड़ता है।

प्र) क्या आपके पास सीएम तक सीधी पहुंच नहीं थी?

ए) देखिए, एक व्यवस्था है, आप सरकार को निर्देश नहीं दे सकते। एक कार्यप्रणाली है, एक व्यवस्था है। एक सीमा के बाद आप ज्यादा कुछ नहीं कर सकते। आप सरकार के ध्यान में कुछ चीजें लाते हैं और अगर वे कार्रवाई नहीं करते तो आप आगे क्या कर सकते हैं?

प्र) क्या आप इस बात से नाराज थे कि आपके द्वारा दिए गए सुझावों पर कोई ध्यान नहीं दिया गया?

ए) हां, लेकिन यह खेल का ही एक हिस्सा है।

प्र) लेकिन क्या आपको इस बारे में लिखना या बोलना चाहिए? दंगों के दौरान वास्तव में क्या हुआ था?

ए) मेरी बेटियाँ यह सुझाव दे रही हैं कि...

प्र) दंगों की जांच के लिए गठित की जा रही जांच समितियों का क्या हुआ?

ए) एक तो बनर्जी समिति की रिपोर्ट थी जिसमें साजिश का जिक्र था, लेकिन उसका न्यायिक

प्रक्रिया से कोई लेना-देना नहीं था, इसलिए उसे ध्यान में नहीं रखा जा सकता क्योंकि किसी भी गवाह से जिरह नहीं की गई थी। फिर सुप्रीम कोर्ट द्वारा नियुक्त विशेष जांच समिति है जो अलग-अलग मामलों की जांच करेगी। इसके अलावा, राज्य सरकार द्वारा गठित नानावती आयोग भी है।
सवाल) क्या आप सभी के सवालों का जवाब देने के लिए आपके सामने उपस्थित हुए?
ए) हाँ।
प्रश्न) किसका तरीका अधिक प्रभावी था?
ए) खैर, नानावती [आयोग] उनके लिए अधिक प्रभावी था। आप समझ रहे हैं ना मैं क्या कह रहा हूँ।
प्रश्न) आपका मतलब सरकार से है?
ए) बिल्कुल सही। देखिए, उनके लोग, अभियोजन पक्ष, मुस्लिम बचाव पक्ष के वकील। देखिए, मैं मीडिया में बात करने नहीं जा रहा, मैं उचित आयोग के सामने बात करूंगा।
प्रश्न) और सुप्रीम कोर्ट द्वारा नियुक्त व्यक्ति को निष्पक्ष होना चाहिए?
ए) संयोगवश, एहसान जाफरी की पत्नी, उनकी विधवा, ने ही शिकायत दर्ज कराई थी।
प्रश्न) क्या आपके गृह मंत्री को भी गिरफ्तार किया गया था? क्या आपने उनके अधीन काम किया था?
ए) हाँ, मेरी उससे हमेशा ही घोर दुश्मनी रहती थी।
प्रश्न) दंगों के दौरान?
ए) नहीं, दंगों के बाद, वह अक्षरधाम के बाद आए थे।
प्र) और आप किसी भ्रष्ट व्यक्ति के अधीन काम नहीं कर सकते?
ए) सिर्फ भ्रष्टाचार ही नहीं, मानसिकता भी मायने रखती है। उसे गिरफ्तार कर लिया गया। कॉल रिकॉर्ड से उसके अपराध साबित करने वाले सबूत मिले।
प्रश्न) आप उनके अधीन किस पद पर कार्यरत थे?
ए) डीजी.
प्रश्न) तो आप बच गए?
ए) खैर, नहीं, उसने मुझे काफी परेशान कर दिया।
प्र) क्या आपको दंगों के दौरान घुटन महसूस हुई? क्या आपने लड़ाई लड़ी?
ए) खैर, मैंने संघर्ष किया है। लेकिन आंतरिक संघर्ष के लिए एक अलग ही तरह की हिम्मत चाहिए होती है। एक तो दिखावा करना या जनता और प्रेस के सामने आना। दरअसल, टीओआई ने मेरे खिलाफ लिखा था कि अगर श्री चक्रवर्ती में थोड़ी भी अंतरात्मा होती, तो वे इस्तीफा दे देते। मुझे इस्तीफा क्यों देना चाहिए था?
क्या मैं ही अपराधी था? क्या मैं ही दंगाइयों के साथ मिलीभगत कर रहा था? दूसरी ओर, मैं लोगों को बचाने की पूरी कोशिश कर रहा था। मुझे इस बात का भी डर था कि मेरा उत्तराधिकारी कहीं उनकी मदद न कर दे।
सवाल) अगर आप वहां नहीं होते तो क्या ऐसा हो सकता था?
ए) हाँ।

प्रश्न) यदि बंद का आह्वान न किया गया होता तो क्या परिस्थितियाँ अनुकूल होतीं?
ए) बिल्कुल, यह वीएचपी द्वारा दिया गया था।
प्र) जो केंद्र के समान था।
ए) दरअसल, विश्व हिंदू परिषद (वीएचपी) सत्ताधारी पार्टी भाजपा की ही एक शाखा थी।
प्रश्न) क्या उन्होंने अधिनियम के आधार पर नहीं बल्कि आदेश दिए थे?
ए) उन्होंने मुझे कोई गैरकानूनी आदेश नहीं दिया। वह अपने मृत्युदंड के वारंट पर हस्ताक्षर नहीं करेगा।
प्र) क्या आदेश अदृश्य रूप से दिए जा सकते हैं?
ए) यह आमने-सामने की बातचीत होगी, न कि 20 लोगों के सामने, जिनमें से 5 आपके विरोध में हो सकते हैं।
प्र) तो क्या आप जो किताब लिखने का इरादा रखते हैं, उससे नौकरशाही और पुलिस बल में हलचल मचेगी?
ए) ठीक है, बशर्ते मैं उनका नाम न लूं और सिर्फ किस्से सुनाऊं।
प्रश्न) तो क्या उन घटनाओं के बाद से आपको हाशिए पर धकेल दिया गया था?
ए) खैर, अशोक नारायण के रूप में मेरा एक मित्र था, जिससे मैं सहमत था। मुख्य सचिव सुब्बाराव भी मित्र थे, लेकिन वास्तव में नहीं, क्योंकि मैं उनके कार्यों से सहमत नहीं था।
सवाल) भट्ट वाली बात का क्या मतलब है, वो सब बातें जो आप उस दिन कह रहे थे? आपने जिस वेबसाइट का जिक्र किया था, उस पर उनकी गवाही छपी थी? क्या वो सच थी?
ए) यह इस मायने में सच नहीं है कि वे एसपी स्तर के अधिकारी थे। खुफिया विभाग में एसपी। और श्री रायगर अतिरिक्त महानिदेशक थे जो उस महत्वपूर्ण दिन अनुपस्थित थे। इसलिए उन्होंने सोचा होगा कि उन्हें जाकर प्रतिनिधित्व करना चाहिए। लेकिन चूंकि यह विभागों के प्रमुखों की बैठक थी, इसलिए वे प्रतिभागी नहीं थे। श्री अशोक नारायण को मेरी बात की पुष्टि करनी होगी।
प्रश्न) मुझे दफनाला में आपके कुछ दोस्तों से मुलाकात हुई। सभी अधिकारी, पुलिसकर्मी, पुलिस कांस्टेबल...
ए) हां, वे सभी वहीं रहते हैं। फिर कुलदीप शर्मा भी हैं।
प्र) ओह जी हाँ, पी.सी.पांडे कह रहे थे कि आपको उस व्यक्ति से मिलना चाहिए जो अब भेड़ और ऊन विभाग में है।
ए) कुलदीप एक अच्छा आदमी है, वह सरकार से नाराज़ है इसलिए उसे किनारे कर दिया गया है। पहले उसका रवैया ऐसा था जैसे वह असल में मुख्यमंत्री हो। वैसे तो वह एक अच्छा अधिकारी है, उसे आज महानिदेशक होना चाहिए था लेकिन उसे सिर्फ इसलिए किनारे कर दिया गया क्योंकि उसने सरकार के खिलाफ़ आवाज़ उठाई थी। और सरकार ऐसा इसलिए करती है ताकि उसे अदालत न जाना पड़े, सरकार इतनी चालाक है कि उसे एक साइड पोस्टिंग दे देगी। मोदी बहुत ही समझदार आदमी हैं।
सवाल) अच्छा, सुब्बाराव को कोई पसंद नहीं करता? नारायण की पत्नी ने कहा कि वह सरकार का ढोल पीटता रहेगा।

ए) मुख्य सचिव। उन्हें उनके द्वारा पुरस्कृत किया गया है, इसलिए वे केवल अच्छी बातों के बारे में ही बात करेंगे।

प्रश्न) तो क्या दंगों के दौरान सुब्बाराओ ही सरकार के साथ मिलीभगत करने वाला एकमात्र व्यक्ति था?

ए) हां, हां, बिल्कुल, बॉस के बहुत करीब।

चक्रवर्ती यहां गुजरात के मुख्य सचिव सुब्बाराव का जिक्र कर रहे हैं, जिनके बारे में मेरी मुलाकात में हर किसी ने बताया कि गुजरात दंगों के दौरान वे मुख्यमंत्री के खास आदमी थे।

एक अखबार की रिपोर्ट में सुब्बाराव को '2003 में सेवानिवृत्त हुए पूर्व मुख्य सचिव' के रूप में वर्णित किया गया है, जिन्हें गुजरात ऊर्जा नियामक आयोग (जीईआरसी) के अध्यक्ष पद से सम्मानित किया गया है। यह पद सामान्यतः गुजरात में सेवानिवृत्त न्यायाधीशों के पास होता है और विश्लेषकों का मानना है कि वे जानते हैं कि उन्हें यह पुरस्कार क्यों मिला।

प्र) वैसे, सरकार का साथ देने वालों की सूची में आपका नाम भी था?

ए) जी हाँ, [तेहलका] पत्रिका ने कहा कि मुझे लाभ मिला है। मुझे बदले में क्या मिला है? बाकी सभी को तो पुरस्कार मिला है, मुख्य सचिव को, गृह सचिव को, पुलिस आयुक्त को।

कहने का मतलब यह है कि अगर कोई व्यक्ति निष्पक्ष रहने की कोशिश कर रहा है तो ऐसा नहीं होना चाहिए।

सवाल) लेकिन संजीव भट्ट वाली बात में भी, उन्होंने आपका नाम लिया था?

ए) जी हाँ, आपको श्रीकुमार से भी मिलना चाहिए। क्या आप उस मंत्री के बारे में बात कर रहे हैं जो मेरे कार्यालय में आए थे? वह मंत्री कुछ देर के लिए मेरे कार्यालय में थे, उनका नाम आई.के. जडेजा है, वे मुझसे बहुत नाराज़ थे। उन्होंने कहा, "आपको मेरे साथ बात करने की फुर्सत नहीं है।" और मैं उन्हें अपने कमरे में नहीं रखना चाहता था। इसलिए मैंने अपने साथी को उन्हें दूसरे कमरे में बैठाने को कहा। मैं अपने नियंत्रण कार्यों में व्यस्त था, इसलिए संजीव नाम के इस व्यक्ति ने उन्हें दूसरे कमरे में देख लिया होगा।

इसलिए उनके हस्तक्षेप का कोई सवाल ही नहीं उठता।

सवाल) लेकिन अगर भट्ट वहां होते भी, तो आज कोई भी यह बात नहीं कहेगा। कोई भी जोखिम उठाने को तैयार नहीं होगा?

ए) देखिए, अगर यह बात बिलकुल सच है, तो मेरा सीमित जवाब यह है कि सरकार ने एक न्यायिक आयोग नियुक्त किया था और इसकी घोषणा मार्च में विधानसभा में की गई थी। अब जब दंगे शांत हो गए, तो ये लोग, जो दावा करते हैं कि उनके पास सारी जानकारी है, उन्होंने कुछ क्यों नहीं किया? उचित समय के भीतर वे हलफनामा दाखिल कर सकते थे। तो श्रीकुमार ने ऐसा किया। उन्होंने लगभग पाँच हलफनामे दाखिल किए।

प्रश्न) लेकिन तहलका में छपे इस लेख की टैगलाइन कहती है कि यह आदमी सच बोल सकता है?

ए) मैंने उनसे पूछा था। क्योंकि श्री रायगर का तबादला मई में हुआ था। और तब भी दंगे जारी थे। इसलिए श्रीकुमार को अतिरिक्त महानिदेशक खुफिया विभाग में तैनात किया गया। मैंने उनसे

हलफनामा दाखिल करने को कहा। उन्होंने अपनी मर्जी से हलफनामा दाखिल कर दिया, जिसमें मेरे या दूसरों के बारे में एक शब्द भी नहीं था। कुछ महीनों बाद उन्होंने एक और हलफनामा दाखिल किया जिसमें उन्होंने कहा कि श्री चक्रवर्ती ने ये-वो कहा था। तो मैंने उनसे पूछा कि श्रीकुमार ने तब हलफनामा क्यों नहीं दाखिल किया? अगर वे इतने बड़े चमचे थे, तो उन्हें तब ही ये बात कह देनी चाहिए थी। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि उन्हें पदोन्नति नहीं मिली। अब मैं मुंबई आ गया था।

इसका कभी भी ज़िक्र नहीं होना चाहिए। तो यह आदमी मुझे रोज़ फ़ोन करता था और कहता था, "सर, क्या आप गुजरात आ सकते हैं? मुझे सरकार के खिलाफ़ CAT में केस करना है। मेरी पदोन्नति न होने के खिलाफ़।" मैंने कहा कि मैं नहीं आ सकता क्योंकि मैं मुंबई में हूँ और कई बार उनके परिवार वालों ने फ़ोन उठा लिए। तब उसने कहा, "सर, CAT के सामने आपको बस इतना कहना है कि श्रीकुमार जो कह रहे हैं, वही सच है।" तो मैंने कहा, "मैं ऐसा कैसे कह सकता हूँ? और 2002 और 2005 कहाँ हैं? आज इसकी बात क्यों कर रहे हैं?" तो उसने मेरे खिलाफ़ तीन हलफनामे लिखे, जिनमें मुझे फंसाया गया था। वह घर पर डायरी लिखता है, लेकिन वह कोई आधिकारिक केस डायरी नहीं है।

तो यह भट्ट भी उसका जाटवाला है।

और जब हालात अच्छे थे, तब यही लोग सरकार के साथ थे।

प्रश्न) तो क्या जडेजा की बैठक ही विवादित बैठक थी?

ए) नहीं, मुख्यमंत्री की बैठक।

प्र) तो भट्ट नाम का व्यक्ति भी इस बैठक में मौजूद था?

ए) नहीं, जैसा कि मैंने कहा, रायगर इस बैठक में अनुपस्थित थे, इसलिए भट्ट ने स्वेच्छा से बैठक में शामिल होने का निर्णय लिया।

लेकिन अशोक नारायण को लगा कि चूंकि यह प्रमुखों की बैठक है, इसलिए उन्हें अनुमति नहीं दी जानी चाहिए। तो अगर आप अशांत माहौल में फायदा उठाना चाहते हैं, तो आप जाकर अपना चेहरा दिखा सकते हैं।

जबकि स्वर्णकांत वर्मा के मामले में, उनके पास मुकदमा दायर करने का वैध अधिकार था।

प्रश्न) तो हर चीज या हर व्यक्ति विवाद में फंसा हुआ है, चाहे वह मुठभेड़ हो या दंगे।

ए) जी हां, गृह मंत्री को भी गिरफ्तार किया गया है।

सवाल) क्या सभी अधिकारी उसे नापसंद करते हैं?

ए) हां, हां, हर कोई उससे नफरत करता है।

सवाल) लेकिन उन जैसे व्यक्ति को गृह मंत्री के पद पर क्यों नियुक्त किया गया है?

ए) राजनीतिक संबंधों की वजह से। अमित शाह और मैं एक-दूसरे के कट्टर दुश्मन थे। कुलदीप ने एसीबी में रहते हुए उनके खिलाफ मामला दर्ज कराया था।

प्र) तो शाह ने आपके साथ क्या किया?

ए) खैर, मैंने कागज़ पर कभी हस्ताक्षर नहीं किए।

प्र) आप सबने शिकायत क्यों नहीं की?

ए) राजनीतिक रूप से वह बहुत शक्तिशाली थे। जब तक वे लिखित आदेश देते थे, तब तक उनका दबदबा बना रहता था। और अच्छी बात यह थी कि पत्रों पर हस्ताक्षर वे स्वयं करते थे, यहां तक कि उनका सहायक भी नहीं। पहले वे यह समझाने की कोशिश करते कि इन्हें बदलना है, इन्हें बदलाव करना है। लेकिन बाद में वे स्वयं आदेशों पर हस्ताक्षर कर देते थे। इस प्रकार, उन्होंने कनिष्ठ अधिकारियों द्वारा किए जाने वाले आदेशों पर भी हस्ताक्षर कर दिए, जो देश के इतिहास में पहली बार हुआ था।

प्र) क्या आदेश हैं?

ए) अधिकारियों का तबादला। ये मेरा आदमी है, उसे यहाँ रखो। इसलिए मैं उनसे कहता था, "सर, सरकारी आदेश देगा तो मैं करूँगा," और अगले ही दिन आदेश आ जाते थे। इस तरह अशोक नारायण शाह की परेशानी से बच गए।

प्रश्न) और फिर ये मंत्री माया कोडनानी थीं?

ए) हाँ, वह नरोदा मामले में शामिल थी। मामला सुप्रीम कोर्ट में विचाराधीन है।

सवाल) लेकिन वह तो बिल्कुल मासूम दिख रही थी। क्या वह सचमुच इसमें शामिल थी?

ए) वह थी, आरएसएस वालों, दिखावा धोखा दे सकता है।

चक्रवर्ती एक अंतर्विरोधाभासी व्यक्ति हैं, जिनके मन में अपने ही वर्दीधारी अधिकारियों के बारे में कड़वी सच्चाई है, जिन्होंने उनके अनुसार न्याय दिलाने के लिए बहुत देर से आवाज उठाई (श्रीकुमार की तरह)। यह माना जा सकता है कि श्रीकुमार ने थोड़ी देर से आवाज उठाई और संजीव भट्ट के बताए सच में कोई ठोस सबूत नहीं है, लेकिन क्या इससे राज्य के महानिदेशक के रूप में चक्रवर्ती की सारी जिम्मेदारी खत्म हो जाती है? वास्तव में, पुलिस के किसी भी महानिदेशक या अन्य अधिकारी के लिए सरकार के उच्च और शक्तिशाली लोगों से मुकाबला करना बेहद मुश्किल हो जाता है। इस मामले में, वे अमित शाह से निपट रहे थे, जिनके बारे में सिंघल, रायगर, अशोक नारायण, प्रियदर्शी और अब चक्रवर्ती समेत सभी इस बात से सहमत हैं कि वे कानून-व्यवस्था की परवाह नहीं करते थे और अधिकारियों को अवैध आदेश देते थे। लेकिन क्या चक्रवर्ती ने चुप रहकर सांप्रदायिक हिंसा के दोषियों को न्याय के कटघरे में खड़ा किया?

माया कोडनानी और अन्य

अहमदाबाद में मुझे लगभग अपनी ज़िंदगी अच्छी लगने लगी थी, या यूँ कहूँ कि अजय कहता था, मैं एक सच्ची अहमदाबादवासी बनती जा रही थी। मुझे पता था कि रात के 1 बजे अहमदाबाद की मशहूर बेकरी अपर क्रस्ट से एप्पल पाई कैसे खानी है। हॉस्टल की लड़कियाँ और मैं रात के 2 बजे अंडे खाने के लिए बाहर जाया करती थीं। दुर्गा पूजा पंडाल और नौ दिनों के गरबा के बीच, पानी और मैं नाचते-नाचते अपने पैर लाल कर लेते थे।

हमें एक ऐसी जगह मिल गई थी जहाँ सबसे बढ़िया काठियावाड़ घटिया और लाल मिर्च से सजे स्वादिष्ट व्यंजन मिलते थे। एक बार जब मुझे नेहरू फाउंडेशन में तीन दिनों के लिए कमरा खाली करना पड़ा, तो मुझे एनआईडी हॉस्टल में एक छात्र के रूप में जगह मिल गई। मैं एक ऐसी छात्रा के साथ कमरा साझा करती थी जो सुबह के छोटे घंटों तक अपने प्रेमी से बातें करती रहती थी। मैंने अपने पूरे छात्र जीवन में हॉस्टल में रहने की इच्छा रखी थी, इसलिए अहमदाबाद में बिताए इस समय का मैं सचमुच आनंद ले रही थी।

लेकिन हर बात मुझे खुश नहीं कर रही थी। आखिरकार माइक के जाने का समय आ गया था। हम उसके विदाई भोज के लिए उसके पसंदीदा थाली रेस्टोरेंट पकवान गए। उसके लैपटॉप में अहमदाबाद की कुछ शानदार तस्वीरें थीं, और अब तक वह ठीक-ठाक हिंदी बोलना सीख चुका था। हम रात भर बातें करते रहे, फिर अपने-अपने कमरों में चले गए। उसकी सुबह 10 बजे दिल्ली की फ्लाइट थी। अगली सुबह मुझे अपने दरवाजे के नीचे एक तस्वीर और एक मोर का पंख मिला। तस्वीर भगवान कृष्ण की थी, और उसके पीछे माइक ने हिंदी में लिखा था, "प्यारी मैथिली, अपना ख्याल रखना।" मेरा दोस्त, मेरा सहारा, मेरा साथी मुझे छोड़कर चला गया था। मेरे पास अब कोई ऐसा नहीं बचा था जिससे मैं राणा अय्यूब को जानने वाले किसी से बात कर सकूँ। माइक 2011 में एक दिन के लिए आखिरी बार अहमदाबाद वापस आया था।

जब मैं कुछ दस्तावेज़ हासिल करने के लिए 2013 में दोबारा अहमदाबाद लौटा, तो माया कोडनानी फिर से जेल में थीं। स्टिंग ऑपरेशन हो चुका था और मैं तहलका के लिए काम करते हुए इसके सार्वजनिक होने का इंतज़ार कर रहा था। जिस अधिकारी से मैं दस्तावेज़ों के लिए मिलने वाला था, उसने मुझे बताया कि वह मायाबेन से जेल में मिला था। उसने कहा कि वह मायाबेन को जेल में ओशो की किताबें भेजने की सोच रहा था। मैं यह सुनकर हैरान रह गया। उसने कहा, 'वह लगातार रो रही थीं, मुझसे उन्हें बाहर ले जाने के लिए कह रही थीं, उनकी हालत बहुत खराब है। मुझे लगा कि आध्यात्मिकता से उन्हें मदद मिल सकती है।'

जब मैं गुप्तचर गतिविधियों के दौरान मायाबेन के घर दोपहर के भोजन के लिए गई, तो उन्होंने मुझे आमरस परोसा। आम का मौसम बीत चुका था, लेकिन उन्होंने आमों को पीसकर फ्रीजर में रख दिया था, क्योंकि उनका बेटा जल्द ही अमेरिका से उनसे मिलने आने वाला था। फिर उन्होंने मुझे गले लगाया और कहा, 'तुम खाओ, तुम्हें लगेगा जैसे मेरा बेटा खा रहा है। तुम भी मेरी बेटी मैथिली जैसी हो।'

उस दोपहर मैंने उन्हें गीता सार समझाया, जो मैंने कथित तौर पर अपने संस्कृत शिक्षक पिता से

सीखा था। वह इस बात से प्रभावित हुईं कि विदेश में रहने वाली लड़की को यहाँ रहने वालों से ज़्यादा धर्म का ज्ञान है। उन्होंने कहा, 'मैथिली, हम अपनी सारी संस्कृति खो चुके हैं। इन मुसलमानों को देखो, इनके बच्चे भी इतने कट्टर हैं।' मैंने सहमति में सिर हिलाया। दोपहर का भोजन सादा था, जिसमें दो सब्ज़ियाँ, पापड़ और पूरियाँ थीं। मायाबेन ने खाना खुद बनाया था और खाते समय उन्होंने मुझे परोसा।

उस शाम हमारी बातचीत शुरू हुई। मुस्लिम समुदाय के प्रति उसकी नफरत में कोई संदेह नहीं था, लेकिन सबसे बढ़कर, मोदी के प्रति उसकी घृणा मेरी बातचीत में खुलकर सामने आई। उसने स्पष्ट शब्दों में कहा कि मोदी ने अपने नापसंद लोगों को खत्म करने के लिए उसके और गोर्धन ज़ादाफ़िया के खिलाफ मामलों का इस्तेमाल किया।

'इस नई पीढ़ी के पास कुछ भी नहीं है, कोई विचारधारा नहीं है, अगर कुछ भी हो जाए तो भी वे कभी सड़कों पर नहीं उतरेंगे।'

हमारे धर्म में जो सिखाया जाता है, उसे देखो, एक चींटी को भी मत मारो, और यही बात बचपन से ही हमारे बच्चों को सिखाई जाती है। और इन लोगों को बचपन से क्या सिखाया जाता है, कि तुम्हें मारना ही है, केवल तभी तुम मुसलमान हो जब तुम मारोगे। ये लोग क्या सिखाते हैं कि अगर आप एक आदमी को भी मुसलमान बनाओ तो आपको जन्नती परी मिलेगी। और यह सब मदरसों में सिखाया जाता है। लेकिन कम से कम अपने बच्चों को यह तो सिखाओ कि वे भारतीय हैं। यह बर्दाश्त नहीं किया जा सकता कि पाकिस्तान की जीत पर तुम पटाखे फोड़ोगे।

Q) Abhi in logon ko 2002 ke baad kam nahi hua?

A) Haan abhi thoda kam hua hai.

सवाल) तो आप अदालत में करीब आठ घंटे बिताते हैं?

ए) क्या करूं? मेरा काम ठप हो रहा है। लेकिन वे मुझे अदालती कार्यवाही से नहीं बचा सकते क्योंकि मेरे जैसे 80 और लोग हैं। तीस्ता जैसे लोग हंगामा शुरू कर देंगे।

सवाल) लेकिन मुझे एक बात बताइए, नरेंद्र मोदी के इर्द-गिर्द बहुत सारी चापलूसी होती है, है ना? मतलब, सारे अच्छे कामों का श्रेय उन्हीं को दिया जाता है?

ए) अभी तो यह अच्छा है, लेकिन लंबे समय में यह बुरा है।

प्र) क्या आप उनके पसंदीदा लोगों में से एक हैं?

ए) मैं सबका पसंदीदा था।

सवाल) कम से कम अगर कुछ नहीं तो, गुजराती लोग आपके द्वारा उनके लिए किए गए कार्य को तो नहीं भूलेंगे?

ए) वे इसे कभी नहीं भूलेंगे। वे मेरे साथ खड़े हैं।

सवाल) अमित शाह वाली घटना के बाद मोदी के साथ क्या हो रहा है?

ए) गिरफ्तारी और जमानत के बाद मैंने उनसे बात नहीं की है। मुझे लगता है कि हम दो मौकों पर दो बार मिले हैं।

प्र) तो जब वह आपको देखता है तो उसकी क्या प्रतिक्रिया होती है?

ए) वह कोई प्रतिक्रिया नहीं देता, कुछ नहीं कहता। और मैं भी कुछ नहीं कहती। खैर, यह मेरी

समस्या है, मैं इसे खुद संभाल लूंगी। भगवान मेरी मदद करेंगे। मुझे किसी से मदद की उम्मीद क्यों करनी चाहिए?

मुझे पता है मैं निर्दोष हूँ और भगवान मेरी मदद करेंगे। मैं वहाँ नहीं था मैथिली, मैं उस जगह से 20 किलोमीटर दूर था। मैं सोला में था। मैं सभा में गया, जो 8:30 बजे शुरू हुई। मैं वहाँ गया। मैं अपने घर से निकला, आनंदीबेन के कार्यालय गया। हम वहाँ गए। हमने वहाँ बातचीत की।

सवाल) तो, आनंदीबेन से भी पूछताछ की जानी चाहिए थी, है ना?

ए) मुझे नहीं पता। वहाँ से मैं अस्पताल गया, क्योंकि सभी शव सोला सिविल अस्पताल में थे। मेरी नर्स के पिता गोधरा हत्याकांड के शिकार थे और मैं उनके शव की पहचान करने वहाँ गया था। अमित शाह और मैं सिविल अस्पताल गए। वहाँ हिंदुओं ने भी मुझे प्रताड़ित किया, वे गुस्से में थे। उन्होंने मेरे और अमित शाह के खिलाफ़ नारे लगाए। प्राइवेट जासूस मुझे अपनी गाड़ी में बिठाकर ले गया।

प्र) तो आरोप क्या है?

ए) वे गवाहों का इस्तेमाल यह साबित करने के लिए कर रहे हैं कि मैं दंगे भड़का रहा था। कि मैं भीड़ का नेतृत्व कर रहा था। मैं अपने अस्पताल आया... एक प्रसूति रोगी की देखभाल की। मैं 3 बजे अस्पताल गया। उन्होंने कहा कि मोबाइल इस इलाके में था, इसलिए मैं वहां था।

प्रश्न) गोर्धन ज़ादाफ़िया गृह मंत्री थे। क्या उन्हें भी इसी कारण से पद से हटाया गया था?

ए) नहीं, उन्हें इसलिए हटाया गया क्योंकि वे मुख्यमंत्री की नजरों में अच्छे नहीं थे।

सवाल) तो क्या मुख्यमंत्री ने गोर्धनभाई को बचाने के लिए अमित शाह मामले की तरह गवाहों का इस्तेमाल नहीं किया?

ए) नहीं [हंसते हुए]।

प्र) तो क्या उन्होंने दंगों की वजह से ही गोर्धन ज़ादाफ़िया को भी पद से हटा दिया?

ए) हां, वह चला गया।

प्र) तो क्या यह उसके लिए उन लोगों को रास्ते से हटाने का एक अच्छा तरीका बन गया जिन्हें वह पसंद नहीं करता था?

ए) हाँ।

सवाल) अमित शाह के साथ क्या चल रहा है?

ए) वह उसका आदमी है, उसके बहुत करीब है।

प्र) मुझे लगा कि आनंदीबेन उनकी ज्यादा पसंदीदा व्यक्ति थीं।

ए) आनंदीबेन उनका दाहिना हाथ हैं और वो बायां हाथ। उन्होंने अमित शाह को सत्ता से हटाने के लिए हर संभव प्रयास किया। आडवाणी उनसे मिलने आए। सुषमा स्वराज उनके आवास पर गईं।

प्र) लेकिन जब आपको गिरफ्तार किया गया था तब ऐसा नहीं किया गया था?

ए) क्या करें? खैर, भगवान तो वहां हैं ही।

Looks like he will be portrayed as the PM candidate. Aur usko takkar dene waala bhi koi nahi hai..He will make Anandiben the CM.

Q) Ye sab log kitna bolte hain unke peeche. Ye aapke encounter cops

bhi yahi bolte hain ki use and throw kiya?
A) Haan, Vanzara bahut achcha tha. Dekho encounters toh kiya in logon ne, lekin jo sahi wajah hai, the reason why the encounters happened ye kyun nahi saamne aa raha. Jaise ki Sohrabuddin ko maara terrorist bolke, uski wife ko kyun maara, who toh terrorist nahi thi naa. That Kausar Bi. He was bad person, you can encounter him, but why his wife?
Q) Haren Pandya and Gordhan Zadaphia dono ko nikal diya na?
ए) गोरधनभाई तो ठीक थे, हरेन पंड्या एक बहुत ही गतिशील व्यक्ति थे
Q) Lekin Gordhanbhai ko bhi toh riots mein use karke phenk diya isne?
ए) जी हाँ, जी हाँ।
पूरे गुजरात में दंगे हुए, लेकिन वे नरोडा के विधायक, यानी मेरे पीछे थे।
प्र) क्या आपको बलि का बकरा बनाया गया?
ए) हाँ।
सवाल) मोदी से पूछताछ में क्या हुआ?
ए) वह एसआईटी के समक्ष भी पेश हुआ था, लेकिन उसे छोड़ दिया गया है।
सवाल) लेकिन आपके खिलाफ इस्तेमाल किए गए मापदंड के अनुसार, उसे भी गिरफ्तार किया जाना चाहिए था?
ए) हा हा...[सिर हिलाता है]।
सवाल) मैं कल उनसे मिल रहा हूँ, आपके मोदी से?
ए) जब आप मोदी से मिलें, तो उनसे पूछें कि वे इतने विवादास्पद व्यक्ति क्यों हैं?
प्र) सचमुच?
ए) वह हर चीज को अपने पक्ष में मोड़ लेता है।
सवाल) तो क्या ये लोग आपसे जेल में मिलने आए थे?
ए) नहीं, उनमें से कोई नहीं।
सवाल) तो, आप किसी भी दिन जेल जा सकते हैं?
ए) जी हां, किसी भी दिन, किसी भी दिन, फैसला आने के बाद।
सवाल) मुझे मोदी से क्या पूछना चाहिए, अब तो वो मेरे सवालों का जवाब देने से बचेंगे?
ए) जब आप उनसे मिलें तो सवाल को घुमाकर पूछें। उनकी प्रशंसा करें और फिर उनसे पूछें...
प्रश्न) आपके बारे में?
ए) उनसे किसी और तरीके से पूछें, उनसे पूछें कि उनके कुछ मंत्री इसमें क्यों शामिल हैं।
पी.सी. पांडे से पूछिए, उन्हें सब पता है, उन्हें सच्चाई पता है। उनसे पूछिए, वे अहमदाबाद के कमिश्नर रह चुके हैं।
प्र) तो फिर वह सच क्यों नहीं बोलता?

ए) मुझे नहीं पता।
प्रश्न) अब मुझे समझ में आया कि कोदनानी के बारे में पूछे जाने पर उनका चेहरा क्यों उतर गया था।
ए) अब उसे मेरे बारे में बात करने की क्या ज़रूरत है?
प्रश्न) मोदी के बारे में क्या?
ए) उनकी और उनके काम करने के तरीके की तारीफ कीजिए, फिर वो बात करेंगे। आप जानते हैं वो क्या कहेंगे, उनका जाना-पहचाना जवाब, 'मुझे विवेकानंद पसंद हैं, मुझे सरदार वल्लभभाई पटेल पसंद हैं'। मेरे बारे में पूछिए तो वो कहेंगे 'अच्छा हम क्या करें, एसआईटी वहां थी, फोन कॉल रिकॉर्ड हैं' या फिर वो छोटा और सीधा जवाब देंगे 'मामला विचाराधीन है'।
प्रश्न) तो क्या ये सभी बातें उन पर भी लागू होती हैं?
ए) हा हा... उससे यह पूछो।
प्र) वैसे, मुझे जयंती रवि से मिलना था, और मुझे पता ही नहीं चला कि वह गोधरा कांड के दौरान वहां मौजूद थीं?
ए) जी हां, जयंती रवि, वो गोधरा की कलेक्टर थीं, प्रभारी अधिकारी। उस समय आनंदीबेन को दंगे करने से रोकने के कारण उन पर काफी दबाव था। इसलिए वो सरकार की नजरों में अच्छी नहीं थीं। अब वो वापस आ गई हैं। मुझे पूरी जानकारी नहीं है। और जब आप उनसे मिलें तो उन्हें ये मत बताना कि आप मुझे जानते हैं या मुझसे मिल चुके हैं, क्योंकि वो ये बात याद रखेंगे।
इस बात में कोई शक नहीं है कि माया कोडनानी ने आरएसएस से शिकायत की थी कि उन्हें दोषी ठहराया गया जबकि मोदी को एसआईटी ने छोड़ दिया। इसमें भी कोई संदेह नहीं है कि माया कोडनानी न केवल यह मानती थीं कि अमित शाह मोदी के करीबी थे, बल्कि यह भी कि मोदी शाह को बचाने के लिए किसी भी हद तक जा सकते थे। मुझसे बातचीत के दौरान उन्होंने उन तथ्यों को दोहराया जो मैंने पहले भी कई बार सुने थे कि अधिकारियों का इस्तेमाल किया जाता था और फिर सुविधा के अनुसार उन्हें छोड़ दिया जाता था।
Geeta Johri
मैंने उस सुबह पानी को जल्दी जगा दिया, उसकी ज़रूरत थी। पानी मुश्किल से 18 साल की थी और ग्रीनलैंड में वह मिठाई बनाने का काम करती थी। वह बड़े ही दिलचस्प कपड़े पहनती थी। फाउंडेशन में वह सबकी जान थी। जब भी हम 'शीला की जवानी' बजाते, उसका चेहरा खिल उठता और वह अचानक नाचने लगती। उसने एक बार मुंबई एयरपोर्ट पर भी ऐसा किया था जब हम अहमदाबाद जा रहे थे। मेरे मन में एक योजना थी, लेकिन मुझे यकीन नहीं था कि पानी मेरी मदद कर पाएगी। वह तो बस उस दिन के नए जैज़ गाने को सुनकर ही खुश होती थी।
मैंने उसे छत पर सिगरेट पीने के लिए बुलाया और उससे पूछा कि क्या वह राजकोट की एक दिन की यात्रा में दिलचस्पी रखती है। मैंने उसे बताया कि मेरी एक घंटे की मीटिंग है और मुझे उसकी मदद की ज़रूरत है। यह सुनकर वह उत्साहित हो गई और बोली, 'क्या हम बस से जा रहे हैं?' मैंने कहा, हाँ, छह घंटे का सफर होगा और हम होटल में चेक-इन करेंगे। मुझे पानी की मदद एक और काम के लिए भी चाहिए थी। उसका पासपोर्ट। अहमदाबाद में मैंने किसी तरह रहने का

इंतज़ाम कर लिया था, लेकिन राजकोट के होटल के लिए मुझे ज़रूरी प्रमाण पत्र चाहिए था और इस मामले में पानी बहुत मददगार साबित होगी।

अगली सुबह हम राजकोट के लिए बस में सवार हुए। मेरे पास कैमरे, चिप्स से भरा बैग, लैपटॉप, संगीत और चॉकलेट थे। जब बस जलपान के लिए रुकी, तो पानी सीधे लस्सी बेचने वाले के पास चली गई। बस में ज़्यादातर व्यापारी थे, इसलिए जब पानी ने सिगरेट जलाई, तो सबकी नज़रें उस पर टिक गईं। मैंने उसका हाथ थामे रखा, मानो उसे अवांछित ध्यान से बचा रही हो। अहमदाबाद लौटने तक पानी की ज़िम्मेदारी मेरी थी। मुझे उससे एक अजीब सा अपनापन महसूस हुआ। वह मेरी उस छोटी बहन जैसी थी, जो मुझे कभी नहीं मिली थी।

होटल पहुँचते ही पानी के पासपोर्ट ने सारा काम कर दिया। मेरा नाम मैथिली दर्ज हो गया और वो खुशी से चीखते हुए कमरे में दाखिल हुई। बाथरूम में बाथटब था और कांच की खिड़की से पूरे शहर का नज़ारा दिख रहा था। वो बेहद खुश थी और मैं घबराई हुई। उस समय की सबसे विवादित अधिकारियों में से एक गीता जौहरी ने मुझे अपॉइंटमेंट दिया था। मैंने उनसे एक सफल महिला के रूप में उनकी प्रोफाइल बनाने के बारे में बात की थी और उन्हें एक नकली स्क्रिप्ट भी भेजी थी।

जब हम जौहरी से मिलने गए, तो उन्होंने हमें अपने कमरे में स्वागत किया और बताया कि वह बड़ी उत्सुकता से हमारा इंतज़ार कर रही थीं। वह राजकोट की कमिश्नर के पद पर तैनात थीं, इसलिए हमें उन्हें ढूंढने में कोई परेशानी नहीं हुई। कुछ ही मिनटों में उनकी मुलाकात पानी से हुई, जिसने बड़े उत्साह से अपनी बस यात्रा का वर्णन किया। जौहरी ने कहा कि अमेरिका में आठ साल बिताने के बाद मैं तो बिल्कुल विदेशी बन गई हूँ। 'तुम्हारा लहजा कितना भारी है!' उन्होंने अपनी विदेश में रहने वाली बेटी के बारे में बताया और कैसे उसके दोस्त अक्सर राजकोट आकर उनके घर पर ठहरते थे। उन्होंने पानी को अगली बार आने पर अपने घर पर ठहरने का प्रस्ताव दिया और पानी तुरंत मान गई। मैंने फिलहाल सिर हिलाकर सहमति दे दी। यह असहमति जताने का समय नहीं था। मैं पानी को बाद में समझा सकती थी।

मैंने उनकी बहादुरी के सभी किस्सों का जिक्र करते हुए अपनी बात शुरू की और फिर आश्चर्य व्यक्त किया कि एक रिपोर्ट में उनके बारे में नकारात्मक बातें कही गई थीं। 'अरे, यह सोहराबुद्दीन मुठभेड़ है, आपको इसके बारे में ज्यादा जानकारी नहीं होगी। यह एक ऐसी हत्या थी जिसके लिए गुजरात के सभी अधिकारी जांच के दायरे में हैं।'

हाँ, मैंने उसे आँखें फाड़कर बताया, मैं जिस भी अधिकारी से मिलती हूँ, वह इस मामले की बात करता है। वह इस बात पर हँसी कि कैसे एक 'बदमाश' ने राज्य को बंधक बना रखा था। यह वही गीता जौहरी थीं, जिन्होंने अपने कनिष्ठ वी.एल. सोलंकी के अनुसार, सोहराबुद्दीन फर्जी मुठभेड़ पर सुप्रीम कोर्ट को भेजी जाने वाली स्थिति रिपोर्ट में बदलाव करने को कहा था। अमित शाह के आवास पर हुई एक बैठक में उन्हें रिपोर्ट में विवरण बदलने के लिए कहा गया था। सुप्रीम कोर्ट ने सीबीआई को जांच सौंपते समय गीता जौहरी को जांच में लापरवाही बरतने के लिए फटकार लगाई थी।

इस समय पाठक के लिए गीता जौहरी को थोड़ा और गहराई से जानना आवश्यक है।

1982 बैच की गीता जौहरी गुजरात की पहली महिला आईपीएस अधिकारी थीं। 1990 के दशक से उनके करियर में कई उतार-चढ़ाव आए। सितंबर 1992 में, जौहरी उस समय सुर्खियों में आईं जब उन्होंने दरियापुर के पोपटियावाड़ स्थित माफिया डॉन अब्दुल लतीफ के अड्डे पर छापा मारकर उसके बंदूकधारी शरीफ खान को गिरफ्तार कर लिया। हालांकि, लतीफ भागने में कामयाब रहा।

2006 में, सीआईडी (अपराध) में तैनाती के दौरान, उन्होंने सोहराबुद्दीन शेख के फर्जी मुठभेड़ और उनकी पत्नी कौसरबी की हत्या की जांच का नेतृत्व किया। यह जांच सोहराबुद्दीन के भाई रुबाबुद्दीन द्वारा सर्वोच्च न्यायालय में दायर याचिका के बाद की गई थी। उनकी विस्तृत और गहन जांच ने पुष्टि की कि मुठभेड़ फर्जी थी। इस जांच में कई पुलिस अधिकारियों की संलिप्तता भी उजागर हुई और उनके द्वारा जुटाए गए सबूतों के आधार पर, विवादास्पद डीआईजी डीजी वंजारा, एसपी राजकुमार पांडियन और दिनेश एमएन सहित 13 पुलिस अधिकारियों को गिरफ्तार किया गया। ये गिरफ्तारियां डीआईजी पुलिस रजनीश राय ने कीं, जो औपचारिक रूप से जांच के प्रभारी थे।

कुछ ही समय बाद, राय को जांच से हटने के लिए कहा गया और जौहरी को बहाल कर दिया गया। लेकिन जाने से पहले, राय ने तीनों आरोपियों के टेलीफोन रिकॉर्ड वाली सीडी अपने वरिष्ठों को सौंप दीं। जौहरी का अपने वरिष्ठों के साथ तीखा टकराव हुआ और फिर उन्हें सीधे सर्वोच्च न्यायालय में रिपोर्ट करने के लिए कहा गया। हालांकि, सत्र न्यायालय में उनके द्वारा दायर आरोपपत्र की कड़ी आलोचना हुई। जौहरी द्वारा मामले को संभालने में खामियां पाए जाने के बाद, सर्वोच्च न्यायालय ने मामले को सीबीआई को सौंपने का आदेश दिया।

फर्जी मुठभेड़ मामले में जोहरी सबसे अहम कड़ी थीं। मैंने पहले एक लेख में कहा था कि, 'एक आदर्श दुनिया और आदर्श परिस्थितियों में गीता जोहरी उन महिलाओं के लिए एक आदर्श होतीं जो सेना में शामिल होना चाहती थीं। लेकिन न तो यह एक आदर्श दुनिया है और न ही किस्मत ने गीता जोहरी का साथ दिया।'

मैंने उससे बातचीत की शुरुआत यह पूछकर की कि क्या सब ठीक है, क्योंकि वह काफी तनाव में दिख रही थी।

ए) पिछले कुछ महीनों से मैं बहुत मुश्किल दौर से गुजर रहा था...हालात बहुत खराब थे।

प्रश्न) जब ये विवाद शुरू हुए, क्या आपको इनकी आशंका थी?

ए) कभी-कभी आप इनकी उम्मीद नहीं करते। मैंने भी नहीं की थी, मुझे इनकी उम्मीद करने का कोई कारण नहीं था। खासकर जब आप अच्छा काम कर रहे हों, तो आप उम्मीद नहीं करते कि कोई कुछ गलत निकालेगा। लेकिन कभी-कभी कुछ कारणों से चीजें गलत हो जाती हैं, कभी-कभी ये राजनीतिक कारण होते हैं।

प्रश्न) आपका प्रश्न अधिक राजनीतिक था?

ए) हां, मेरा मामला ज़्यादा राजनीतिक था। अलग तरह की सरकारें थीं, राज्य और केंद्र में अलग-अलग सरकारें थीं।

प्रश्न) मैंने आपके बारे में बहुत कुछ पढ़ा है। मुझे बताया गया कि आपने लगभग संसद का कार्य

ठप कर दिया था।
ए) हा हा, हाँ, सोहराबुद्दीन का मामला। उस बारे में कुछ बेहद आपत्तिजनक खबरें आई थीं। मीडिया रिपोर्टों में मेरे बारे में बहुत ही बुरी बातें लिखी गई थीं।
सवाल) तो आप यह कह रहे हैं कि सीबीआई आपको गिरफ्तार करना ही नहीं चाहती थी?
ए) नहीं, सीबीआई ने कभी नहीं कहा कि वह मुझे गिरफ्तार करना चाहती है। मैं उस समय लंदन में प्रशिक्षण ले रहा था और मुझे इसके बारे में लगातार खबरें मिलती रहीं। जब मैं वापस आया तो मैंने ये सारी प्रेस रिपोर्टें देखीं। मतलब, अगर आपके पास सबूत हैं तो आप उन्हें पेश करते हैं। मैंने उनसे यही कहा था। यह सब ऑफ द रिकॉर्ड है, ठीक है!
तो उन्होंने मुझसे गृह मंत्री के बारे में पूछा। गृह मंत्री से मेरी कभी नहीं बनी, इसलिए मैंने उन्हें बताया कि जब सीबीआई ने मुझसे इस बारे में पूछा तो अमित शाह से भी मेरी कभी नहीं बनी। और कोई भी, कोई भी नेता मुझसे बात नहीं करता क्योंकि वे मुझसे बहुत डरते हैं। आप जानते हैं, पिछले दो सालों में किसी ने मुझे फोन नहीं किया। सवाल) क्या यह वही गृह मंत्री हैं?
ए) जी हां, गृह मंत्री अमित शाह, यह भले ही हास्यास्पद लगे, लेकिन मैं उनसे बात करना ही नहीं चाहता था। वे मुझे सिर्फ धमकी दे रहे थे।
मेरे पति मेरे लिए एक मजबूत सहारा रहे हैं। वे हर सुख-दुख में मेरे साथ खड़े रहे हैं, वे सभी आवेदन तैयार करने में मेरी मदद करते हैं। वे गांधीनगर में तैनात वन अधिकारी हैं।
सवाल) हर कोई इस मुठभेड़ की बात कर रहा है... सोहराबुद्दीन मुठभेड़ की? दिलचस्प मामला है।
ए) उनसे भी ज़्यादा, उनकी पत्नी कौसर बी। वो एक उम्रदराज़ महिला थीं, मतलब उनके दो बच्चे थे। दोनों किशोर थे। उनकी उम्र लगभग 35 या 40 रही होगी। उनकी पहले से ही किसी और से शादी हो चुकी थी। वो अपनी बहन के साथ रहने के लिए इंदौर गई थीं। उनकी बहन एक ब्यूटी सैलून चलाती थीं और वहीं उन्हें सोहराबुद्दीन से प्यार हो गया। दोनों ने शादी कर ली और कौसर ने अपने पति से तलाक ले लिया।
वह एक अपराधी है, एक जबरन वसूली करने वाला है।
प्रश्न) और एक अपराधी की वजह से राज्य में उथल-पुथल मच गई?
ए) दरअसल, वह एक अपराधी था और वे सोहराबुद्दीन को मुठभेड़ में मारना चाहते थे, लेकिन उन्होंने मूर्खतापूर्ण तरीके से ऐसा किया। उन्होंने उसे लोगों से भरी बस से उठा लिया। ऐसा नहीं किया जाता। ये सब काम गुप्त रूप से किए जाने चाहिए, खुलेआम नहीं। इसी वजह से वे पकड़े गए।
प्रश्न) और इसलिए महिला भी मुठभेड़ में फंस गई?
ए) नहीं, उसने सोहराबुद्दीन को छोड़ने से इनकार कर दिया क्योंकि उसे पता था कि वे उससे मुठभेड़ करेंगे। जब उन्होंने सोहराबुद्दीन को मार डाला, तो उन्हें एहसास हुआ कि कौसर बी इस बारे में बोल देंगी, इसलिए उन्होंने कौसर बी को भी मार डाला। तो असल मुद्दा सोहराबुद्दीन का मुठभेड़ में मारा जाना नहीं था, मुद्दा कौसर बी की हत्या थी।
सोहराबुद्दीन का व्यवहार विश्वसनीय लग रहा था। कौसर बी के परिवार को भनक लगी और वे

सुप्रीम कोर्ट चले गए।
उस समय मैं सीआईडी क्राइम विभाग में थी। सुप्रीम कोर्ट ने वह केस हमें सौंपने का फैसला किया। शायद इसलिए कि मैं एक महिला थी और लापता महिला का मामला था, केस मेरे पास आया। तो मैंने उसे ढूंढने का काम शुरू किया।
फिर सारा मामला शुरू हुआ। फिर यह और भी राजनीतिक हो गया। कौसर बी और सोहराबुद्दीन को सब लोग भूल गए।
प्रश्न) गृह मंत्री इसमें क्यों शामिल थे?
ए) क्योंकि उन्होंने यह आरोप लगाया कि यह गैरकानूनी तरीके से निर्देशित और गैरकानूनी हत्या थी। सोहराबुद्दीन और कौसर बी की हत्या हुई और जब आप जांच शुरू करते हैं तो सब कुछ सामने आ जाता है। कि यह गृह मंत्री के इशारे पर किया गया होगा। लेकिन कोई प्रत्यक्ष सबूत नहीं था। मैंने 13 पुलिस अधिकारियों को गिरफ्तार किया था, यह बहुत बड़ी संख्या थी, आप जानते हैं, यह विपरीत दिशा में काम करने जैसा था, राज्य के खिलाफ काम करने जैसा था, सबसे कठिन दौर था।
प्रश्न) क्या आप अपने ही लोगों के खिलाफ काम कर रहे हैं?
ए) हाँ।
प्र) लेकिन सरकार ने आप पर इतना दबाव डाला होगा?
ए) हां, सभी ने ऐसा किया, मेरे अपने सहकर्मियों ने भी। और आंतरिक मतभेद भी थे, लेकिन अंत में, मैं भी सोहराबुद्दीन से सहमत नहीं था, लेकिन कुछ तरीके होते हैं, आपको चीजों को कानूनी रूप से सही दिखाना होता है, कम से कम कागजों पर तो ऐसा ही लगता है।
प्र) वह आपके लिए बहुत ही मुश्किल समय रहा होगा?
ए) जी हां, सोहराबुद्दीन मामले में अधिकारियों को गिरफ्तार करने को लेकर मैं पूरी तरह आश्वस्त नहीं था। कौसर बी के मामले में मैं आश्वस्त था।
प्रश्न) क्या उस समय महामहिम को गिरफ्तार नहीं किया गया था?
ए) नहीं, मैंने उसे गिरफ्तार नहीं किया क्योंकि अगर आप अपने ही आदमियों को गिरफ्तार कर रहे हैं तो आप केवल सबूतों के आधार पर ही कार्रवाई करते हैं।
सवाल) लेकिन सीबीआई ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया?
ए) सीबीआई ने केवल गृह मंत्री और एक अन्य अधिकारी को गिरफ्तार किया। 13 लोगों को मैंने गिरफ्तार किया। उन्होंने किसी अन्य व्यक्ति को गिरफ्तार नहीं किया और न ही इसमें कोई अतिरिक्त सबूत जोड़ा है। उन्होंने गृह मंत्री को कानूनी रूप से कमजोर सबूतों के आधार पर गिरफ्तार किया, जबकि मैंने ऐसा नहीं किया।
कई लोगों का मानना है कि गीता जौहरी, जो शुरू में फर्जी मुठभेड़ मामले में अच्छा काम कर रही थीं, को उनके पति से जुड़े कुछ भ्रष्टाचार मामलों में ब्लैकमेल किया गया था। सीबीआई को सौंपे गए एक नोट में कहा गया था कि उनके पति अनिल, जो एक आईएफएस अधिकारी थे, ने जांच प्रक्रिया को अस्पष्ट करने और अमित शाह को इस मामले से बचाने में अहम भूमिका निभाई। लेकिन यह बात अब भी हैरान करने वाली है कि एक पुलिस अधिकारी, जो एक कुख्यात गैंगस्टर

के अड्डे में ऑटो में सवार होकर गई थी, को ब्लैकमेल के जरिए झुकने पर मजबूर किया जा सकता था। अमित शाह को बचाने के लिए सुनियोजित प्रयास, खासकर गीता जौहरी द्वारा सीबीआई के दबाव के बारे में लिखने के बाद, बहुत कुछ बयां करता है। संयोग से, सीबीआई द्वारा गीता जौहरी से दोबारा पूछताछ किए जाने से कुछ दिन पहले, राज्यसभा में तत्कालीन विपक्ष के नेता अरुण जेटली ने 27 सितंबर 2013 को तत्कालीन प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह को एक लंबा पत्र लिखा था। इस पत्र का यह अंश विशेष रूप से रोचक है:

अपनी घटती लोकप्रियता के मद्देनजर कांग्रेस की रणनीति स्पष्ट है। कांग्रेस भाजपा और नरेंद्र मोदी का राजनीतिक रूप से मुकाबला नहीं कर सकती। हार उनके सामने खड़ी है। जांच एजेंसियों का दुरुपयोग करके उन्होंने अब तक गुजरात के मुख्यमंत्री नरेंद्र मोदी, तत्कालीन गृह मंत्री और गुजरात राज्य के विधि, परिवहन एवं संसदीय कार्य मंत्री अमित शाह तथा भारतीय जनता पार्टी के महासचिव और अन्य महत्वपूर्ण भाजपा नेताओं को झूठे आरोपों में फंसाने के कई तरीके आजमाए हैं।

अरुण जेटली का यह पत्र डी.जी. वंजारा के पत्र के प्रकाशित होने के ठीक दो सप्ताह बाद आया है। वंजारा सोहराबुद्दीन और तुलसी प्रजापति के फर्जी मुठभेड़ मामलों में सात साल जेल में रहे और बाद में इशरत जहां के फर्जी मुठभेड़ मामले में आरोपी बने। उन्होंने अमित शाह पर विश्वासघात का आरोप लगाते हुए एक पत्र लिखा था। वंजारा ने लिखा कि शाह ने यह सुनिश्चित किया कि इस मामले में गिरफ्तार सभी पुलिसकर्मी जेल में सड़ते रहें, जबकि उन्होंने न्यायपालिका का दुरुपयोग करके खुद को मुसीबत से बचाए रखा। अपने पत्र में, वंजारा ने गिरीश सिंघल जैसे अधिकारियों की भावनाओं को संक्षेप में व्यक्त किया, जिन्होंने मोदी-शाह की जोड़ी पर 'इस्तेमाल करो और फेंक दो' की नीति का आरोप लगाया था। उन्होंने लिखा,

समय बीतने के साथ, मुझे एहसास हुआ कि यह सरकार न केवल हमारी सुरक्षा में दिलचस्पी नहीं रखती, बल्कि सीबीआई से खुद को बचाने और राजनीतिक लाभ प्राप्त करने के लिए मुझे और मेरे अधिकारियों को जेल में रखने के लिए गुपचुप तरीके से हर संभव प्रयास कर रही है। यह सर्वविदित है कि यह सरकार पिछले 12 वर्षों से गुजरात में मुठभेड़ मामलों की चर्चा को हवा देकर खूब राजनीतिक लाभ उठा रही है, जबकि जेल में बंद पुलिस अधिकारियों के भाग्य के प्रति उदासीन और निष्क्रिय बनी हुई है।

भारत के माननीय सर्वोच्च न्यायालय के प्रति पूर्ण आदर के साथ, मैं पूरी ईमानदारी से यह कहना चाहता हूँ कि श्री अमितभाई शाह की कानूनी और राजनीतिक साजिशों, षड्यंत्रों और दांव-पेचों के कारण ही शोहराबुद्दीन मुठभेड़ मामले और उसके बाद तुलसीराम प्रजापति मामले का मुकदमा गुजरात राज्य से बाहर नहीं जा सका। मैं स्पष्ट शब्दों में कहना चाहता हूँ कि श्री अमितभाई शाह की गंदी चालों के कारण यह सरकार दुर्भाग्यवश केवल अपने स्वार्थ के लिए ही काम चला रही है, ताकि वह हर दिशा में फलती-फूलती रहे, जबकि पुलिस अधिकारियों को धोखा देकर उन्हें डूबने और अप्राकृतिक मृत्यु मरने दे रही है। इतने लंबे समय तक मैंने अपनी गरिमामयी चुप्पी केवल इसलिए बनाए रखी है क्योंकि मुझे गुजरात के माननीय मुख्यमंत्री श्री नरेंद्रभाई मोदी पर अटूट विश्वास और सर्वोच्च आदर है, जिन्हें मैं भगवान के समान पूजता था। लेकिन मुझे यह कहते हुए

खेद है कि श्री अमितभाई शाह के बुरे प्रभाव के आगे मेरे ईश्वर कुछ नहीं कर सके। अमितभाई शाह ने उनकी आँखों और कानों पर कब्ज़ा कर लिया है और पिछले 12 वर्षों से बकरियों को कुत्तों में और कुत्तों को बकरियों में बदलकर उन्हें सफलतापूर्वक गुमराह कर रहे हैं। राज्य प्रशासन पर उनकी अपवित्र पकड़ इतनी मजबूत है कि वे लगभग परोक्ष रूप से गुजरात सरकार चला रहे हैं।

इस पत्र ने समाचारों में खूब सुर्खियां बटोरीं, क्योंकि वही व्यक्ति जो कभी नरेंद्र मोदी और अमित शाह दोनों का इतना करीबी था, अब उन पर साजिश रचने का आरोप लगा रहा था और आने वाले दिनों में और भी खुलासे करने का वादा कर रहा था। कुछ ही दिनों में एक और फरार पुलिस अधिकारी, पूर्व महानिदेशक पी.पी. पांडे, जो इशरत जहां मामले में आरोपी था, सामने आया और उसने भी इस मामले पर मीडिया से बात करने का वादा किया।

दिल्ली में भाजपा के सत्ता में आने के कुछ ही महीनों के भीतर डी.जी. वंजारा को जमानत मिल गई और गुजरात में उनका हीरो की तरह स्वागत किया गया। सोहराबुद्दीन मामले में मुख्य आरोपियों में से दो के रूप में गिरफ्तार किए गए राजकुमार पांडियन और अभय चुडासमा जैसे अन्य अधिकारी अब जमानत पर बाहर हैं और उन्हें गुजरात पुलिस ने बहाल कर दिया है। इस साल की शुरुआत में सीबीआई ने गीता जौहरी के खिलाफ सभी आरोप हटा दिए और उन्हें गुजरात पुलिस का डीजीपी बना दिया गया। गुजरात में सभी मामलों में न्याय की प्रक्रिया उल्टी दिशा में घूमती हुई प्रतीत होती है।

उनका पंड्या

2008 में मुंबई में तहलका के लिए रिपोर्टिंग करते समय मेरी मुलाकात मुंबई मुठभेड़ मामले के पुलिस अधिकारी दया नायक से कई बार हुई थी। दया नायक एक अनोखे व्यक्तित्व के धनी हैं और आखिरी बार जब मैंने उनसे संपर्क किया तो उन्होंने मुझसे बात करने से इनकार कर दिया क्योंकि मैंने गुजरात के सादिक जमाल फर्जी मुठभेड़ मामले में उनकी कथित संलिप्तता का जिक्र किया था। सीबीआई ने उनसे और प्रदीप शर्मा से गहन पूछताछ की थी, जिसके बाद दोनों को निलंबित कर दिया गया था। एक समय दया नायक और प्रदीप शर्मा मुंबई के सबसे चर्चित पुलिस अधिकारियों में से थे। फिल्म निर्माता राम गोपाल वर्मा ने तो इन दोनों पुलिस अधिकारियों पर 'अब तक छप्पन' नाम की फिल्म भी बनाई थी। उनकी खूब प्रशंसा हुई और वे समाज में चहेते थे, जब तक कि वे अंततः कानून के शिकंजे में नहीं आ गए।

दया के मीडिया में कई दोस्त थे, या यूं कहें कि वह मीडिया के साथ बहुत अच्छे से घुलमिल गए थे। वह लोखंडवाला मार्केट के कोस्टा कैफे या कैफे कॉफी डे में अक्सर जाते थे, जहां जिम के उनके दोस्त आकर उनसे मिलते थे। नायक को अपनी रिवॉल्वर दिखाना बहुत पसंद था, जो हमेशा उनकी पैंट में छिपी रहती थी। 2008 में उनसे हुई एक मुलाकात के दौरान, जब मैं और मेरे सहयोगी महाराष्ट्र के कठोर आतंकवाद विरोधी कानून, एम.सी.ओ.सी.ए. के दुरुपयोग पर एक श्रृंखला पर काम कर रहे थे, नायक ने कुछ ऐसा कहा जो मुझे हमेशा याद रहेगा। उन्होंने कहा कि देश की सबसे बड़ी राजनीतिक हत्या गुजरात में हुई थी, मोदी के कट्टर प्रतिद्वंद्वी हरेन पांड्या की। मैंने उनसे पूछा कि क्या उनके पास इसका कोई सबूत है? उन्होंने कहा, 'आप

पत्रकार हैं, जांच करना आपका काम है।' हमने बात वहीं खत्म कर दी।

घर लौटने के बाद मैंने हरेन पांड्या हत्याकांड से जुड़ी हर संभव खबर पढ़ने की कोशिश की। पांड्या की हत्या कथित मुस्लिम पुरुषों द्वारा किए जाने के बाद से ही संदेह का माहौल बना हुआ था। लेकिन पांड्या के पिता विट्ठल पांड्या अपनी अंतिम सांस तक यही कहते रहे कि उनके बेटे की हत्या गुजरात में उनके राजनीतिक प्रतिद्वंद्वियों ने की थी। उनकी पत्नी जागृति पांड्या, जिन्होंने गुजरात से चुनाव लड़ा था, ने भी कहा था कि पांड्या की हत्या में मुख्यमंत्री और अमित शाह का हाथ था। लेकिन उनके इस दावे को शोक संतप्त परिवार के सदस्यों की पीड़ा की अभिव्यक्ति के रूप में देखा गया।

इस संदर्भ में मुझे जो एक कहानी स्पष्ट रूप से याद है, वह संयोगवश वरिष्ठ पत्रकार शंकरशन ठाकुर द्वारा लिखित एक खोजी रिपोर्ट थी। मैं यहां शंकरशन की उत्कृष्ट रिपोर्टिंग से प्राप्त कई निष्कर्षों का संक्षेप में उल्लेख कर रहा हूं।

एकमात्र चश्मदीद गवाह यादराम का कहना है कि जो कुछ उन्होंने देखा उससे वे इतने स्तब्ध थे कि एक घंटे तक घटनास्थल से हिल भी नहीं पाए। जब वे हिले तो उन्होंने पुलिस को नहीं बल्कि अपने साथी, स्थानीय व्यापारी स्नेहल अदेनवाला को सूचना दी। अदेनवाला ने भी पुलिस को सूचना नहीं दी, हालांकि वे जानते थे कि लॉ गार्डन्स पार्किंग में मारुति 800 में मृत पड़ा व्यक्ति हरेन पंड्या है। उन्होंने पंड्या के सहयोगी प्रकाश शाह को फोन किया और उन्हें बताया। शाह ने भी पुलिस को फोन नहीं किया। उन्होंने पंड्या के सचिव नीलेश भट्ट को फोन किया, जो पंड्या के घर पर थे और अपने बॉस के देर से लौटने की चिंता में डूबे हुए थे। तभी भट्ट लॉ गार्डन्स पहुंचे, कार का पता लगाया और उसे खोलकर देखा तो पाया कि उनके बॉस को कई बार गोली मारी गई थी। यह घटना रात के दस बजकर दस मिनट के आसपास की थी। गुजरात के पूर्व गृह राज्य मंत्री दो घंटे से अधिक समय से शहर के बीचोंबीच एक कार में मृत पड़े थे।

इसी बीच, एलिसब्रिज पुलिस को कंट्रोल रूम से एक और कॉल आती है - पता लगाओ लॉ गार्डन्स में क्या हो रहा है, वहाँ हंगामा है, अफवाहें फैल रही हैं। अब एक और सब-इंस्पेक्टर, वाई.ए. शेख, रवाना होते हैं। लॉ गार्डन्स के रास्ते में, शेख को कंट्रोल रूम से एक और कॉल आती है - परिमल गार्डन्स जाओ, लॉ गार्डन्स नहीं; वह अपना रास्ता बदल लेते हैं। 10:50 पर, उन्हें एक और कॉल आती है, इस बार लॉ गार्डन्स जाने के लिए। वह वहाँ 10:54 पर पहुँचते हैं, पांड्या को गोली लगने के लगभग तीन घंटे बाद। और क्या हुआ? शेख के साथी, सब-इंस्पेक्टर नायक, जो उनसे पहले लॉ गार्डन्स के लिए निकले थे, अभी तक घटनास्थल पर नहीं पहुँचे हैं। उस सुबह स्थानीय पुलिस को कौन आदेश दे रहा था? दस मिनट से भी कम दूरी पर स्थित घटनास्थल पर पहुँचने में इतनी देरी क्यों?

उसी दोपहर वीएस अस्पताल में किए गए पोस्टमार्टम से पता चला कि पंड्या को सात गोलियां लगी थीं। ये गोलियां पांच थीं। इनमें से पांच घाव 0.8 सेंटीमीटर व्यास के हैं और दो 0.5 सेंटीमीटर व्यास के हैं। वैज्ञानिक रूप से यह संभव है कि एक ही बंदूक से अलग-अलग आकार के घाव हो सकते हैं, क्योंकि सतह तनाव और प्रतिरोध के कारण ऐसा संभव है। यह भी संभव है कि पांच गोलियों से सात घाव हो जाएं, क्योंकि गोलियां शरीर के अंगों से होकर गुजर सकती हैं।

लेकिन मामले की बारीकी से जांच करने वाले स्वतंत्र विशेषज्ञों का कहना है कि इस मामले में ऐसा होना बहुत ही असंभव है। दूसरे शब्दों में, दो गोलियों का पता नहीं चल पाया है।

पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट में जिस गोली से पांचवीं चोट लगी, वह पांड्या के अंडकोष के निचले हिस्से में लगी और ऊपर की ओर उनके सीने में घुस गई, जिससे उनकी पेट की दीवार में छेद हो गया। क्या किसी कार में बैठे व्यक्ति को, और वह भी पांड्या जैसे छह फुट से अधिक लंबे और भारी-भरकम व्यक्ति को, एक छोटी मारुति 800 में, अंडकोष में गोली लगना संभव है? पांड्या की तरह, अगर किसी व्यक्ति को अंडकोष में गोली लगती है, तो बहुत अधिक खून बहेगा; अंडकोष रक्त वाहिकाओं का एक जटिल जाल है जो शरीर के तापमान को नियंत्रित करता है। क्या पांड्या को खून बहा? हाँ। क्या कार में खून के निशान हैं? नहीं। पांड्या को अंडकोष, गर्दन, दो बार सीने और एक बार बांह में गोली लगी थी। कार पूरी तरह से खून से लथपथ होनी चाहिए थी, या कम से कम उनकी सीट तो होनी ही चाहिए थी। फिर भी, फोरेंसिक रिपोर्ट में वाहन में खून का कोई सबूत नहीं मिला, सिवाय आगे की यात्री सीट पर एक धब्बे और चाबी के गुच्छे पर एक धब्बे के (केंद्रीय फोरेंसिक विज्ञान प्रयोगशाला रिपोर्ट संख्या CFSL2003/F-0232)

फोरेंसिक रिपोर्ट में भी पांड्या की कार के अंदर किसी भी प्रकार के गोली के अवशेष दर्ज नहीं किए गए हैं (गुजरात राज्य की मोबाइल फोरेंसिक साइंस लेबोरेटरी की रिपोर्ट)। उन पर पांच से अधिक गोलियां चलाई गईं, जाहिर तौर पर जब वे कार में बैठे थे। फिर भी गोली के अवशेष नहीं मिले?

क्या हरेन पंड्या को उनकी कार में ही गोली मारी गई थी? या हत्या कहीं और हुई थी और बाद में उनका शव कार में रखा गया था? उस सुबह घर से निकलने के बाद पंड्या कहाँ गए थे? कुछ सुराग थे जिनसे सच्चाई का पता चल सकता था, लेकिन वे या तो गायब हो गए हैं या अनुपलब्ध हो गए हैं।

लॉ गार्डन्स में जब पांड्या का शव कार से निकाला गया, तो उन्होंने जूते पहने हुए थे; पोस्टमार्टम के लिए ले जाते समय तक जूते गायब हो चुके थे, उनका कोई रिकॉर्ड नहीं है। जूतों में पांड्या के उस सुबह कहाँ गए थे, इसके बारे में महत्वपूर्ण सुराग हो सकते हैं।

पांड्या का ग्रे रंग का फ्लिपटॉप सैमसंग मोबाइल फोन पुलिस ने कार से बरामद किया। पुलिस ने या तो उस दिन पांड्या के फोन के कॉल डेटा रिकॉर्ड की जांच नहीं की या फिर उन्हें छुपा रही है। इनसे पता चल सकता था कि पांड्या ने किसे कॉल किया था या उन्हें किसने कॉल किया था; ये कॉल सच्चाई तक पहुंचने में अहम कड़ी साबित हो सकती थीं। लेकिन रिकॉर्ड मौजूद नहीं हैं। जब पांड्या के मोबाइल सेवा प्रदाता, हच से रिकॉर्ड मांगे गए, तो उन्होंने जनवरी और फरवरी 2003 के रिकॉर्ड उपलब्ध कराए। मार्च 2003 के रिकॉर्ड के लिए उन्होंने एक अजीब बहाना बनाया: हच ने कहा कि रिकॉर्ड बहुत पुराने हैं। लेकिन जनवरी और फरवरी तो मार्च से पहले आते हैं, ऐसा तो निश्चित ही है।

क्या इस मामले में आरोपी मुफ्ती सुफियान का अजीबोगरीब मामला उसी साजिश का हिस्सा हो सकता है? सुफियान एक युवा मौलवी हैं जिन्होंने अहमदाबाद की लाल मस्जिद में भड़काऊ भाषण देकर रातोंरात नाम कमा लिया था। यह ज्ञात है कि 2002 की हिंसा के बाद वे और भी

कट्टरपंथी हो गए थे और नमाज के बाद अपने प्रवचनों में सांप्रदायिक हिंसा को भड़काते थे। यह भी ज्ञात है कि उनके अहमदाबाद के अवैध शराब के धंधे से जुड़े गिरोहों से संबंध थे। सुफियान पर पांड्या की हत्या के लिए असगर अली को काम पर रखने में भूमिका निभाने का आरोप है। हत्या के एक हफ्ते के भीतर, जब वे कथित तौर पर पुलिस की निगरानी में थे, सुफियान देश से भाग गए। कहाँ गए? कोई नहीं जानता। बांग्लादेश, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, यमन, कोई निश्चित रूप से नहीं जानता। सीबीआई ने सुफियान को अपनी वेबसाइट पर अपराधियों की सूची में शामिल कर लिया और इंटरपोल से उनके लिए लाल निशाने का नोटिस जारी करवाया। कागजों पर, वे पांड्या की हत्या की साजिश के आरोपी वांछित व्यक्ति थे। लेकिन सूफ़ियान के रहस्यमय ढंग से भाग निकलने के लगभग एक साल बाद, उसकी पत्नी और बच्चे भी गायब हो गए। एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी का कहना है, 'उन पर कड़ी निगरानी रखनी चाहिए थी, वे सूफ़ियान के ठिकाने के बारे में हमारे पास आखिरी सुराग थे,' फिर भी वे बच निकले। यह कैसे संभव हो सकता है? क्या किसी ने उनकी मदद की? क्या सूफ़ियान के पास कोई गुप्त रहस्य थे? क्या कोई समझौता हुआ था?

मेरी पहली मुलाकात जागृति पंड्या से 2010 में हुई थी, मेरे स्टिंग ऑपरेशन शुरू करने से कुछ समय पहले। उस समय मैं सोहराबुद्दीन मुठभेड़ों की जांच कर रहा था। मैंने उन्हें सिर्फ टीवी पर उनके पति की मृत्यु के बाद निष्पक्ष जांच की मांग करती हुई एक जोशीली महिला के रूप में देखा था। वह अहमदाबाद के एक उच्च-मध्यमवर्गीय इलाके में अपने दो बेटों और पिता के साथ रहती थीं। जागृतिबेन, या जागृतिजी, जैसा कि मैंने उन्हें बाद में बुलाना शुरू किया, उनमें कुछ बहुत ही साहसी बात थी। आज मैं उन्हें एक प्रिय मित्र कह सकता हूँ, जिनके अपने पति के हत्यारों को ढूंढने के साहसी संघर्ष के लिए तालियों की गड़गड़ाहट होनी चाहिए। हरेन पंड्या आरएसएस, एल.के. आडवाणी और कई अन्य भाजपा नेताओं के साथ-साथ गुजरात के विभिन्न पुलिस अधिकारियों के भी चहेते थे। गुजरात दंगों में उनकी भूमिका कथित तौर पर विवादास्पद है, लेकिन यह माना जाता है कि मुस्लिम समुदाय के कई लोग भी उन्हें पसंद करते थे।

जागृति जी के मन में मुसलमानों के प्रति गहरी कड़वाहट थी, क्योंकि उन्हीं में से एक मुसलमान ने कथित तौर पर उनके पति की हत्या कर दी थी। संयोगवश, उन्होंने यह मान लिया था कि राणा एक हिंदू नाम है। मुझे उन्हें सही करना बहुत शर्मनाक लगा और मैंने तय किया कि जब वे बाद में मेरे किसी लेख में मेरा उपनाम पढ़ेंगी, तब उन्हें खुद पता चल जाएगा कि मेरा धर्म क्या है। जब भी वे अपने पति के हत्यारों के बारे में बात करतीं, तो मुसलमानों को 'ये लोग' कहकर संबोधित करतीं और कभी-कभी उन्हें 'हिंसक लोग' भी कह देतीं। लेकिन जागृतिबेन से मिलते ही, उनका यह दृढ़ विश्वास कि मुस्लिम लड़कों का किसी शक्तिशाली व्यक्ति ने 'इस्तेमाल' किया था, मुझे हैरान कर दिया। ये वो महिला थीं जिन्होंने आठ साल पहले अपने पति को खो दिया था। उनके छोटे बेटे को अपने पिता के अंतिम संस्कार की भी लगभग कोई याद नहीं थी। फिर भी, अपने बेटों को अनुशासित परवरिश दिलाने के साथ-साथ, उन्होंने न्याय के लिए अपनी लड़ाई नहीं छोड़ी, हालांकि इस बात का पूरा ध्यान रखा कि इसका उनके बच्चों पर कोई बुरा असर न पड़े। उनका छोटा बेटा राज्य स्तरीय खिलाड़ी है और बड़ा बेटा एक निजी कंपनी में काम करता है।

दोनों बिना किसी संदेह के अपनी माँ के साथ चट्टान की तरह खड़े रहे, क्योंकि उन्हें पूरा विश्वास था कि उनके पिता की मृत्यु के पीछे एक बड़ी साजिश थी। जागृति जी ने मुझे जो फोन कॉल रिकॉर्ड दिए थे और मुफ्ती सूफियान और उनके परिवार के बारे में जो जानकारी दी थी, उसके आधार पर उनके पति की मृत्यु के बारे में उनके कुछ महत्वपूर्ण प्रश्न थे।

उन्होंने शंकरशन ठाकुर की विस्तृत रिपोर्ट (जिसका उल्लेख ऊपर किया गया है और जिसका अंश उद्धृत किया गया है) का भी मेरे सामने जिक्र किया था। अमित शाह को जेल भेजे जाने के ठीक बाद और तुलसी प्रजापति (जो फर्जी मुठभेड़ में मारी गई थीं) के पास पंड्या की हत्या से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी होने के खुलासे के बाद मैं उनसे मिला था। अक्टूबर 2011 में, मेरे स्टिंग ऑपरेशन के बाद दिल्ली लौटने के कुछ महीनों बाद, मैंने पंड्या की हत्या के बारे में एक लेख लिखा जिसमें मैंने कुछ महत्वपूर्ण प्रश्न पूछे थे:

सूफ़ियान के पिता अहमदाबाद क्राइम ब्रांच में कार्यरत चुडासमा की प्रशंसा क्यों करते हैं? अगर उनके पिता की बात मानें तो चुडासमा ने परिवार को यह आश्वासन क्यों दिया था कि उन्हें कोई नुकसान नहीं होगा? क्राइम ब्रांच द्वारा प्रारंभिक जांच सौंपी गई सीबीआई का दावा है कि उसके पास पुख्ता सबूत थे, लेकिन एक तर्कसंगत सवाल यह उठता है कि मामले की जांच कर रही सीबीआई टीम ने सूफ़ियान का पता लगाने के लिए अनुरोध पत्र क्यों नहीं भेजा?

दूसरा, सीबीआई के जांच अधिकारी का दावा है कि मार्च 2003 के पांड्या के कॉल रिकॉर्ड नहीं मिल पाए, जबकि पिछले दो महीनों के रिकॉर्ड उपलब्ध कराए गए थे। इन रिकॉर्डों की एक प्रति TEHELKA के पास है, जिनसे पता चलता है कि अहमदाबाद की एक महिला पत्रकार ने 40 कॉल किए थे। हैरानी की बात यह है कि न तो सीबीआई और न ही पुलिस ने उससे पूछताछ की।

तीसरा, मुख्य गवाह अनिल यद्रम, जो लॉ गार्डन के पास एक ठेला चलाते हैं और कथित तौर पर हत्या के प्रत्यक्षदर्शी थे, ने विरोधाभासी बयान दिए हैं। उन्होंने पुलिस को बताया कि वे इतने भ्रमित थे कि प्रतिक्रिया नहीं दे सके, लेकिन एक घंटे बाद उन्होंने अपने ठेले के मालिक को फोन किया, जिसने पांड्या के सहयोगी को फोन किया - लेकिन पुलिस को नहीं। जब TEHELKA ने यद्रम से मुलाकात की, तो उन्होंने तीनों दिन तीन विरोधाभासी बयान दिए। पहले दिन उन्होंने कहा कि अली बाइक पर आया था; दूसरे दिन उन्होंने कहा कि उन्होंने उसे कार की ओर जाते देखा; तीसरे दिन उन्हें घटनाक्रम याद नहीं था। चौथा, फोरेंसिक रिपोर्ट के अनुसार, पांड्या के कुर्ते में छह छेद थे। लेकिन उनके शरीर में केवल पांच गोलियां मिलीं। अगर वह स्टीयरिंग व्हील के पीछे बैठा था और दाहिनी खिड़की से गोली चलाई गई थी, जो आंशिक रूप से खुली थी, तो उसके अंडकोष में कोई चोट नहीं लगनी चाहिए थी। अभियोजन पक्ष ने यह स्पष्टीकरण दिया और न्यायाधीश ने इसे स्वीकार किया कि वह यात्री सीट पर एक तरफ गिर गया था, लेकिन यह असंभव लगता है। और पांचवीं बात, पुलिस नियंत्रण कक्ष के लॉग में दर्ज एफआईआर से भ्रम या देरी का पता चलता है। इन खामियों और गवाहों के बदलते बयानों को देखते हुए, यह स्वाभाविक ही था कि उच्च न्यायालय ने पिछले महीने एक चौंकाने वाले फैसले में इस मामले के सभी 12 आरोपियों को बरी कर दिया और यह भी फैसला सुनाया कि इस बात का कोई सबूत नहीं है कि अली ने पंड्या को गोली मारी थी।

बाद में मेरी जागृतिबेन से कई बार मुलाकात हुई; हम साथ में ड्राइव पर जाते या डिनर के लिए बाहर जाते। उन्हें एक भरोसेमंद साथी मिल गया था, और मुझे एक ऐसी दोस्त मिल गई थी जिसने मुझे सच्चाई का पता लगाने की ताकत दी। मुझे याद है एक बार जागृतिबेन से उनके पति की हत्या के मामले में चार्जशीट दाखिल करवाने के लिए मुलाकात हुई थी। रमज़ान का महीना था और मैं रोज़ा रख रही थी। घर में दाखिल होते ही उन्होंने मुझे नींबू पानी दिया। मैंने मना कर दिया। उन्होंने मुझे चाय बनाने की पेशकश की। 'नहीं जागृतिबेन, रमज़ान है ना, मेरा रोज़ा है। कुछ खा पी नहीं सकती,' मैंने उनसे कहा। तब वह हैरान रह गईं और जैसे-तैसे कुछ शब्द बोल पाईं। 'आप मुसलमान हो? मुझे पता नहीं था,' उन्होंने कहा, मानो उन्हें इस बात का पछतावा हो कि उन्होंने मेरे सामने मेरे समुदाय के बारे में इतनी बार अपमानजनक शब्द इस्तेमाल किए थे। 'कोई बात नहीं, आपकी जगह मैं होती तो मुझसे भी भूल हो सकती थी। आपके साथ जो हुआ है वो कोई मुआफ़ नहीं कर सकता,' मैंने उसे आश्वस्त किया।

वह मेरे साथ बैठकर चार्जशीट और कॉल रिकॉर्ड के पन्ने पलटती रही और मेरे सवालों के जवाब लगन से देती रही।

उन्होंने बताया कि उनके पति ने 2002 के गुजरात नरसंहार की वी.आर. कृष्णा अय्यर के नेतृत्व वाली नागरिक जांच समिति के समक्ष गवाही दी थी। यह गवाही गुप्त रूप से आयोजित की गई थी, लेकिन उनका मानना था कि मोदी को इसकी जानकारी मिल गई थी। उन्होंने जोर देकर कहा कि मोदी के हरेन के साथ प्रतिष्ठा संबंधी कई मुद्दे थे, इसीलिए उन्होंने भाजपा के उच्च कमान की अवहेलना की और उनके पति को एलिसब्रिज सीट खाली करने के लिए मजबूर किया। उन्होंने कहा कि पांड्या नरेंद्र मोदी के लिए एक राजनीतिक कांटा बन गए थे क्योंकि वे हमेशा आरएसएस के करीबी रहे थे और उनका संरक्षण प्राप्त करते थे।

जब मैं जाने की तैयारी करने लगा, तो उसने मुझसे पूछा कि मैं अहमदाबाद में कहाँ ठहर रहा हूँ। उसी दिन शाम लगभग 6:30 बजे, इफ्तार (रोज़ा खोलने) से लगभग 30 मिनट पहले, उसने मुझे बुलाया। वह मेरे होटल के बाहर खड़ी थी, मेरा इंतज़ार कर रही थी ताकि मुझे किसी ऐसे भोजनालय में ले जा सके जहाँ मैं अपना रोज़ा खोल सकूँ।

उस दिन से जागृतिबेन मेरी बहुत रक्षा करने लगीं। उन्होंने मुझसे कहा, "मैं इस स्थिति को जानती हूँ। तुम मेरे पति के बारे में सच्चाई जानने के लिए इतनी मेहनत कर रही हो। तुम्हारी रक्षा करना मेरा कर्तव्य है, खासकर तुम्हारे उपनाम को देखते हुए।"

हरेन पंड्या मामले की जांच में बहुत सारे अधिकारी शामिल थे। सीबीआई ने हत्या के कुछ ही दिनों के भीतर मामला अपने हाथ में ले लिया था और प्रोटोकॉल के अनुसार एफआईआर तैयार करके गुजरात पुलिस ने उस पर हस्ताक्षर किए थे। मैंने एफआईआर पढ़ी—जांच अधिकारी वाई.ए. शेख नाम के एक इंस्पेक्टर थे (जिनका जिक्र ऊपर समाचार रिपोर्ट में भी है)।

संयोगवश वे वी.एल. सोलंकी के मित्र थे (जिनका उल्लेख गीता जौहरी के संदर्भ में पहले किया जा चुका है)।

शेख आगंतुकों से नहीं मिलते थे और मीडियाकर्मियों से तो बिल्कुल भी नहीं। मैंने अभी तक अपना स्टिंग ऑपरेशन शुरू नहीं किया था और शाह की गिरफ्तारी के बाद अहमदाबाद में अपना

शोध कार्य कर रहा था। मैं वी.एल. सोलंकी से दो बार मिला, जिन्होंने मेरे बारे में जानकारी जुटाने के बाद मुझे अपने घर आने को कहा। उनके घर के बाहर एक पुलिस जीप खड़ी थी जिसमें पुलिस कांस्टेबल मौजूद थे, जिन्होंने गीता जौहरी के खिलाफ बयान देने के बाद उन्हें अतिरिक्त सुरक्षा प्रदान की थी।

सोलंकी सीबीआई से कही अपनी हर बात पर अडिग रहे। और फिर मेरे जाने से ठीक पहले मैंने उनसे यूं ही पूछ लिया कि क्या वो शेख नाम के किसी अधिकारी को जानते हैं। उन्होंने तीखी प्रतिक्रिया देते हुए कहा, 'तुम उनसे क्यों मिलना चाहते हो या उनके बारे में क्यों जानना चाहते हो?' मैंने नरमी से जवाब दिया, 'बस एक मामले के सिलसिले में उनसे मिलने का सोचा था।' वो मुस्कुराए और फिर मुझे घर से बाहर छोड़ते हुए बोले, 'रहने दो बेन, वो आपसे नहीं मिलेगा, और आप ये सब में मत पड़ो।'

पंड्या मामले में एफआईआर दर्ज कराने के कारण शेख अपने सहयोगियों और राज्य सरकार से डरा हुआ था। पंड्या के पिता की शिकायत के बाद मामले को सीबीआई को सौंपे जाने से पहले वह जांच में शामिल था। पंड्या के पिता ने आरोप लगाया था कि मामले में और भी कई बातें हैं जिन्हें दबाया जा रहा है।

गुजरात में एक वकील थे जो शेख को अच्छी तरह जानते थे और जिनसे शेख अक्सर सलाह लेने जाते थे। मैंने उनसे शेख से एक मुलाकात का इंतजाम करने का अनुरोध किया। मैंने उनसे कहा कि जरूरत पड़ने पर धर्म का सहारा लें और बताएं कि मैं एक मुसलमान हूं और शेख जैसे पुलिसकर्मियों के प्रति सहानुभूति रखता हूं जो मौजूदा व्यवस्था में घुटन महसूस कर रहे हैं।

उस समय मैं खानपुर के एम्बेसडर होटल में ठहरा हुआ था, जो एक मुस्लिम बहुल इलाका था। रमज़ान के दौरान हर सुबह और शाम स्थानीय मस्जिद से आने वाली अज़ान मुझे सेहरी और इफ़्तार करने में मदद करती थी। एम्बेसडर होटल एक सिंधी व्यापारी का था। एम्बेसडर के ठीक सामने एक रेस्तरां था जिसे एक मुस्लिम चलाता था और समुदाय के अन्य लोग रोज़ा खोलने के तुरंत बाद चाय और नाश्ते के लिए अक्सर वहाँ जाते थे।

यही वह जगह थी जहाँ शेख मुझसे पहली बार मिलने के लिए राजी हुए थे। मैंने अपना परिचय दिया और उन्हें बताया कि मैं वही पत्रकार हूँ जिसने सोहराबुद्दीन और तुलसी प्रजापति मामलों में सबूत दिए थे, जिनकी वजह से अमित शाह को जेल जाना पड़ा था। उन्होंने कहा कि मुझे कुछ समझाने की ज़रूरत नहीं है, क्योंकि पूरा गुजरात राणा अय्यूब नाम के एक व्यक्ति को जानता है। मैं हँस पड़ा।

Sheikh appeared very apprehensive. I reassured him that I was a devout, practising Muslim and how much I felt for those who had been killed in the riots. He responded meekly, ‘Aap Tehelka waale ho, dar lagta hai aap logon se baat karna, pata nahi kya record kar loge.’

मैंने उससे मेरी डायरी और मेरा बैग देखने को कहा, तो वह शर्मिंदा होकर हंस पड़ा। मैंने उससे दोबारा मिलने का प्रस्ताव रखा और अगले पूरे सप्ताह उससे कोई संपर्क नहीं किया।

यह कारगर साबित हुआ; अगले हफ्ते मैं शेख से फिर मिली, इस बार उसका भरोसा तोड़ने के

लिए। इसने मुझे अंदर से तोड़ दिया, अपराधबोध ने मुझे मार डाला। वह जानता था कि मैं कौन हूँ। मैं राणा अय्यूब थी, वह पत्रकार जो सारी जानकारी गोपनीय रखती थी। लेकिन यहाँ एक ऐसा आदमी था जो शायद सच जानता था। पांड्या की हत्या को 10 साल हो चुके थे और मामले में कोई प्रगति होने की उम्मीद नहीं थी। मैंने अपना जासूसी कैमरा ले जाने और उसकी बातचीत रिकॉर्ड करने के बारे में सोचा, लेकिन इसका इस्तेमाल तभी करने का सोचा जब कोई और रास्ता न बचे। शेख से मुलाकात के बाद मैंने सबूत का वह एक टुकड़ा ढूंढने के लिए हर संभव कोशिश की। मैं मुफ्ती सूफियान के घर भी गई, लेकिन वे सिर्फ पुलिस की तारीफ करते रहे। उन्हें साफ तौर पर अच्छी तरह से सिखाया-पढ़ाया गया था।

अगली बार जब हमारी मुलाकात हुई तो शेख ने खुलकर बात की।

ए) शुरू करने से पहले, मैं आपको एक बात बता दूं। आईबी आप पर नज़र रख रहा है। आईबी में सर्वोच्च अधिकारी कौन है?

प्रश्न) स्टेट आईबी या सेंट्रल आईबी?

ए) स्टेट आईबी। उन्होंने मुझे बताया कि आप मुझसे मिलने आए थे। उन्हें पता चल गया है कि आप मुझसे मिलने आए थे, इसलिए उन्होंने मुझे सावधान रहने को कहा है। यह उनका काम है... इसलिए मैं आपको सावधान रहने के लिए कह रहा हूँ।

प्र) लेकिन वे मेरे खिलाफ क्यों होंगे?

ए) आप जानते हैं कि यह हरेन पांड्या मामला ज्वालामुखी की तरह है। एक बार सच्चाई सामने आ गई तो मोदी घर लौटेंगे। उन्हें जेल होगी, वे घर नहीं लौटेंगे। वे जेल में ही रहेंगे। देखिए, जागृति पांड्या द्वारा हरेन पांड्या मामले में आज़म खान के बयान की जांच की अपील करने के दो दिन बाद ही उदयपुर में उन पर गोली चलाई गई। वे बच गए, इसलिए उन्हें धमकाया गया और उन पर राजनीतिक दबाव डाला गया।

सवाल) लेकिन मुझे वाकई जिज्ञासा है। आईबी को मेरे बारे में कैसे पता चला?

ए) महोदया, क्योंकि आईबी श्री मोदी के लिए काम करता है।

अनिल यद्रम, गवाह को आप डंक क्यों नहीं मार देते?

प्रश्न) लेकिन क्यों, वह क्या कहेगा?

ए) अरे, वह पूरी कहानी बताएगा, कि सबसे पहले उससे किसने संपर्क किया, उसे क्या पता था और उसे क्या कहने के लिए कहा गया था।

इस मामले में चुडासमा भी शामिल था। वह कई अपराधियों के साथ मिलीभगत करता है।

चुडासमा और सभी अधिकारी बरोट जैसे निरीक्षकों के साथ मिलकर यह सब कर रहे हैं। बरोट एक निचले स्तर का निरीक्षक है, वही सारे कागजी काम करता है।

प्रश्न) गवाह अनिल यद्रम ने गलत बयान क्यों दिया?

ए) महोदया, उन्होंने हिरासत में रहते हुए उसे पढ़ाया-लिखाया। हत्या से पहले असगर अली हिरासत में था, इसलिए उन्होंने उसे पढ़ाया-लिखाया।

श्री पांड्या की हत्या के बाद वे असगर अली को फंसाना चाहते थे और उन्हें एक गवाह की जरूरत थी।

सवाल) उन्हें असगर को हिरासत में क्यों रखना पड़ा?
ए) उन्हें सारा दोष किसी मुस्लिम गुर्गे पर डालना था। वह गैरकानूनी हिरासत में था। बाद में वह अपने बचाव में क्या कहेगा?
और इसके लिए आपको असगर अली के कबूलनामे की जरूरत नहीं है। उन्हें सिर्फ सबूत चाहिए।
प्रश्न) तो क्या आप यह कह रहे हैं कि तरुण बारोट, चुडासमा और वंजारा इस मामले में शामिल थे?
ए) हाँ।
कन्हैया ने बस इतना बताया कि वह कार में जा रहा था और उसने हरेन पंड्या को कार में लेटे हुए देखा।
सीबीआई अधिकारी सुशील गुप्ता ने गुजरात पुलिस की मनगढ़ंत कहानी का समर्थन किया था। गुप्ता ने सीबीआई से इस्तीफा दे दिया और अब वे सुप्रीम कोर्ट में वकील हैं। वे रिलायंस के लिए काम करते हैं। उनसे पूछिए कि उन्होंने सीबीआई से इस्तीफा क्यों दिया। वे सुप्रीम कोर्ट में जज हैं। उनसे मिलिए।
प्रश्न) तो सीबीआई ने अपनी जांच नहीं की?
ए) इसने सुलह कर ली। इसने गुजरात पुलिस अधिकारियों द्वारा दिए गए पूरे सिद्धांत को सही मान लिया।
प्रश्न) क्या यह राजनीतिक हत्या है?
ए) इसमें सभी लोग शामिल थे। आडवाणी के कहने पर ही यह मामला सीबीआई को सौंपा गया था। क्योंकि वह नरेंद्र मोदी के मार्गदर्शक थे। इसलिए उन्हें बरी करने के लिए, मेरा मतलब है, लोग स्थानीय पुलिस की कहानी पर विश्वास नहीं करेंगे, लेकिन सीबीआई की कहानी पर विश्वास करेंगे।
मुफ्ती बहुत बाद में भागा।
प्र) इसमें किसकी भूमिका थी? बारोट की या वंजारा की?
ए) तीनों।
बरोट कहीं और था और चुडासमा को प्रतिनियुक्ति पर लाया गया था। उन्होंने चुडासमा को पकड़ लिया था। वह सरकार के लिए काम करता है। इस मुठभेड़ में पोरबंदर का संबंध है। यह एक अंधा मामला है। उन्होंने असगर अली और गवाह को फंसा दिया है। जांच क्राइम ब्रांच ने की थी और किसी ने भी उस जांच पर विश्वास नहीं किया। यहां तक कि विट्ठल पंड्या ने भी नहीं।
प्रश्न) सीबीआई ने इसे क्यों खरीदा?
ए) सीबीआई ने इस मामले में मोदी को बचाया।
जैसा कि हम कहते हैं, कुछ बयानों को स्पष्टीकरण की आवश्यकता नहीं होती। हरेन पंड्या को कथित तौर पर गोली मारने वाला असगर अली हैदराबाद की जेल में है। गिरफ्तार किए गए अन्य लड़के आंध्र प्रदेश के थे और तुलसी प्रजापति और सोहराबुद्दीन हत्याकांड में शामिल लोगों से भी उनके संबंध थे। तो आखिर हरेन पंड्या को किसने मारा? क्या शेख सुनी-सुनाई बातों पर भरोसा कर रहा था? सवाल यह है कि वह ऐसा क्यों करेगा? वह जांच अधिकारी था जिसने संबंधित

कागजातों पर हस्ताक्षर किए थे। उसने ही प्रारंभिक जांच की थी, जिसके बाद अभय चुडासमा ने जांच की, जिसे बाद में सीबीआई ने गिरफ्तार किया था।

सोहराबुद्दीन और प्रजापति की हत्या क्यों की गई? आज तक इसका मकसद स्पष्ट नहीं हो पाया है। सीबीआई की चार्जशीट के अनुसार, हरेन पांड्या हत्याकांड का मास्टरमाइंड मुफ्ती सूफियान इतनी आसानी से राज्य से भागकर पड़ोसी देश क्यों चला गया? सूफियान का परिवार अभय चुडासमा का इतना आभारी क्यों था, जिस पर निर्दोष लोगों को फर्जी मामलों में फंसाने का आरोप है?

गुजरात के सबसे लोकप्रिय गृह मंत्रियों में से एक हरेन पंड्या ने कथित तौर पर गुजरात दंगों के मामले में नागरिक न्यायाधिकरण के समक्ष पेश होने की इच्छा व्यक्त की थी। क्या इस प्रस्ताव में कहीं कोई सच्चाई छिपी है? अब समय आ गया है कि हम अन्याय और विरोधाभासी सबूतों के इस जाल से पर्दा उठाएं।

खुलासा

जांच पूरी होने के बाद मैं मुंबई वापस आ गया था और तुरंत ही पी.सी. पांडे का फोन आया कि क्या मैंने अपनी फिल्म पर रिसर्च का काम पूरा कर लिया है। उन्होंने मुझे मुख्यमंत्री से मिलने का सुझाव दिया। मैंने तुरंत इस मौके को लपक लिया। मैंने अपने वरिष्ठों को मेल भेजा और शोमा और तरुण ने मुझे तुरंत हरी झंडी दे दी। उन्होंने माइक को आखिरी बार मेरी मदद के लिए अहमदाबाद भेजने का भी इंतजाम किया। माइक के माता-पिता उससे मिलने दिल्ली आए हुए थे, लेकिन उसने किसी तरह एक दिन के लिए अहमदाबाद जाने का बहाना बना लिया।

मैंने माइक को समझाया था कि मुख्यमंत्री आवास पर कड़ी तलाशी होगी और हमें वहाँ जाना ही होगा, क्योंकि ऐसा न करने पर पी.सी. पांडे को शक हो सकता था। रिकॉर्ड के लिए बता दूं कि मैंने अपनी घड़ी पहनी हुई थी जिसमें कैमरा लगा हुआ था। उस दिन हमने एक स्थानीय पर्यटक कार ली थी। चूंकि मैं उस समय फाउंडेशन में नहीं रह रहा था, इसलिए मैंने एसजी हाईवे पर स्थित उस सुनसान बंगले की चाबियां एक दिन के लिए फिर से मांगी थीं। माइक और मैं मोदी के गांधीनगर आवास पर एक घंटा पहले पहुँच गए थे। इसलिए हमने अपने ड्राइवर से कहा कि जब तक समय न बीत जाए, तब तक हमारी कार पास में ही खड़ी कर दे। मैं घबराया हुआ था जबकि माइक मुस्कुराता रहा। मुझे डर था कि अगर मेरी घड़ी में लगे कैमरे की नजर सुरक्षा जांच और धातु की बैरिकेड्स पर पड़ गई, तो हम फंस जाएंगे। आधे घंटे बाद जब हम मुख्यमंत्री आवास में दाखिल हुए, तो सुरक्षा जांच से बिना पकड़े गए निकल जाने पर मैंने राहत की सांस ली।

मोदी के ओएसडी संजय भावसार ने हमसे मुलाकात की। आखिरकार हमें मुख्यमंत्री के कमरे में ले जाया गया। वे हमारा अभिवादन करने के लिए खड़े हो गए। माइक ने कहा कि उसने अहमदाबाद में ऑटो में उनके पोस्टर देखे थे और उनकी लोकप्रियता से बहुत प्रभावित हुआ था। मेज पर बराक ओबामा पर दो किताबें रखी थीं। मैंने तुरंत पूछा, 'तो क्या आप अगले प्रधानमंत्री बनेंगे महोदय?' वे शरमा गए और बराक ओबामा के बारे में बोलने लगे, जो उनके प्रेरणास्रोत थे, और स्वामी विवेकानंद के गुणों के बारे में भी। 30 मिनट की बातचीत के बाद, मुख्यमंत्री ने भावसार को अपने कमरे में बुलाया और उनसे अपने बारे में लिखी गई सामग्री दिखाने को कहा। भावसार हमें अपने केबिन में ले गए। उनकी मेज पर मुख्यमंत्री पर तेहलका और द हिंदू में प्रकाशित खबरों के प्रिंटआउट रखे थे। मैंने उनके बारे में पूछा, जिस पर भावसार ने जवाब दिया कि मुख्यमंत्री के बहुत सारे दुश्मन हैं। मुझे लगता है कि माइक लगभग हंस पड़ा। बाद में हमें मुख्यमंत्री द्वारा लिखी गई विभिन्न पुस्तकें दिखाई गईं और भारत और दुनिया भर में दिए गए उनके भाषणों की रिकॉर्डिंग सुनाई गईं।

भावसार ने मुझसे उन सभी की एक प्रति लाने को कहा, क्योंकि इससे मुझे फिल्म बनाने में मदद मिलेगी। मैंने कहा कि मैं अगली बार आने पर ऐसा करूँगा। हम घर वापस आ गए और माइक ने अपना सामान पैक किया, उसे दिल्ली के लिए फ्लाइट पकड़नी थी। मैंने उसे गले लगाया और उसके लिए एयरपोर्ट तक टैक्सी बुलाई। कुछ मिनट बाद माइक ने मुझे फोन करके बताया कि एयरपोर्ट पहुँचने पर उसकी जेब में एक भी रुपया नहीं था और टैक्सी ड्राइवर ने न सिर्फ किराया

माफ किया बल्कि उसे यात्रा के लिए 200 रुपये भी दिए। माइक ने कहा कि वह गुजरात से यही लेकर जाना चाहता था। मैं पूरी तरह सहमत था। वह आखिरी बार था जब मैंने माइक को देखा था और मुझे यकीन है कि वह जहाँ भी है, उसे अपनी बड़ी बहन और साथी मैथिली की याद जरूर होगी।

मैंने शोमा को फोन किया और तुरंत उसे सारी जानकारी दे दी। उसने मुझसे पूछा कि क्या मैंने मुख्यमंत्री से दंगों के बारे में सवाल किया था। 'अरे शोमा, मैं अपनी पहली यात्रा पर ऐसा बिल्कुल नहीं करूंगा,' मैंने जवाब दिया।

बाद में शाम को मुझे शोमा का फोन आया और उसने कहा, 'राणा, दिल्ली वापस आ जाओ।' मैंने अभी विरोध करना ही शुरू किया था कि उसने कहा कि मेरे वापस आने पर वह सब कुछ समझा देगी।

अगली सुबह मैं दिल्ली पहुंचा और सीधे तहलका कार्यालय चला गया। मैंने मोदी की रिकॉर्डिंग की फुटेज अपने लैपटॉप में ट्रांसफर कर ली थी। तरुण अपने केबिन में था। शोमा भी उसके पास आ गई। मैंने उन्हें फुटेज दिखाई और ओबामा की किताबें देखकर वे हंसने लगे।

'तो मुझे वापस क्यों बुलाया गया?' मैंने पूछा। 'उनका कार्यालय मुझे कुछ दिनों में फोन करेगा और मुझे उनसे दोबारा मिलना है।'

तरुण ने कहा, 'देखो राणा, बंगारू लक्ष्मण पर हुए तहलका कांड के बाद उन्होंने हमारा दफ्तर बंद कर दिया। मोदी सबसे ताकतवर आदमी, प्रधानमंत्री बनने के लिए पूरी तरह तैयार हैं। अगर हमने उन्हें छुआ तो हमारा काम तमाम हो जाएगा।'

मुझे यकीन नहीं हुआ। क्या पूरा स्टिंग ऑपरेशन अपने आप में एक बड़ा जोखिम नहीं था? लेकिन मेरे हर तर्क का सीधा जवाब 'नहीं' में दिया गया।

उसी शाम संजय भावसार ने मुझे फोन किया। मैंने फोन बजने दिया। उन्होंने तीन बार फोन किया और फिर एक संदेश छोड़ा कि मुख्यमंत्री अगले रविवार को मुझसे मिलना चाहेंगे। मैं पास के एक पुलिस स्टेशन गया और भावसार को फोन करके बताया कि मैं दिल्ली में हूँ और मेरे एक रिश्तेदार का निधन हो गया है, इसलिए मुझे शहर में आने की ज़रूरत है। मैंने उन्हें आश्वासन दिया कि मैं एक हफ्ते में उनसे दोबारा संपर्क करूँगा। दो दिन बाद मैंने अपने फोन से यूनिनॉर सिम कार्ड निकाला, उसे मसलकर कूड़ेदान में फेंक दिया। मैंने फोन के साथ भी ऐसा ही किया। उस दिन मैथिली हमेशा के लिए गायब हो गई। संपादकों ने फैसला किया कि जांच रिपोर्ट प्रकाशित नहीं की जाएगी।

तब से मैं चुप रहा हूँ।

अभी तक।

19 वर्षीय इशरत जहां को 15 जून 2004 को गुजरात के अहमदाबाद शहर के पास पुलिसकर्मियों के एक समूह ने उनके साथ मौजूद तीन अन्य पुरुषों के साथ गोली मार दी थी। उस समय अहमदाबाद की स्थानीय पुलिस ने आरोप लगाया था कि ये तीनों पुरुष पाकिस्तान स्थित प्रतिबंधित आतंकवादी संगठन लश्कर-ए-तैबा से जुड़े थे और गुजरात के मुख्यमंत्री नरेंद्र मोदी की हत्या की साजिश में शामिल थे। मारे गए अन्य पुरुषों की पहचान जीशान जौहर, अमजद अली और जावेद शेख के रूप में हुई थी।

2 http://www.tehelka.com/2011/12/dead-man-talking/

3 http://www.tehelka.com/2010/07/breakthrough-expose-so-why-isnarendra-modi-protecting-amit-shah/

4 http://www.tehelka.com/2013/07/tehelka-expose-validated-cbi-saysishrat-jahan-encounter-fake/

5 http://www.outlookindia.com/newswire/story/ishrat-jahanencounter-fake-cbi-chargesheet/802685

6 http://timesofindia.indiatimes.com/india/DG-Vanzaras-letter-tochief-secretary-Gujrat-government/articleshow/47201125.cms

7 http://cbi.nic.in/newsarticles/pressclips/aug_2013/pc_20130802_4.pdf

जब यह कहानी सार्वजनिक हुई तो मानसी सोनी को जिस अपमान का सामना करना पड़ा और उनके परिवार द्वारा उन पर अमेरिका में बसने का जो दबाव डाला गया, उसे देखते हुए मेरी आशंकाएं निराधार नहीं थीं। अंततः मैंने इस मामले से संबंधित अपना फुटेज प्रकाशित न करने का निर्णय लिया।

9 http://www.tehelka.com/2011/04/gujarat-ex-intelligence-chiefblames-modi-for-gujarat-riots/

10 http://timesofindia.indiatimes.com/defaultinterstitial_as.cms

11 http://blogs.timesofindia.indiatimes.com/masala-noodles/is-parveentogadia-getting-back-at-narendra-modi-through-hardik-patel/

12 https://www.youtube.com/watch?v=f0HfmQY8aOw

13 http://indianexpress.com/article/india/india-others/gujarat-ipsofficer-rahul-sharma-who-took-on-govt-to-retire/

वही।

15 http://www.tehelka.com/2011/02/senior-ips-officer-sanjeev-bhattarrested-in-ahmedabad/?singlepage=1

16 http://epaper.timesofindia.com/Default/Layout/Includes/MIRRORNEW/ArtWin.asp?

From = Archive&Source = Page&Skin = MIRRORNEW&BaseHref = PMIR
%2F2010%2F07%2F27&ViewMode = HTML&PageLabel = 9&EntityId = Ar00
17 http://timesofindia.indiatimes.com/city/ahmedabad/Gujarat-DGPfires-a-salvo-at-govt-over-police-transfers/articleshow/4994912.cms

यह स्वीकारोक्ति महत्वपूर्ण थी क्योंकि चक्रवर्ती ने नानावती आयोग में राज्य की भूमिका के बारे में विस्मृति का बहाना बनाया था और विभिन्न अवसरों पर अस्पष्ट बयान दिए थे।

जब चक्रवर्ती कहते हैं कि नानावती आयोग सरकार के लिए अधिक प्रभावी था, तो उनका तात्पर्य यह है कि न्यायमूर्ति नानावती के नेतृत्व में गठित आयोग मोदी सरकार के प्रति अनुकूल था।

चक्रवर्ती यहां यह सुझाव देते हैं कि उन्होंने इस डर से इस्तीफा नहीं दिया कि कोई अन्य अधिकारी महानिदेशक के रूप में कार्यभार संभाल लेगा जो दंगों के दौरान मुस्लिम समुदाय को व्यवस्थित रूप से निशाना बनाने में सरकार के साथ और अधिक मिलीभगत करेगा।

यहां संदर्भ 27 फरवरी को हुई उस बैठक से है जिसमें मोदी ने कथित तौर पर अपने अधिकारियों को मुसलमानों को मारने का आदेश दिया था। स्टिंग ऑपरेशन के दौरान मुझे जो विभिन्न विवरण मिले, उनसे यह संकेत नहीं मिलता कि मोदी ने इस तरह का कोई आदेश दिया था। हालांकि, चक्रवर्ती और अशोक नारायण दोनों ने कहा कि आदेश अलग-अलग राज्य अधिकारियों को दिए गए थे। पी.सी. पांडे लगभग इसकी पुष्टि करते हैं जब वे यह निष्कर्ष निकालते हैं कि एक मुख्यमंत्री इतना भोला नहीं हो सकता कि इतनी संवेदनशील स्थिति में और देश के इतिहास में पहली बार हो रहे दंगों के दौरान, जिनका मुख्यधारा मीडिया द्वारा सीधा प्रसारण किया जा रहा था, ऐसा जोखिम उठाए।

चक्रवर्ती कुलदीप शर्मा की बात कर रहे हैं, जो गुजरात के महानिदेशक बनने की कतार में थे, लेकिन गुजरात सरकार ने उनके खिलाफ भुज में हुए 20 साल पुराने मुठभेड़ मामले को फिर से खोल दिया। आरोप है कि शर्मा ने सहकारी घोटाले के एक मामले में गुजरात के गृह मंत्री अमित शाह को चुनौती दी थी। शाह कुलदीप और प्रदीप शर्मा दोनों से इसलिए भी नाराज थे क्योंकि कथित तौर पर वे स्नूपगेट घोटाले में मुखबिर थे, जिसमें अमित शाह को जी.एल. सिंघल को एक महिला की जासूसी करने का निर्देश देते हुए रिकॉर्ड किया गया था। उन्हें यह कहते हुए भी रिकॉर्ड किया गया है कि यह 'साहब' के निर्देश पर किया जाना था, जिसका संदर्भ संभवतः नरेंद्र मोदी से है।

23 http://www.tehelka.com/2010/09/geeta-johri-was-known-to-be-afearless-officer-so-what-accounts-for-her-flip-flops/?singlepage = 1

24 http://www.dnaindia.com/india/report-arun-jaitley-writes-to-pm-oncongress-dirty-war-against-narendra-modi-1896969

25 http://www.ndtv.com/cheat-sheet/jailed-cop-dg-vanzara-attacksamit-shah-gujarat-government-over-fake-encounters-533486

26 http://indiatoday.intoday.in/story/jagruti-haren-pandyas-wifeto-

contest-gujarat-polls-keshubhai-patel-gujarat-parivartanparty/1/235242.html

मुफ्ती सूफियान इस हत्या का मुख्य साजिशकर्ता था और एक स्थानीय पुजारी था जो पांड्या की हत्या के बाद आसानी से गुजरात से भाग निकला था। यह दिलचस्प बात थी कि अहमदाबाद में पुलिस मुख्यालय के ठीक बगल में रहने के बावजूद, पांड्या की मौत के एक सप्ताह के भीतर ही वह आसानी से भाग निकला था।

पहली बार 2016 में प्रकाशित: राणा अय्यूब द्वारा rana.ayyub@gmail.com कॉपीराइट © राणा अय्यूब 2016 राणा अय्यूब इस कृति की लेखिका के रूप में पहचाने जाने के नैतिक अधिकार का दावा करती हैं। सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन का कोई भी भाग, कॉपीराइट धारक की पूर्व लिखित अनुमति के बिना, किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम से पुनरुत्पादित, संग्रहीत या प्रसारित नहीं किया जा सकता है। उपरोक्त के दायरे से बाहर पुनरुत्पादन से संबंधित पूछताछ कॉपीराइट धारक को भेजी जानी चाहिए।

***** *****